यूनियन
वर्ष -7, अंक -2, अप्रैल-जून, 2022 मुंबई
सृजन
हरियाणा
विशेषांक
यूनियन बैंक
ऑफ इंडिया
Union Bank
of India
भारत सरकार का उपक्रम
A Government of India Undertaking
आन्ध्रा
Andhra
कार्पोरेशन
Corporation
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि : 13.08.2022

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी पत्रिका

वर्ष - 7 अंक - 2 अप्रैल-जून, 2022

संरक्षक

ए. मणिमेखलै
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

लाल सिंह
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

संपादक

डॉ. सुलभा कोरे
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

अशोक चंद्र
मुख्य महाप्रबंधक

अरूण कुमार
महाप्रबंधक

अम्बरीष कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल: sulabhakore@unionbankofindia.bank
union.srijan@unionbankofindia.bank
9820468919, 022-22896517

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

Editor : Dr. Sulabha Shrikant Kore

इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India
भारत सरकार का उपक्रम A Government of India Undertaking
आन्ध्रा Andhra कार्पोरेशन Corporation

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 3
- क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़ का संदेश 4
- संपादकीय 5
- हरियाणा राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 6-7
- हरियाणा का राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आधार 8
- हरियाणा की संस्कृति और कला 9
- साहित्य सृजन : पंडित लखमी चंद 10-11
- काव्य सृजन 12-13
- हरियाणा की क्षेत्रीय विशेषताएँ 14-15
- हरियाणा की भाषाई यात्रा 16
- पानीपत के ऐतिहासिक युद्ध 17-18
- हरियाणा का खान-पान एवं पहनावा 19-20
- हरियाणा के त्योहार 21-22
- हरियाणा का संगीत 23
- हरियाणा के प्रसिद्ध लोकनृत्य 24
- विश्व आकाश में हिन्दी की उड़ान 25-26
- हरियाणा के दर्शनीय स्थल 27
- भारत का ओलंपियन राज्य हरियाणा 28
- विशेष साक्षात्कार - डॉ. ज्ञानी देवी 29-31
- सेंटर स्प्रेड : सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला 32-33
- हरियाणा में यूनियन बैंक की वित्त पोषित योजनाएं 34
- कृषि अग्रणी राज्य हरियाणा 35-36
- राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल 36-37
- 'धर्मक्षेत्र' कुरुक्षेत्र 38-39
- गुरुग्राम 40-41
- हरियाणा की ऐतिहासिक / महत्वपूर्ण हस्तियाँ 42-43
- करनाल की बेटी कल्पना चावला 44
- खेतों में पराली जलाने के दुष्प्रभाव एवं जागरूकता 45
- अंबाला एयरबेस 46-47
- कहानी : बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 48
- हरियाणा के महान स्वतंत्रता सेनानी सर छोटू राम चौधरी 49
- विभिन्न क्षेत्रों में हरियाणा की प्रसिद्ध महिलाएं 50-51
- हरियाणा में दो साल 52-53
- हमारे महत्वपूर्ण ग्राहक 54-56
- राजभाषा पुरस्कार 57-58
- राजभाषा समाचार 59-61
- आयुष्यमान भव: 62
- आपकी नज़र में 63
- बैक कवर 64

परिदृश्य

प्रिय साथियो,

एक शताब्दी से अधिक की सम्पन्न विरासत वाली वित्तीय संस्था यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ के रूप में पदभार ग्रहण करने के बाद बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' के माध्यम से पहली बार आपसे रूबरू होते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है. आपके सप्रेम एवं स्नेहपूर्ण स्वागत से मैं अभिभूत हूँ. आप सभी का शुक्रिया.

'विविधता में एकता' का परिचायक हमारा भारत देश स्वतन्त्रता के 75 वर्ष का उत्सव - आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है. यहाँ पग-पग पर राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों की भाषा, संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान व परिधान बदलते रहते हैं और इन संस्कृतियों का समागम ही भारत को एक अनूठी संस्कृति वाला देश बनाता है.

'यूनियन सृजन' का यह अंक ऐसी ही एक अनूठी संस्कृति, ऐतिहासिक धरोहर, कृषि एवं आर्थिक गतिविधियों के साथ-साथ खेल-कूद में अव्वल प्रदेश 'हरियाणा' को समर्पित है. इस राज्य की जीवन-शैली, रीति रिवाज, लोक गीत एवं आध्यात्मिक रंगों से सराबोर इसका इतिहास इसे और भी खास बनाता है. खेल जगत में यह राज्य सम्पूर्ण वैश्विक पटल पर छाया हुआ है.

हरियाणा राज्य हमेशा देश को नयी दिशा देने वाला राज्य रहा है, पौराणिक काल में जहां कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध लड़ा गया, वहीं मध्यकालीन समय में पानीपत की तीन प्रसिद्ध लड़ाइयाँ लड़ी गईं, जिसके परिणाम अगली कई सदियों तक देखने को मिले.

हरियाणा की इसी कुरुक्षेत्र भूमि पर श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेश गीता सार में निहित 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का अनुसरण आज सम्पूर्ण विश्व कर रहा है.

इस अंक में हरियाणा के हर क्षेत्र को कवर करने का प्रयास किया गया है. साथ ही राज्य के हर क्षेत्र की महिलाओं की उपलब्धियों को दर्शाया गया है. अब हरियाणा की महिलाएं भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश का नाम रोशन कर रही हैं.

मुझे आशा है यह अंक आप सभी की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा.

शुभकामनाओं सहित,

आपकी

(ए. मणिमेखलै)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़ का संदेश.....

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि 'यूनियन सृजन' का जून, 2022 तिमाही अंक कृषि प्रधान व देश के एक समृद्ध राज्य हरियाणा पर प्रकाशित हो रहा है. मैं इस अवसर पर क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, चंडीगढ़ की ओर से 'यूनियन सृजन' के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई देता हूँ. मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हरियाणा का यह विशेष अंक आप समस्त पाठकों को बेहद पसंद आएगा. इस अंक में हरियाणा के सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक पहलुओं को विस्तृत रूप से समाहित किया गया है.

हरियाणा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के हरी एवं आयण से हुआ है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है भगवान का निवास स्थान. इसका गठन नवंबर 1966 में पंजाब राज्य से अलग होकर हुआ है. यह देश के धनी राज्यों में से एक राज्य है. वर्तमान में खाद्यान्न और दुग्ध उत्पादन में यह देश का मुख्य राज्य है. यह आर्थिक रूप से दक्षिण एशिया का सबसे विकसित क्षेत्र है और यहाँ कृषि एवं विनिर्माण उद्योग ने 1970 के दशक से निरंतर वृद्धि प्राप्त की है.

भौगोलिक दृष्टि से राज्य की सीमाएं उत्तर में पंजाब और हिमाचल प्रदेश तथा दक्षिण एवं पश्चिम में राजस्थान से जुड़ी हुई है. उत्तर प्रदेश राज्य के साथ इसकी पूर्वी सीमा को यमुना नदी परिभाषित करती है. यहाँ के प्रमुख झीलों में गुरुग्राम की बसई वेटलैंड, फरीदाबाद की बड्खल झील और प्राचीन सूरजकुंड, कुरुक्षेत्र के ब्रह्म सरोवर, हिसार की ब्लू वर्ड झील, सोहना की दमदमा झील, यमुनानगर जिले का हथनी कुंड, करनाल की कर्ण झील और रोहतक की तिल्यार झील इसे एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाता है.

हरियाणा भारत का एक कृषि प्रधान राज्य है जो अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के लिए तथा अपने अलग जीवन शैली, खान- पान, रीति-रिवाजों, लोकगीतों के लिए जाना जाता है. यदि ऐतिहासिक घटनाओं की बात करें तो कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध तथा पानीपत की लड़ाई के लिए भी हरियाणा को एक अलग पहचान मिली है. यहाँ की पारंपरिक पोशाक जीवंत व रंगीन है जो यहाँ की संस्कृति, परंपरा और जीवन शैली को व्यक्त करती है.

यहाँ के औद्योगिक क्षेत्र में काफी तेजी से विकास हुआ है क्योंकि हरियाणा में विशेष रूप से कृषि की जाती है और कृषि के प्रत्येक संसाधनों की पूर्ति के लिए हरियाणा में उद्योग धंधे शुरू किए गए हैं तथा हरियाणा में बहुत सी ऐसी कंपनियाँ खुल चुकी हैं जिनमें ट्रैक्टर हार्वेस्टर, कार इत्यादि से संबन्धित चीज़ें बनाई जाती हैं. हरियाणा में खेल-कूद को भी लेकर बहुत उत्साह है. यहाँ के कई खिलाड़ियों ने विश्व स्तर की प्रतिस्पर्धाओं में राज्य व देश का नाम रोशन किया है. नीरज चोपड़ा इसका जीता जागता उदाहरण है, जिन्होंने पिछले ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतकर राज्य की खेल कूद को नई दिशा प्रदान की है.

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, चंडीगढ़ का अधिकार क्षेत्र चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब व जम्मू कश्मीर राज्य तक फैला हुआ है. इसके अंतर्गत कुल 8 क्षेत्रीय कार्यालय हैं जिसके अंतर्गत कुल 516 शाखाएँ हैं. बैंक का ऊर्जावान कार्यबल अंचल में उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने हेतु प्रतिबद्ध है. क्षे.म.प्र.का.चंडीगढ़ में पदस्थ समस्त स्टाफ सदस्य सदैव बढ़-चढ़ कर बैंक की प्रगति में अपना योगदान देते रहे हैं. 'यूनियन सृजन' के हरियाणा विशेषांक से स्टाफ सदस्यों में उत्साह व गौरव का माहौल सृजित हुआ है जो भविष्य में कारोबारी लक्ष्यों की प्राप्ति में अवश्य सहायक होगा.

आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं.

अरुण कुमार
क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़

संपादकीय

भारत के उत्तरी हिस्से में स्थित तथा तीनों ओर से दिल्ली से घिरा हरियाणा राज्य अपनी अलग सी शान लेकर अपनी हरियाली और खिलाड़ी वृत्ति से चमकता रहता है. पूर्व के पूर्व पंजाब से निकलकर 1 नवंबर 1966 में जन्में इस राज्य में इतनी पौराणिकता और ऐतिहासिकता है कि आप इसे पुराण, महाकाव्यों के साथ इतिहास में भी पाएंगे. भारतीयता में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाली तथा श्रीकृष्ण द्वारा बतायी गयी श्रीमद्भागवतगीता का यह जन्मस्थान है. इस भूमि की मिट्टी में वीरता और आध्यात्म भी है. यहाँ कुरुक्षेत्र का युद्ध जिस तरह से लड़ा गया है, उसी तरह भगवद्गीता भी शिद्दत से बतायी गयी है. इतिहास की पानीपत की महत्वपूर्ण लड़ाई, जिसने पीढ़ियों को खत्म किया, इसी भूमि पर लड़ी गयी थी. भारतीय इतिहास की अन्य दो महत्वपूर्ण लड़ाइयां भी यहाँ लड़ी गयी है. इस धरती की मिट्टी शायद इन्हीं लड़ाइयों से रिसे खून से सनकर काली हो गयी है और बहुत उपजाऊ भी है. इस भूमि पर कदम रखते हुए इसी एहसास से डर लगता है कि कहीं हम किसी योद्धा की खून सनी मिट्टी पर तो कदम नहीं रख रहे हैं.

यह भूमि वीरों, हीरों, खिलाड़ियों, किसानों, जीवट स्त्रीशक्ति तथा परिश्रम कर्मियों की है और इसी परिश्रम का परिणाम ही है कि खेती में यह भूमि अव्वल है, खेलों में यह एक से बढ़कर एक है और अपनी खेती के हरे रंग को लेकर भारत के लिए पन्ने की तरह चमकती रहती है.

यहां का किसान खेती के लिए जाना जाता है और यहां का जवान अपनी वीरता और जीवटता को लेकर जाना जाता है. धर्म, आस्था, परिश्रम, वीरता..... और क्या क्या विशेषण दिये जा सकते है, इस राज्य के लिए, मैं बयां नहीं कर सकती. इस राज्य के हर एक पहलू को हमने समेटने की कोशिश की है. हमारी 'यूनियन सृजन' टीम के साथी, सर्वश्री पवन झा, संजीव शास्त्री और प्रदीप कुमार द्वारा दिये गये योगदान तथा क्षे.का.करनाल, क्षे.का.हिसार के साथ ही क्षे.म.प्र.का.चंडीगढ़ द्वारा दिये गये समर्थन ने इस अंक को बेहतर स्वरूप में आपके सामने प्रस्तुत करने में हमारी सहायता की है. इस पूरी टीम को साधुवाद.

यह अंक आपको कैसा लगा, हम जानना चाहेंगे. आपकी प्रतिक्रियाओं का हमें इंतजार रहेगा.

शुभकामनाओं के साथ,

आपकी,

(डॉ. सुलभा कोरे)
संपादक

हरियाणा राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अतीत से अब तक की यात्रा

हरियाणा उत्तर भारत का एक राज्य है जिसकी राजधानी चंडीगढ़ है. इसकी सीमायें उत्तर में पंजाब और हिमाचल प्रदेश, दक्षिण एवं पश्चिम में राजस्थान से जुड़ी हुई हैं. यमुना नदी इसके उत्तर प्रदेश राज्य के साथ पूर्वी सीमा को परिभाषित करती है. राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली, हरियाणा से तीन ओर से घिरी हुई है. इसीलिए हरियाणा का दक्षिणी क्षेत्र, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में शामिल है. क्षेत्रफल के आधार पर यह भारत का बीसवाँ सबसे बड़ा राज्य है.

यह राज्य वैदिक सभ्यता और सिंधु घाटी सभ्यता का मुख्य निवास स्थान रहा है. इस क्षेत्र में विभिन्न निर्णायक लड़ाइयाँ भी हुई हैं जिसमें भारत का अधिकतर इतिहास समाहित है. इसमें महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध भी शामिल है. हिन्दू मतों के अनुसार महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में हुआ था. इसमें भगवान श्रीकृष्ण ने भगवद् गीता का उपदेश दिया था. इसके अलावा यहाँ पानीपत की तीन लड़ाइयाँ हुईं. भारत में अंग्रेजों के समय हरियाणा पंजाब राज्य का एक अंग था जिसे 1966 में भारत के 17वें राज्य के रूप में पहचान मिली. वर्तमान में खाद्यान्न और दुग्ध उत्पादन में हरियाणा, देश का प्रमुख राज्य है. इस राज्य के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है. 1960 के दशक की हरित क्रान्ति में हरियाणा का बड़ा योगदान रहा जिससे देश खाद्यान्न सम्पन्न हुआ.

हरियाणा, भारत के अमीर राज्यों में से एक है और प्रति व्यक्ति आय के आधार पर यह देश का दूसरा सबसे धनी राज्य है. इसके अतिरिक्त भारत में सबसे अधिक ग्रामीण करोड़पति भी इसी राज्य में हैं. हरियाणा आर्थिक रूप से दक्षिण एशिया का सबसे विकसित क्षेत्र है. भारत में हरियाणा, यात्री कारों, द्विचक्र वाहनों और ट्रैक्टरों के निर्माण में सर्वोपरी राज्य है.

हरियाणा का प्राचीन इतिहास : हरियाणा में सरस्वती नदी के किनारे सिंधु घाटी जितनी पुरानी कई सभ्यताओं के अवशेष पाए गए हैं. जिनमें नौरंगाबाद और मिताथल भिवानी में, कुणाल फतेहाबाद में, अग्रोहा और राखीगढ़ी हिसार में, रूखी रोहतक में और बनवाली फतेहाबाद जिले में प्रमुख हैं. प्राचीन वैदिक सभ्यता भी सरस्वती नदी के तट के आस पास फली-फूली. ऋग्वेद के मंत्रों की रचना भी यहीं हुई है. एक विशिष्ट ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक इकाई के रूप में हरियाणा को प्राचीनकाल से ही मान्यता प्राप्त है. मनु के अनुसार इस प्रदेश का अस्तित्व देवताओं द्वारा हुआ था इसलिए इसे 'ब्रह्मावर्त' का नाम दिया गया था. इस राज्य को आदि सृष्टि का जन्मस्थान भी माना जाता है. पुरातत्वविदों के अनुसार आद्यैतिहासिक कालीन हड़प्पा, परवर्ती हड़प्पा आदि अनेक संस्कृतियों के प्रमाण हरियाणा के बनवाली, सीसवाल, मिर्ज़ापुर, दौलतपुर, भगवानपुरा आदि स्थानों के उत्खननों से प्राप्त हुए हैं.

कुछ प्राचीन हिंदू ग्रंथों के अनुसार, कुरुक्षेत्र की सीमा मोटे तौर पर हरियाणा राज्य की सीमाएं हैं. महाकाव्य महाभारत में हरियाणा का उल्लेख बहुधान्यक और बहुधन के रूप में किया गया है. महाभारत में वर्णित हरियाणा के कुछ स्थान आज के आधुनिक शहरों जैसे प्रिथुदक (पेहोवा), तिलप्रस्थ (तिल्पुट), पानप्रस्थ (पानीपत) और सोनप्रस्थ (सोनीपत) में विकसित हो गये हैं. गुड़गाँव का अर्थ गुरु के ग्राम यानि गुरु द्रोणाचार्य के गाँव से है. कौरवों और पांडवों के बीच हुआ महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध कुरुक्षेत्र नगर के निकट हुआ था. कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश यहीं पर दिया था. इसके बाद अठारह दिन तक हस्तिनापुर के सिंहासन का अधिकारी तय करने के लिये कुरुक्षेत्र के मैदानी इलाकों में पूरे भारत से आयी सेनाओं के मध्य भीषण संघर्ष हुआ. पेहोवा, कुरुक्षेत्र, तिलपाल, पानीपत में साइटों पर कविता, मूर्तियां, आभूषण की खोज महाभारत युद्ध के ऐतिहासिक प्रमाण हैं. वर्धन वंश के सबसे प्रतापी शासक हर्षवर्धन ने हरियाणा के स्थाणेश्वर (अभी थानेश्वर) में एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की. यह हरियाणा प्रदेश का एक गौरवमयी युग था. चीनी भिक्षु ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन के स्थाणेश्वर के वैभव और समृद्धि का सुन्दर चित्रण किया है.

जनश्रुति के अनुसार महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा जो आज हिसार के निकट स्थित है, में व्यापारियों की एक समृद्ध नगरी की स्थापना की थी. मान्यता है कि जो भी व्यक्ति यहाँ बसना चाहता था उसे शहर के सभी एक लाख नागरिकों द्वारा एक ईंट और रुपया दिया जाता था, इससे उस व्यक्ति के पास घर बनाने के लिये पर्याप्त ईंटें और व्यापार शुरू करने के लिए पर्याप्त धन हो जाता था.

मध्यकालीन इतिहास : हूण के शासन के पश्चात् हर्षवर्धन द्वारा 7वीं शताब्दी में स्थापित राज्य की राजधानी कुरुक्षेत्र के पास थानेसर में बसायी गई. उसकी मौत के बाद गुर्जर प्रतिहार ने वहां शासन करना आरंभ कर दिया और अपनी राजधानी कन्नौज बना ली. यह स्थान दिल्ली के शासक के लिये महत्वपूर्ण था. पृथ्वीराज चौहान ने 12वीं शताब्दी में अपना किला हाँसी और तरावड़ी (पुराना नाम तराईन) में स्थापित कर लिया. मुहम्मद गौरी ने दूसरे तराईन युद्ध में इस पर कब्जा कर लिया. उसके पश्चात दिल्ली सल्तनत ने लंबे समय तक यहाँ शासन किया.

विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा दिल्ली पर अधिकार के लिए अधिकतर युद्ध हरियाणा की धरती पर ही लड़े गए. तरावड़ी के युद्ध के अतिरिक्त पानीपत के मैदान में भी तीन युद्ध ऐसे लड़े गए जिन्होंने भारत के इतिहास की दिशा ही बदल दी. पानीपत का पहला युद्ध 1526 में बाबर और इब्राहिम लोदी के मध्य लड़ा गया था जिसमें लोदी की पराजय हुई थी. पानीपत का दूसरा युद्ध 1556 में अकबर और हेमू (अंतिम हिन्दू शासक जिसने दिल्ली के तख्त पर शासन किया) के मध्य हुआ जिसमें

हेमू की पराजय हुई तथा हेमू को बैरम खां द्वारा मौत के घाट उतार दिया गया. पानीपत का तीसरा युद्ध 1761 में अहमद शाह अब्दाली तथा मराठों के बीच हुआ, जिसमें मराठों की पराजय हुई.

अंग्रेजों का हरियाणा में आगमन : सन् 1798 में लॉर्ड वेलेज़ली ईस्ट इंडिया कम्पनी का गवर्नर जनरल बनकर भारत आया और उसने आते ही अपनी विस्तारवादी योजना बनाई. 30 सितंबर, 1803 को एक सन्धि के अनुसार हरियाणा को भी अंग्रेजों के अधीन कर दिया गया. हरियाणा में गुड़गांव के मेव, अहीर और गुज्जरों, रोहतक के जाटों और रांघड़ों, हिसार के बिश्नोई और जाटों, करनाल व कुरुक्षेत्र के राजपूत, रोड़, सैनी और सिखों ने अंग्रेजों तथा उनके द्वारा नियुक्त किए गए स्थानीय सरदारों का लम्बे समय तक कड़ा विरोध किया. किन्तु अंत मे 1809-10 में समस्त हरियाणा पर अंग्रेजों का अधिकार स्थापित हो गया.

ब्रिटिश राज से मुक्ति पाने के आन्दोलनों में हरियाणा वासियों ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया. 1857 के सिपाही विद्रोह में हरियाणा के शूरवीरों का महत्वपूर्ण योगदान था. रेवाड़ी के राजा राव तुला राम ने 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में अपना योगदान दिया. किन्तु अंग्रेजों ने इस क्रांति को बड़ी बर्बरतापूर्वक दबा दिया और झज्जर व बहादुरगढ़ के नवाबों, बल्लभगढ़ व रेवाड़ी के राजा राव तुलाराम के राज्य छीन लिए गए. फिर ये राज्य या तो ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिए गए या नाभा, जींद व पटियाला के शासकों को सौंप दिए गए. इसके बाद हरियाणा को पंजाब राज्य का एक प्रान्त बना दिया गया.

1885 में अखिल भारतीय स्तर पर कांग्रेस की स्थापना होने के बाद 1886 में 'राय बहादुर मुरलीधर' के प्रयासों से अम्बाला में कांग्रेस की एक शाखा बनी. लाला लाजपतराय जी वर्ष 1884 में अपने पिता के साथ रोहतक आये. उनके पिता एक शिक्षक थे. उन्होंने 1887 में हिसार व रोहतक में कांग्रेस का कार्य शुरू कराया. 1888 में इलाहाबाद में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में हिसार कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में लालाजी ने पहली बार भाग लिया. बाद में पंजाब के लाहौर में साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लगी लाठियों की चोट से इनकी मृत्यु हो गयी. हरियाणा के पंडित 'नेकीराम शर्मा' ने प्रथम विश्वयुद्ध के समय भारत में अंग्रेजों द्वारा सैन्य भर्ती अभियान का विरोध किया. इनके अलावा बल्लभगढ़ रियासत के राजा नाहरसिंह, झज्जर के नवाब अब्दुर्रहमान खाँ, रोहतक के सर छोटूराम, फर्रुखनगर के नवाब अहमद अली गुलाम ख़ाँ, रानिया (सिरसा) के नवाब नूर समन्द खाँ, चौधरी देवीलाल जी, हांसी के लाला हुकमचंद जैन व मिर्जा मुनीर बेग जी ये सब हरियाणा की ऐसी शख्सियत थीं जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व योगदान दिया. हरियाणा में क्रांतिकारी गतिविधियों का मुख्य केंद्र अम्बाला रहा था जहाँ दिसम्बर 1909 में वहाँ के उपायुक्त के बंगले पर बम फेंका गया. कुल मिलाकर स्वंतत्रता की पहली से लेकर आखिरी लड़ाई तक हरियाणा के वीरों का मुख्य योगदान रहा.

राज्य स्थापना : स्वतन्त्रता के बाद सबसे पहले 1948 में हरियाणा राज्य की आधिकारिक मांग पंजाबी नेता तारा सिंह द्वारा उठाई गई. 1 अक्टूबर, 1949 को सच्चर फ़ार्मूला के अंतर्गत पंजाब को दो क्षेत्रों पंजाबी क्षेत्र और हिंदी क्षेत्र में विभाजित कर दिया गया, परंतु जनता ने इसे अस्वीकार कर दिया. राज्य के रूप में हरियाणा 1 नवंबर, 1966 को पंजाब पुनर्गठन अधिनियम के माध्यम से अस्तित्व में आया. भारत सरकार ने 23 अप्रैल, 1966 को हरियाणा के नए राज्य की सीमा निर्धारित करने के लिए न्यायमूर्ति जेसी शाह की अध्यक्षता में शाह आयोग की स्थापना की. आयोग ने 31 मई, 1966 को अपनी रिपोर्ट दे दी, जिससे हिसार, महेंद्रगढ़, गुड़गांव, रोहतक, अंबाला, जींद और करनाल जैसे 7 तत्कालीन जिले हरियाणा के नए राज्य का हिस्सा बन गए. आयोग ने यह भी सिफारिश की थी कि खारद तहसील जिसमें पंजाब की राजधानी चंडीगढ़ शामिल थी, उसे हरियाणा का हिस्सा होना चाहिए. हालांकि, हरियाणा को खारद का केवल एक छोटा सा हिस्सा दिया गया था. चंडीगढ़ शहर को केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया, जो कालांतर में पंजाब और हरियाणा दोनों की राजधानी बनी. उसके बाद 22 दिसम्बर, 1972 को भिवानी और सोनीपत दो जिले बने. 1973, 1975 और 1979 में क्रमश: कुरुक्षेत्र, सिरसा और फरीदाबाद नामक जिले अस्तित्व में आये. इसके बाद 1 नवम्बर 1989 को रेवाड़ी, पानीपत, यमुनानगर और कैथल जिले बने. 15 अगस्त, 1995 को पंचकूला हरियाणा का 17 वां जिला बना. फिर 15 जुलाई 1997 को झज्जर और फतेहाबाद जिले बने. नूहँ जिसको मेवात भी कहते हैं 4 अप्रैल, 2005 को हरियाणा के 20वें जिले के रूप में सामने आया. तत्पश्चात 2008 और 2016 में क्रमश: पलवल और चरखी दादरी जिले बने. इनके बनने के बाद हरियाणा के कुल जिलों की संख्या 22 हो गयी.

हरियाणा में औद्योगिक तरक्की : हरियाणा राज्य धीरे-धीरे प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ. हरियाणा के लगभग 1347 छोटे-बड़े उद्योग तथा 80000 के लगभग लघु इकाईयाँ उत्पादन में कार्यरत हैं.

हरियाणा भौगोलिक दृष्टि से एक छोटा सा राज्य है परंतु आर्थिक वर्ष 2016-17 के अनुसार राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पादन में हरियाणा का 3.6% का योगदान रहा. हरियाणा में विभिन्न प्रकार के उद्योगों का विकास हुआ है जैसे कृषि आधारित उद्योग, वस्त्र, ऑटोमोबाइल, पेट्रोकेमिकल्स, सूचना एवं प्रौद्योगिकी, बायोटेक, रियल एस्टेट एवं निर्माण उद्योग आदि शामिल हैं. हरियाणा में देश के सर्वाधिक ट्रैक्टरों का निर्माण होता है. हरियाणा में ट्रैक्टर का कारखाना फरीदाबाद में है. भारत में मारुति सुज़ुकी की प्रथम उत्पादन इकाई हरियाणा के गुरुग्राम में 1983 में स्थापित हुई. इसी प्रकार कई प्रकार की कपड़ा मिल, उर्वरक कारखाने व तेलशोधक इकाईयां इस राज्य में हैं. कुल मिलाकर अपने अस्तित्व में आने के बाद से लेकर आज तक हरियाणा राज्य ने बहुत तरक्की की है और आधुनिक हरियाणा भविष्य में भी ऐसे ही प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगा.

निशा

उकलाना शाखा, हिसार

हरियाणा का राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आधार और मानसिकता

हरियाणा राज्य का गठन भाषाई आधार पर सर्व प्रथम 18 वें संविधान संशोधन द्वारा 01 नवंबर 1966 को पंजाब से अलग राज्य के रूप में हुआ था. हरियाणा को देश के 17 वें राज्य के रूप में स्थापित किया गया था. लोकसभा में हरियाणा पुनर्गठन विधेयक तत्कालीन लोक सभा अध्यक्ष हुक्म सिंह ने प्रस्तुत किया था. सरदार हुक्म सिंह की अनुसंशा पर ही राज्य का गठन किया गया है. गठन के दौरान राज्य में कुल 54 विधानसभा क्षेत्र थे जिसे मार्च 1967 में बढ़ाकर 81 कर दिया गया एवं वर्ष 1977 में बढ़ाकर 90 कर दिया गया था जो कि अभी तक ज्यों की त्यों बनी हुई हैं. वर्तमान में हरियाणा राज्य में कुल 10 लोकसभा एवं पाँच राज्य सभा सीटें हैं. आरंभ से लेकर वर्तमान तक हरियाणा राजनीतिक रूप से काफी मजबूत राज्य के रूप में उभरा है. हरियाणा की राजनीति मुख्य रूप से चार लालों के क्रमशः बंशी लाल, देवी लाल, भजन लाल एवं वर्तमान में मनोहर लाल के इर्द गिर्द रही है. राज्य में लगातार क्रम में अब तक कुल 21 मुख्यमंत्री बने हैं जबकि व्यक्तिगत रूप से अब तक कुल 10 व्यक्ति मुख्यमंत्री रहे हैं. वर्तमान में राज्य के मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल के नेतृत्व में राज्य चौमुखी उन्नति की ओर अग्रसर है.

वर्तमान में राज्य में 14 वीं विधान सभा का कार्यकाल चल रहा है जिसका चुनाव राज्य में 21 अक्तूबर 2019 में सम्पन्न हुए थे. इस चुनाव में भाजपा को 40 और काँग्रेस पार्टी को 31 तो वहीं जजपा को 10 सीटें प्राप्त हुई थी. 14 वीं विधान सभा में सबसे युवा विधायक श्री दुष्यंत चौटाला (31 वर्ष) एवं सबसे उम्र दराज विधायक श्री रघुबीर सिंह कादयान (75 वर्ष) चुने गए हैं. राज्य में कुल 57 विधायकों के समर्थन से भारतीय जनता पार्टी को चुना गया है जिसके मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी हैं.

नए परिसमन के बाद हरियाणा राज्य में विधान सभा की सीटों को बढ़ाकर 126 कर दिया गया है जो वर्ष 2029 से लागू होना है. इसके अलावा राज्य आयाराम - गयाराम की राजनीति के रूप में प्रसिद्ध रहा है जिसका मुख्य उदाहरण यह है कि राज्य में नवंबर 1989 से 18 जुलाई 1990 (08 महीने) तक कुल पाँच मुख्य मंत्री बने जिन्हें 06 बार शपथ दिलाई गई थी एवं यह बात गिनीज़ बुक ऑफ रिकॉर्ड में भी दर्ज है.

राजनीतिक गतिविधियों के अलावा हरियाणा राज्य सामाजिक, धार्मिक एवं मानसिक आधार पर भी काफी मजबूत एवं सम्पन्न राज्य है. हरियाणा का अपना अनूठा पारंपरिक लोक संगीत, लोक नृत्य, सांग (लोक रंगमंच), सिनेमा और सामाजिक विश्वास प्रणाली जैसे जठेरा (पैतृक पूजा) और फुलकारी एवं शीश कढ़ाई जैसी कलाएं एवं मजबूत सामाजिक ताना- बाना इसकी संस्कृति को मुख्य रूप से समृद्ध बनाता है.

हरियाणवी लोगों में समावशी समाज की अवधारणा है जिसमें '36 जाति' या समुदाय शामिल हैं. इसके अलावा हरियाणवी लोगों के लिए संगीत और नृत्य सामाजिक मतभेदों को दूर करने का सबसे अच्छा उदाहरण है. इसके अलावा हरियाणा के लोग अपने रीति रिवाजों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का सख्ती से पालन करते हैं. योग और वैदिक मंत्रों का जाप यहाँ के लोगों की जीवन शैली का सहज अंग बन गया है. हरियाणा में उम्र का कारक वास्तव में एक प्रमुख विशेषता है क्योंकि सभी बुजुर्ग चाहे वे अमीर हों या गरीब, उनके साथ हमेशा सम्मानीय व्यवहार किया जाता है. इस प्रकार यह एक बहुत ही उच्च समाजवादी प्रवृत्ति को दर्शाता है. हरियाणा में हिन्दू धर्म को मानने वाले लोगों की सर्वाधिक आबादी रहती है जबकि दूसरी बड़ी आबादी मुसलमानों की है. जबकि यहाँ सिक्ख आबादी तीसरे स्थान पर है.

एक विशेष समूह के सामाजिक या सांस्कृतिक विशिष्ट मूल्यों को मानसिकता कहा जाता है. राज्य की मानसिकता में लिंगानुपात एक विशेष समस्या के रूप में उभरा है जो कि 2011 की जनगणना के अनुसार देश में सबसे कम 879/1000 दर्ज किया गया था जो कि राज्य के लिए एक चिंता का विषय था. इस पर चिंता व्यक्त करते हुए राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा मिलकर दिनांक 22 जनवरी 2015 को हुडा मैदान, पानीपत से माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में "बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ" योजना का शुभारंभ किया गया जिसका परिणाम यह है कि वर्ष 2022 में राज्य का लिंगानुपात 900/1000 से अधिक हो गया है. इस प्रकार हरियाणा राज्य लगभग सभी लक्ष्यों में निरंतर प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है.

शिल्पा सेठी
भुना शाखा, हिसार

हरियाणा की संस्कृति और कला

हरियाणा की संस्कृति इसकी लोककथाओं की परिचायक है. वैदिक काल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में डूबा, हरियाणा का रहस्यमय राज्य भीड़ से अलग है. हरियाणा भारत के सबसे धनी राज्यों में से एक है और दक्षिण एशिया में सबसे अधिक आर्थिक रूप से विकसित क्षेत्रों में से एक है. लोकप्रिय रूप से इसे 'देवताओं के घर' के रूप में जाना जाता है, इस जीवंत राज्य में एक समृद्ध संस्कृति, विरासत, त्योहार, लोकगीत और एक जीवंत परिदृश्य है. वैसे तो यह कहा जाता है की हरियाणा की संस्कृति कृषि प्रधान है जिसका प्रमुख कारण यहाँ के लोगों का जमीन से जुड़ाव है. यहाँ का हर एक निवासी अपनी समृद्ध संस्कृति का वाहक है.

हरियाणा समय की तबाही से उभरा है और अभी भी अपनी कई परंपराओं को बनाए रखने में कामयाब रहा है- कुछ अच्छी और कुछ इतनी अच्छी नहीं. हरियाणा के लोग अपने रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक परंपराओं का सख्ती से पालन करते हैं. योग और वैदिक मंत्रों का जाप उनकी जीवन शैली का सहज अंग बन गया है. हरियाणा की बोली हरियाणवी, जिसमें कई उपबोलियाँ हैं, जिन्हे बंगारू, बागरी, अहिरवाली, देशवाली, मेवाती या जाटू इत्यादि कहते हैं; इन सबको थोड़ी खड़ी बोली होने के लिए जाना जाता है, लेकिन यह मिट्टी के हास्य और सीधेपन से भरी है. हरियाणा के अधिकांश लोगों की सामाजिक स्थिति कमोबेश समान है. हरियाणा में उम्र का बहुत महत्व है, क्योंकि सभी बुजुर्गो के साथ, चाहे वह अमीर हों या गरीब, अत्यंत सम्मान के साथ व्यवहार किया जाता है. इस प्रकार, यह एक बहुत ही समाजवादी प्रकृति को प्रदर्शित करता है. राज्य के कुछ हिस्सों में, किसी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति भी उसके पास मवेशियों की संख्या से निर्धारित होती है! यहां के लोग एक ही गोत्र में विवाह की अनुमति नहीं देकर अपनी नस्लीय शुद्धता बनाए रखते हैं.

हरियाणा हस्तशिल्प : मिट्टी के बर्तन, सीमेंट से बनी वस्तुएं और पत्थरों पर उकेरी गई मूर्तियां हरियाणा में बिकने वाले प्रमुख हस्तशिल्प हैं. हरियाणा में हस्तशिल्प निर्माता विभिन्न प्रकार की कला और शिल्प साझा करते हैं, जिसमें मिट्टी के बर्तन बनाना, विशेष फर्नीचर और लकड़ी की नक्काशी, साथ ही साथ हथकरघा आदि शामिल हैं. वहीं, हरियाणा हथकरघा की संस्कृति व्यापक रूप से फैली हुई है और पानीपत का कपड़ा बाजार नर्म कालीनों और अन्य वस्त्रों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है. रोहतक जिले के लोग मिट्टी के अद्भुत घड़े और अन्य मिट्टी के शिल्प बनाते हैं.

समृद्ध और चमकीले रंगों से बनी मिट्टी के बर्तन सबसे लोकप्रिय व्यवसायों में से एक है, जिसका हरियाणा के ग्रामीण इलाकों में बहुत महत्व है. हरियाणा में मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कलाकार कुशल और प्रतिभाशाली हैं. कलाकार के घर की महिला सदस्य, आकर्षक डिजाइनों का उपयोग करके बर्तनों को पेंट करती हैं. इस राज्य के सभी कलाएं और शिल्प अपने शानदार कलात्मक कौशल के कारण पूरे भारत और अन्य देशों में प्रसिद्ध हैं. हरियाणा की कला और शिल्प में गायन, नृत्य, मूर्तिकला, पेंटिंग, मिट्टी के बर्तन, कढ़ाई की बुनाई आदि शामिल हैं. इन सभी कलाओं और शिल्पों में ग्रामीण हस्तशिल्प बहुत लोकप्रिय हैं. हरियाणा कला और शिल्प में केवल चमकीले रंगों का उपयोग होता है जो कला के काम में एक बहुत ही आकर्षक और रचनात्मक भूमिका निभाता है. हरियाणा की कला और शिल्प वहां रहने वाले ग्रामीण लोगों के लिए आय का स्रोत है. जरी की जूती, हड्डी पर नक्काशी, लकड़ी के मनके, क्रॉकेट, पुंजा दरी, साथ ही चमड़े के काम और बहुत कुछ बनाने में कई कलाकार, शिल्पकार अच्छे हैं.

हरियाणा की कढ़ाई और बुनाई : हरियाणा विभिन्न हस्तशिल्प जैसे हथकरघा एवं कढ़ाई और बुनाई के लिए प्रसिद्ध है. सबसे लोकप्रिय बुने हुए हथकरघा शॉल और दरी हैं. हरियाणा शॉल फुलकारी के कारण बहुत प्रसिद्ध है, जिसकी समृद्ध कढ़ाई की पूरी दुनिया में बहुत मांग है.

फुलकारी आर्ट : फुलकारी कला में, कोई भी रूपांकनों (पक्षियों और फूलों के साथ-साथ मानव व्यक्तित्व आदि) को देखा जा सकता है, जो रंगीन कपड़ों पर रफू सुइयों से सिले जाते हैं. फुलकारी कला और डिजाइन कपड़े के पीछे की तरफ (ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज दोनों पैटर्न) किया जाता है. वहीं, अतिरिक्त प्रभाव के लिए साटन और रेशम जैसी अन्य सामग्रियों का भी उपयोग किया जाता है.

बाग : बाग एक अन्य प्रकार का हस्तशिल्प है, जिसमें ज्यामितीय डिजाइन शामिल हैं और इस शिल्प को ज्यादातर मुस्लिमों द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जो रंगीन डिजाइनों को लागू करने में अच्छे हैं. इन डिजाइनों में जानवर, पौधे और प्रकृति शामिल हैं और खादर (रेशम के धागे से बुने हुए सूती कपड़े का प्रकार) पर बने होते हैं.

दरी : दरी वे कालीन हैं जिनमें उत्कृष्ट ज्यामितीय डिजाइन होते हैं, जो सफेद रंग के त्रिकोणी डिजाइनों के साथ नीले रंग के कपड़े पर बने होते हैं. पानीपत को हरियाणा में दरी बनाने का 'हब' कहा जाता है. हरियाणा की संस्कृति वैदिक काल की है और यहाँ के निवासी अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाने जाते हैं. एक पारंपारिक समाज होने के नाते, राज्य की अपनी सामाजिक मान्यताएं और प्रथाएं हैं. मुगलों और फिर अंग्रेजों के प्रभाव के बावजूद, हरियाणा ने अपनी प्राचीन विरासत को बरकरार रखा है.

श्याम सुंदर राजपुरोहित
क्षे. का. हिसार

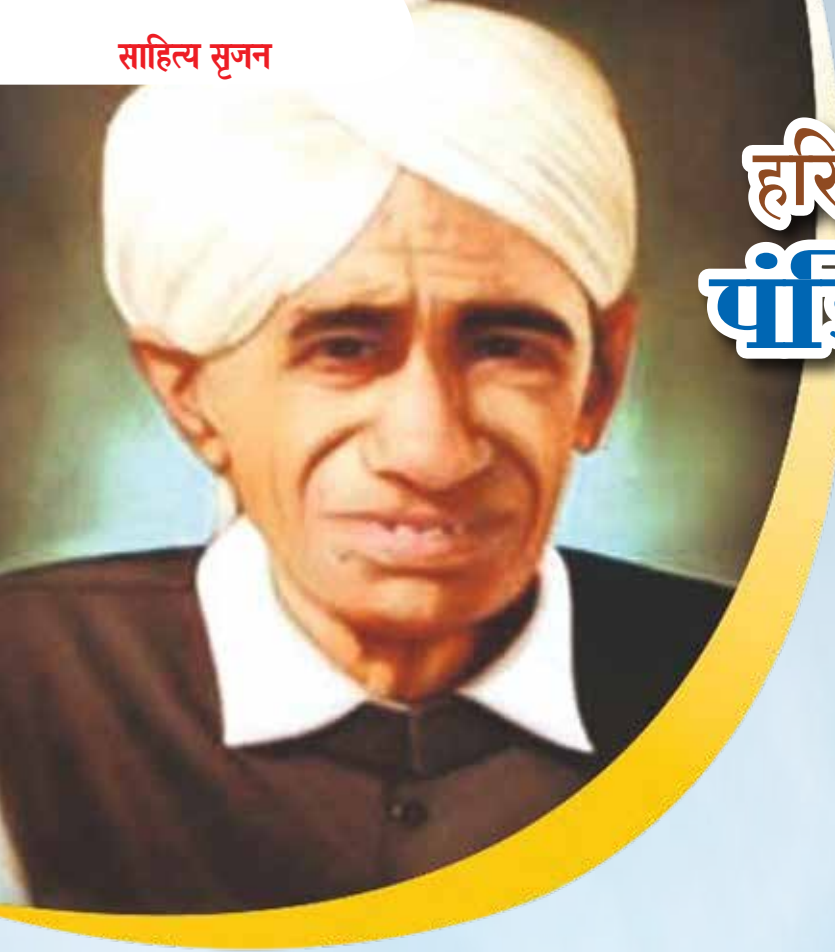

हरियाणा साहित्य का ध्रुव तारा पंडित लखमी चंद

गायक-अभिनेता लखमी चंद ने न सिर्फ नैतिक मूल्यों की सीख देने वाली बहुत सी सांग और रागिनियों की रचनाएँ की बल्कि चारों और घूम-घूमकर गाते-बजाते हुए उनका प्रचार भी किया. हरियाणा की लोक-संस्कृति के वे संदर्भ पुरुष माने गए. हरियाणा के आम जनों में अब भी उनकी गहरी लोकप्रियता है. लेकिन राज्य के सत्ता प्रतिष्ठानों खासकर सांस्कृतिक प्रशासकों की बेरुखी का यह नतीजा निकला कि उनकी प्रतिमा गढ़ने के लिए संदर्भ चित्र तक न मिला.

'लखमी चंद नहीं पढ़ रह्या सै, गुरु की दया तै दिल बढ़ रह्या सै'

भारत की संस्कृति का उद्गम और नव आर्थिक चेतना का प्रतीक हरियाणा अपनी उदारता, वात्सल्यता और निर्मल साहित्य साधना के लिए विख्यात है. राजभाषा हिन्दी के अतिरिक्त इस प्रदेश में प्रचलित अन्य भाषाओं एवं बोलियों तथा साहित्य के विकास और प्रसार का कार्य हरियाणवी लोक नाटकों के माध्यम से हरियाणा के लोक कवियों ने अपनी रचनाओं में किया है. हरियाणा में साहित्य विकास के लिए हरियाणा के उदीयमान साहित्यकारों को प्रोत्साहित करना तो आवश्यक है ही, साथ ही प्रतिष्ठित साहित्यकारों का सम्मान करना एवं उनके कृतित्व को उजागर कर आम लोगों तक पहुंचाना भी आवश्यक है. 'साँग' कला हरियाणा की लोकसंस्कृति का अभिन्न अंग है. इस कला को अनेक महान शख़्सियतों ने अपने ज्ञान कौशल, हुनर और परिश्रम से सींचकर अत्यंत समृद्ध एवं गौरवशाली बनाया.

इन्हीं प्रतिष्ठित साहित्यकारों में हरियाणा के कालीदास और शेक्सपियर कहे जाने वाले सूर्य कवि पंडित लखमी चंद का जन्म 1901 में सोनीपत के जांटी कलान में हुआ था. उनके पिता एक सामान्य किसान थे और उनका परिवार बहुत ही निर्धन था, जिसकी वजह से उनका बचपन बहुत ही कठिनाइयों से गुजरा. बहुत ही कम उम्र में कवि-

बाल्यावस्था में उन्हें पशु चराने के लिए खेतों में भेजा जाने लगा. गाने के शौक के कारण वह हमेशा कुछ न कुछ गुनगुनाने रहते थे. सात-आठ वर्ष की आयु में ही उन्होंने अपनी मधुर व सुरीली आवाज से लोगों का मन मोह लिया. ग्रामीण उनसे नाट्य गीत व भजन सुनाने का अनुरोध करने लगे. ग्रामीणों की अपार प्रशंसा से उत्साहित बालक लखमी चंद ने अनेक गीत व भजन कंठस्थ कर लिए और गायकी के मार्ग पर अपने कदम तेजी से बढ़ा दिए. इसी दौरान उनके जांटिकलां गाँव के विवाह समारोह में बसौड़ी निवासी पंडित मानसिंह भजन-रागिनी का कार्यक्रम करने के लिए पहुंचे. वे अंधे थे. उन्होंने कई दिन तक गाँव में भजन व रागिनियां सुनाई. बालक लखमीचन्द भी उनके भजन सुनने के लिए प्रतिदिन जाते थे. गाने के जुनून के प्रति लखमी चंद के हृदय पटल पर पंडित मान सिंह ने गहरा प्रभाव डाला. गायकी के प्रति उनके अपार लगाव से प्रभावित होकर पंडित मान सिंह ने उनके पिता पंडित उदमी राम से इस बारे में बात की और उनकी सहमति के बाद उन्होंने बालक लखमी चंद को अपना शिष्य बनाना स्वीकार कर लिया. अब तक किसी को तनिक भी यह एहसास नहीं था कि आगे चलकर यही बालक 'सूर्यकवि' और 'गंधर्व कवि' जैसी

विराट पदवियों से नवाजा जाएगा. इसके बाद बालक लखमी चंद अपने गुरु से ज्ञान लेने में व्यस्त हो गए और असीम लगन व कठिन परिश्रम से वे निखरते चले गए. इस संदर्भ में पंडित लखमी चंद ने 'चीरपर्व' में जिक्र करते हुए कहा है:

'गुरु मानसिंग चीज नहीं थे छोटी, लिया लखमी चंद ने ज्ञान समाई करकै.'

कुछ ही समय में लोग उनकी गायन प्रतिभा और सुरीली आवाज के कायल हो गए. अब उनकी रुचि 'साँग' सीखने की हो गई. 'साँग' की कला सीखने के लिए लखमी चंद कुंडल निवासी सोहन लाल के बेड़े में शामिल हो गए. अथक लगन व मेहनत के बल पर पाँच साल में ही उन्होंने 'साँग' की बारीकियाँ सीख ली. उनके अभिनय एवं नाच का जादू लोगों के सिर चढ़कर बोलने लगा. उनके अंगों का मटकना, हाथों की मुद्राएँ, कमर की लचक और गज़ब की फुर्ती हर किसी को मदहोश कर डालती थी. जब वे नारी पात्र अभिनीत करते थे तो देखने वाले बस देखते रह जाते थे. इसी बीच सोहन लाल ने लखमी चंद के गुरु पंडित मानसिंह के बारे में कुछ असभ्य बात कह दी तो लखमी चंद को बेहद बुरा लगा और उन्होंने सोहन लाल का 'दल' छोड़ने का ऐलान कर दिया. ऐसे में कुछ संकीर्ण मानसिकता के लोगों ने धोखे से लखमी चंद के खाने में पारा मिला दिया, जिससे लखमी चंद का स्वास्थ्य खराब हो गया. उनकी आवाज को भी भारी क्षति पहुंची. लेकिन सतत साधना के जरिए लखमी चंद ने कुछ समय बाद पुन: अपनी आवाज में सुधार किया. इसके बाद उन्होंने स्वयं अपना अलग दल तैयार करने का मन बना लिया.

पंडित लखमी चंद ने अपने गुरूभाई जैलाल नदीपुर माजरवाले के साथ मिलकर मात्र 18-19 वर्ष की उम्र में ही अलग बेड़ा बनाया और 'साँग' मंचित करने शुरू कर दिए. अपनी बहुमुखी प्रतिभा और बुलंद हौसलों के बल पर उन्होंने एक वर्ष के अंदर ही लोगों के बीच पुन: अपनी पकड़ बना ली. उनकी लोकप्रियता को देखते हुए बड़े-बड़े धुरंधर कलाकार उनके बेड़े में शामिल होने लगे और पंडित लखमी चंद देखते ही देखते 'साँग-सम्राट' के रूप में विख्यात होते गए. 'साँग' के दौरान साज-आवाज-अंदाज आदि किसी भी मामले में किसी तरह की ढील अथवा लापरवाही उन्हें बिलकुल भी पसंद नहीं थी. उन्होंने अपने दल में एक से बढ़कर एक कलाकार रखे और 'साँग' कला को नई ऐतिहासिक बुलंदियों पर पहुंचाया.

उनके शिष्यों की लंबी सूची है, जिन्होंने 'साँग' कला को आगे बढ़ाया. उनके शिष्य पंडित मांगेराम (पाणचि) ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर 'साँग' को एक नया आयाम दिया और अपने गुरु के बाद दूसरे स्थान पर 'साँग' कला में अपना नाम दर्ज करवाया. पंडित मांगेराम के अलावा पंडित रामचन्द्र, पंडित रत्तीरम, पंडित माइचन्द, पंडित सुल्तान, पंडित चन्दन लाल, पंडित रामस्वरुप, फौजी मेहर सिंह, पंडित ब्रह्मा, धारा सिंह, धरमे जोगी, हजूर मीर, सरूप, तुगल, हरबाक्ष, लाखी, मित्रसाइन, चंदगी, मुंशी, गुलाम रसूल, हैदर आदि शिष्यों ने अपने गुरु पंडित लखमीचन्द का नाम खूब रोशन किया.

उस समय अभिनय और सांग को अच्छा नहीं माना जाता था, जिसकी वजह से लखमीचन्द को काफी परेशानी हुई, लेकिन लखमीचन्द धुन के पक्के थे. वे मेहंदीपुर के श्री चंद साँगी के साथ मंडली में सम्मिलित हुए और अपनी प्रतिभा को और निखारने के लिए सोहंकुंड वाला के साथ काम करने लगे.

उन्होंने 20 से भी अधिक 'सांग' की रचना की थी, जिनमें से प्रमुख है- नौटंकी, शाही-लकड़हारा, राजा भोज, चंद्रकिरण, हीर-रांझा, चापसिंह, नल-दमयंती, सत्यवान सावित्री, मीराबाई, पद्मावत आदि.

पंडित जी के भजन-रागिनी हरियाणा के लोगों द्वारा बड़े चाव से गाए और सुने जाते हैं. लोक जीवन में उनके जैसी लोकप्रियता एवं ख्याति किसी और लोककवि को नहीं मिली. फिर भी, न जाने क्यों, उनका लोकरंजक सांग-साहित्य अब तक प्रामाणिक रूप से प्रकाशित नहीं हो पाया. यह अभाव लखमीचन्द के काव्य के प्रशंसकों को बहुत अखरता रहा. पंडित लखमीचन्द कवि थे. अत: उनकी रागिनियाँ उसी समय लिपिबद्ध नहीं की जा सकीं. परिणामस्वरूप उनकी भाषा में प्रयास करने पर भी एकरूपता नहीं आ पाई.

पंडित लखमीचन्द का सम्पूर्ण जीवन गुरुमय रहा. गायन कला के पश्चात् अभिनय कला में महारत अर्जित करने हेतु ये कुछ दिनों मेहंदीपुर निवासी श्रीचंद साँगी की साँग मंडली में भी रहे. तथा बाद में प्रख्यात साँगी सोहन कुंडलवाला के दल में भी रहे. कुछ दिनों के बाद लगभग बीस साल की आयु में पंडित लखमीचन्द ने सर्वाधिक लोकप्रिय साँगी, सूर्यकवि का दर्जा प्राप्त किया. प्रारम्भ में उनके साँग शृंगार रस से परिपूर्ण थे जो बाद में सामाजिकता एवं अध्यात्म का चरम एहसास लिए हुए है. इस प्रकार उन्होंने समाज के हर वर्ग में अपनी पैठ बनाई, जिस कारण आज भी उनकी कई काव्य पंक्तियाँ हरियाणवी समाज में कई जगह प्रयोग की जाती हैं.

इस महान व्यक्तित्व का लंबी बीमारी के उपरांत दिनांक 17 जुलाई, 1945 को निधन हो गया. वे अपनी अथाह एवं अनमोल विरासत छोड़कर गए हैं. उनकी इस विरासत को सहेजने व आगे बढ़ाने के लिए उनके सुपुत्र पंडित तुलेराम ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई. इसके बाद तीसरी पीढ़ी में उनके पौत्र पंडित विष्णु दत्त कौशिक भी अपने दादा की विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन में अति प्रशंसनीय भूमिका अदा कर रहे हैं. वे अपने दादा द्वारा बनाए गए 'तारचंद' के तीन भाग, 'शाही लकड़हारा' के दो भाग, 'पूर्णमल', 'सरदार चापसिंह, 'नौटंकी', 'मीराबाई', 'राजा नल', 'सत्यवान-सावित्री', महाभारत का किस्सा 'कीचक द्रोपदी', 'पद्मावत' आदि दर्जन भर सांगों का हजारों बार मंचन कर चुके हैं और आज भी लोगों की भारी भीड़ उन्हें सुनने के लिए दौड़ी चली जाती है. हरियाणवी लोक संस्कृति की महान शख्सियत पंडित लखमी चंद को कोटी-कोटी नमन है.

हरिप्रकाश भृगु
सोनीपत शाखा, करनाल

काव्य सृजन

विरोध

हर सोच से आगे की सोच,
हर खोज से आगे की खोज,
विरह, मिलन, जीवन, मरण, हर रोज़,
पर फिर भी आवाज़ में वही ओज,
मैं कौन हूँ, जो विचारों से ओत प्रोत लड़ रहा।

सत्य से साक्षात्कार कहाँ,
असत्य से विग्रह कहाँ,
भयभीत अंतर ढूंढ रहा,
सुरक्षित सा एक पड़ाव यहाँ वहाँ,
मैं कौन हूँ जो निर्भय होने की हठ कर रहा।

न भूत में संभव,
न भविष्य में असंभव,
वर्तमान की पीड़ा में सुख का अनुभव,
आनंद में भी शून्य का अनुभव,
मैं कौन हूँ जो हर भाव पर संशय कर रहा।

आश्रय में जाने से इंकार,
प्रश्रय देने को नहीं तैयार,
हर संभावनाओं का प्रतिकार,
यह संबंध विच्छेद, क्या सोच का विकार,
मैं कौन हूँ, जिसे कोई भी बंधन नहीं स्वीकार।

विवेक राज
क्षे.म.प्र.का. रांची

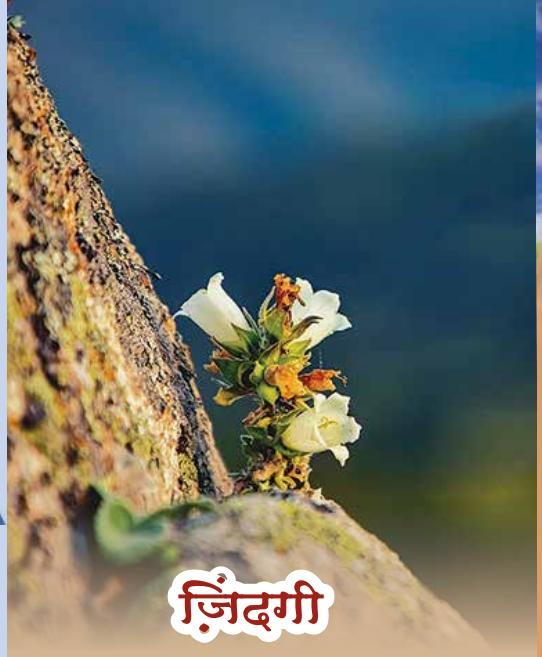

ज़िंदगी

ज़िंदगी की नाव में
कहीं धूप है, कहीं छाँव है
कभी हसीन जिंदगी,
कभी हृदय का घाव है.
कभी ज़हर सी ज़िंदगी,
कभी अमृत सी रसधार है.
कभी फूलों सी ज़िंदगी
कभी कांटो की बौछार है.
आओ, हँसकर जी जायें
आंसुओं को पी जाएँ
खुशियाँ सभी को बांटे
दुख गैरों के पी जाएँ.
तभी तो,
हसीन बनेगी ज़िंदगी,
रंगीन बनेगी ज़िंदगी,
मधुबन बनेगी ज़िंदगी.

के. एम. रतनोत्तर
भैरवनाथ शाखा,
क्षे.का. अहमदाबाद

सपने का एक अपना घर

हमने भी एक सपना देखा,
सपने में 'घर' अपना देखा।

घर जो अपने पास नहीं है,
वर्षों से यह आस रही है।

अपना भी एक आंगन होगा,
झूमेंगे जब सावन होगा।

छत होंगी, दीवारें होंगी,
खुशियों की बौछारें होंगी।

बगिया में जो फूल खिलेंगे,
भौरों के भी गुंजन होंगे।

चिड़ियों की चहचहाहट सुनकर,
नई चेतना मन के भीतर।

एक अनोखा अनुभव होगा,
शांति और सुकून भी होगा।

एक दिन अपना भी घर होगा,
आकर्षक, मनभावन होगा।

उस घर में सब साथ रहेंगे,
सुख और दु:ख सब साथ सहेंगे।

अपनों का भी साथ मिलेगा,
बड़ों का आशीर्वाद रहेगा।

ऐसा सुंदर सपना लेकर,
क्यों न हों हम इतने तत्पर!

चलो, सपना साकार करें,
हम भी 'घर' निर्माण करें।

अश्विनी कुमार
त्रिप्पूनितुरा शाखा,
क्षे.का. एर्णाकुलम

जानता है कोई

इस दरों-दीवार को जानता है कोई,
क्या मेरे घर को पहचानता है कोई.

सूनी चौखट के बाहर रखूं पाँव,
तो यूं लगता है,
कब आओगे लौटकर, पुकारता है कोई.
बहुत दूर तक अकेला हूं,
जिंदगी के सफर में,
कभी कोई हमसफ़र था मेरा,
जानता है कोई.

खुद से बिछड़ा तो भटका हूं, दर-बदर,
मुद्दतों बाद घर लौटा,
तो घर के आईने ने कहा,
क्या इस घर में,
अब भी तुम्हें जानता है कोई.

आशीष त्रिवेदी
क्षे.का.बरेली

तुम्हारे आने की आस

दीपक की लौ में कहीं थी झूठ की खनक
रूह को न मिला सूकून,
न बुझी मन की प्यास
जगी रही कहीं न कहीं तुम्हारे आने की आस.

पत्ते सूख गए, गिर गए, नए लगने लगे
सावन आया, ठंड से सिकुड़ने लगी हर एक घास
जगी रही कहीं न कहीं तुम्हारे आने की आस.

रातों में करती थी तारों की गणना
दिन के उजालों में बहते थे नैना,
सबसे अलग थे तुम मेरे लिए
तुममें थी ज़रूर कोई बात
जगी रही कहीं न कहीं तुम्हारे आने की आस.

वर्षों बीत गए, तुम न आए
अब जो आओगे तो मुझे न पाओगे
शायद गिन रही हूँ जीवन की आखिरी सांस
जगी रही कहीं न कहीं तुम्हारे आने की आस

पिंकी कुमारी
क्षे.का. वाशी

रिश्तों के बदलते रूप

रिश्तों के रूप बदलते जा रहे हैं,
बातों के ढंग बदलते जा रहे हैं,
अब ना ममता का आँचल भीगता है,
ना कहीं बड़ों का आदर सम्मान दिखता है।
नयी पीढ़ी की नयी ज़ुबानी है,
पुरानी पीढ़ी अब क़िस्सा कहानी है,
अब ना आंसुओं का कोई मोल है,
ना ही जज़्बात की कद्र है,
ना ही हँसने-हँसाने वाले,
ना ही रोने रुलाने वाले,
बच्चों की फ़ौज है।
अब ना दादी-नानी की लोरियाँ हैं,
ना दादा की डाँट, ना नाना की
हाथों में पकड़ी छड़ियाँ हैं।
अब तो ना ही घर में खोई हुई
चीज़ों का ना मिलने का दु:ख है,
और ना ही फिर उसको पा
कर मुस्कराने का सुख है,
प्यार और अपनापन दूर हुआ है
रिश्तों का रूप ही बदल गया है।

सौरभ कुमार
दर्गामिट्टा शाखा, नेल्लूर

हरियाणा की क्षेत्रीय विशेषताएँ

हरियाणा के कुछ विशेष जिलों की क्षेत्रीय विशेषताओं से अवगत कराना यानि उन जिलों में जाकर प्रत्यक्ष रूप के उन जिलों से रूबरू होना.

करनाल- करनाल हरियाणा राज्य में यमुना नदी के किनारे बसा हुआ एक जिला है जिसे महाभारत के राजा कर्ण ने बसाया था. नगर के मुख्य द्वार को कर्ण द्वार कहा जाता है तथा नगर में एक तालाब का नाम भी कर्ण ताल है. करनाल को पेरिस ऑफ हरियाणा, धान का कटोरा, एग्रो हब इत्यादि उपनामों से भी जाना जाता है. राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान की स्थापना मूल रूप से बेंगलूरु में सन 1923 में हुई थी. सन 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात करनाल नगर में इसका मुख्यालय बनाया गया. सन 1965 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने "सर्व भारतीय गेहूं सुधार परियोजना" की शुरुआत की. सन 1978 में इस परियोजना को गेहूं शोध निदेशालय में परिवर्तित कर सन 1990 में इसका मुख्यालय करनाल नगर में बनाया गया. केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान का मुख्यालय भी करनाल नगर में ही स्थापित किया गया है.

प्राचीन इतिहास की नजर से करनाल नगर में दरगाह कलंदर साहब, इब्राहिम लोदी का मकबरा, सेंट जेम्स चर्च टावर, अलर्ट पार्क, सीतामढ़ी का मंदिर जहां पर सीता माता जमीन में समा गयी थी,अदिति मंदिर जहां पर भगवान सूर्य को जन्म देने से पूर्व माता अदिति ने तपस्या की थी, अभिमन्यु का किला इत्यादि दर्शनीय स्थल मौजूद हैं.

उद्योगों के हिसाब से करनाल नगर में लिबर्टी शूज लिमिटेड फूटवेयर, लिबर्टी इंटरप्राईजेज़, चमन लाल सेतिया एक्सपोर्ट्स, शूगर केन ब्रीडिंग इंस्टीट्यूट, स्माल इंडस्ट्रीज़ सर्विस इंस्टीट्यूट, इत्यादि बड़े तथा लघु उद्योग मौजूद हैं.

करनाल को केंद्र सरकार की योजना स्मार्ट सिटी मिशन के तहत स्मार्टसिटी के रूप में विकसित होने वाले सौ भारतीय नगरों में शामिल किया गया है.

हिसार- हिसार नगर की स्थापना सन 1354 में सुल्तान फिरोज़शाह तुगलक द्वारा की गयी थी. इसका उपनाम "हिसार-ए-फिरोज़ा" है. सुल्तान फिरोज़शाह तुगलक ने हिसार नगर को मस्जिदों, बगीचों, नहरों तथा कई खूबसूरत इमारतों से सजाया था. इसके साथ दिवान-ए-आम, हमाम-सरोवर तथा गुजरी महल है जिसे सुल्तान फिरोज़शाह तुगलक ने अपनी प्रेयसी गुजरी के रहने के लिए बनाया था. हिसार नगर को 'मेग्नेट सिटी' तथा 'स्टील सिटी' इत्यादि उपनामों से भी जाना जाता है.

हिसार नगर आज भी विश्वभर में पशुधन का सबसे बड़ा केंद्र माना जाता है. जिसमें से कुछ निम्नवत हैं :-

राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र :- अश्वों के स्वास्थ्य व प्रजनन के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र की स्थापना सातवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तगर्त हिसार में की गई.

केंद्रीय भैंस अनुसंधान केंद्र :- भैंसो के सुधार के लिए जीव कोशिका संरक्षण, संतुलित आहार, चारा क्षेत्र का विकास, प्रजनन योग्यताओं में बढ़ोत्तरी, दूध, मांस तथा खाल के स्वास्थ्य प्रबंधन आदि पहलुओं पर अनुसंधान के लिए इस संस्थान की स्थापना 01 फरवरी, 1985 को हिसार में की गई.

उत्तरी प्रादेशिक फार्म मशीनरी प्रशिक्षण एवं जांच संस्थान :- भारतीय मानक संस्थान द्वारा जांच प्रयोगशाला तथा उत्तरी क्षेत्रीय प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के अलावा संस्थान में डीजल, पेट्रोल और मिट्टी के तेल से चलने वाले छोटे इंजनों, सिंचाई के पम्प, भिन्न योजनाओं के अंतर्गत इस संस्थान की स्थापना सन 1963 में की गयी.

इंडो-आस्ट्रेलियन लाईव स्टाक व भेड़ प्रजनन फार्म :- आस्ट्रेलियन सरकार के सहयोग से इंडो-आस्ट्रेलियन लाईव स्टॉक फार्म की स्थापना 1974-75 तथा इंडो-आस्ट्रेलियन भेड़ प्रजनन फार्म की स्थापना 1969-70 में की गयी जहां पर प्रमुखतया जर्सी, फेसियन और क्रॉस नसल के पशु हैं.

शिक्षा के महत्व की दिशा में हिसार नगर बहुत महत्वपूर्ण है यहाँ मुख्यत: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, जिसकी स्थापना 02 फरवरी, 1970 की गयी, एशिया के सबसे बड़े कृषि विश्वविद्यालयों में से एक है जो कृषि शिक्षा, शोध एवं उत्तम तरीके के बीज विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है.

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की स्थापना 20 अक्तूबर, 1995 को की गयी जहां पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबन्धित स्नातक एवं स्नातकोतर तथा शोध के विविध पाठ्यक्रम

संचालित हैं. गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विद्यालय को हरित परिसर का सम्मान भी प्राप्त है.

इस प्रकार से कृषि, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पशु चिकित्सा, पशु विज्ञान और शिक्षा से संबन्धित तीन विश्वविद्यालय एवं एक मेडिकल कॉलेज के रूप में हिसार की अहम भूमिका है.

कृषि, शिक्षा के क्षेत्र में विकास के साथ-साथ हिसार उद्योग में भी अग्रणी है, जहां पर हरियाणा टेक्सटाइल मिल एवं जिंदल उद्योग भी हैं जिसके फलस्वरूप हिसार को उद्योग जगत में भी अग्रणी स्थान प्राप्त है.

सांस्कृतिक एवं पुरातत्व महत्व से भी हिसार का इतिहास गौरवमयी है यहाँ राखीगढ़ी एवं अग्रोहा जैसे पुरातात्विक महत्व से संबन्धित ऐतिहासिक स्थल हैं.

राखीगढ़ी में हड़प्पा सभ्यता के समय का एक विशाल स्थल है जहां योजनाबद्ध तरीके से निर्मित नगर व्यवस्था, रिहायशी घर, नगर की नाकाबंदी के अवशेष मिले हैं, जिनका महत्व देखते हुए इसे वर्ल्ड हेरिटेज में शामिल कर लिया गया है.

ऐतिहासिक नगर हिसार के बारे में यही कह सकते हैं

"शाही दुर्ग फिरोज का, कहते जिसे हिसार,
कल तक था मरुस्थल, आज हरियाणा का शृंगार."

अंबाला- अंबाला की स्थापना अम्बा नामक राजपूत शासक ने की थी. कुछ लोगों का मानना है कि अंबाला नाम की उत्पत्ति शायद महाभारत की अम्बालिका के नाम से हुई थी जबकि कुछ का मानना है कि अंबिका माता का मंदिर होने के कारण इस नगर का नाम अंबाला पड़ा. अंबाला को विज्ञान नगरी के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि यहाँ वैज्ञानिक उपकरण उद्योग केंद्रित है. भारत के वैज्ञानिक उपकरण का लगभग चालीस प्रतिशत उत्पादन अंबाला में होता है. उद्योग एवं व्यापार के हिसाब से अंबाला एक महत्वपूर्ण नगर है. वैज्ञानिक उपकरणों, सिलाई मशीनों, मिक्सी उद्योग और मशीनी औजारों के निर्माण, हथकरघा उद्योग में अंबाला अव्वल है. अंबाला में एक सरकारी धातु कार्यशाला भी है. अंबाला गलीचा उद्योग के लिए भी मशहूर है जिसे स्थानीय भाषा में "दरी" कहा जाता है. अंबाला छावनी, भारत का एक प्रमुख सैनिक आगार है. यहाँ भारत का प्रमुख वायु सेना मुख्यालय है इसका उपयोग सैन्य और सरकारी उड़ानों के लिए किया जाता है जिसका निर्माण सन 1919 में किया गया तथा सन 1938 में इसे स्थायी एयरबेस बनाया गया. साल 2020 में सैन्य-रक्षा को और ताकतवर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए भारत-फ्रांस सरकार के सहयोग से पहले राफेल विमानों का बेड़ा अंबाला एयरबेस पर सफलतापूर्वक पहुंचाया गया, जिससे विश्वभर में भारत की सैन्य -शक्ति का आभास कराया गया.

गुरुग्राम- गुरुग्राम, चंडीगढ़ और मुंबई के बाद भारत का सबसे ज्यादा पर-कैपिटा इनकम वाला नगर है. लोक-मान्यता के अनुसार महाभारत काल में राजा युधिष्ठिर ने यह ग्राम अपने गुरु द्रोणाचार्य को दान दिया था. उनके नाम पर ही इसे गुरुग्राम कहा जाने लगा. महान गुरु भक्त एकलव्य से गुरु द्रोणाचार्य ने इसी स्थान पर अंगूठा मांगा था. गुरुग्राम में शीतला माता का एक प्रसिद्ध मंदिर है जहां प्रतिवर्ष नियमित रूप से मेले का आयोजन किया जाता है, शीतला माता गुरु द्रोणाचार्य की पत्नी थीं.

शुरुआत में गुरूग्राम एक छोटा सा ग्राम था, लेकिन आज यह हरियाणा का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला नगर है. गुरुग्राम इन्दिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा के समीप बसा हुआ है और देश की राजधानी दिल्ली से द्रुतगामी मार्ग, मेट्रो, रैपिड मेट्रो इत्यादि यातायात के साधनों से जुड़ा हुआ है.

गुरुग्राम भारत का दूसरा सबसे बड़ा सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र और तीसरा सबसे बड़ा वित्तीय और बैंकिंग केंद्र है एवं भारत के सबसे बड़े चिकित्सा पर्यटन उद्योग का भी घर है. आज गुरुग्राम में भारत की सबसे बड़ी कंपनियों, स्टार्ट-अप कंपनियों, और 250 से अधिक फॉर्च्यून कंपनियों के स्थानीय कार्यालय स्थापित हैं.

मनोरंजन और खेल के हिसाब से देखें तो गुरुग्राम में कई उल्लेखनीय प्रदर्शनीय स्थल हैं जिसमे प्रमुख स्थल एपिसेंटर, किंगडम ऑफ ड्रीम्स, लेजर वैलि पार्क, एम्बियंस मॉल.

शिक्षा क्षेत्र के हिसाब से गुरुग्राम में मुख्यत: सभी बड़े विश्वविद्यालय जैसे आईटीएम विश्वविद्यालय, ज़ी.डी. गोयंका विश्वविद्यालय, अंसल विश्वविद्यालय इत्यादि मौजूद हैं.

कुरुक्षेत्र- महाभारत में वर्णित कुरुक्षेत्र युद्ध यहीं पर हुआ था और भगवान श्री कृष्ण ने युद्ध से पहले अर्जुन को श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञान भी यहीं दिया था. कुरुक्षेत्र को एक पवित्र भूमि के रूप में माना जाता है और मान्यता है कि जो यहाँ मरेगा वह स्वर्ग को जाएगा. ब्रह्मा सरोवर कुरुक्षेत्र का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है, जिसकी मान्यता है कि इस पवित्र सरोवर में स्नान करने से सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है.यह सरोवर एशिया के सबसे बड़े मानव निर्मित तालाबों में से एक है.

ऐतिहासिक स्थल के रूप में यहाँ शेख चिल्ली का मकबरा है जिसका रखरखाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किया जाता है इस स्मारक को मुगल काल के दौरान सूफी संत शेख चिल्ली की याद में बनाया गया था. यहाँ मौजूद पाथर मस्जिद लाल बलुआ पत्थर से बनी हुई है और अपनी बांसुरी वाली मीनार के लिए जानी जाती है.

शिक्षा क्षेत्र में विकास के लिए यहाँ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना की गयी है. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को एसोसिएशन ऑफ कॉमनवैल्थ यूनिवर्सिटीज के सदस्य के रूप में मान्यता प्राप्त है.

पंचकुला- चंडीगढ़ के समीप बसे इस नगर के नाम की उत्पत्ति के पीछे मान्यता है कि इसका नाम पंच- यानि पाँच कुला- यानि नहर अर्थात पाँच नहरों से बने हुए पर आधारित है जो घग्गर नदी से ऊपर के खंड से पानी लेते हैं और यह पानी नाड़ा साहिब से लेकर मनसा देवी तक वितरित होता है.

संदीप कुमार
क्षे.का.हिसार

हरियाणा की भाषाई यात्रा

हरियाणवी भाषा मूल रूप से आर्यों की भाषा है जो कि 1500 बी सी में भारत आए थे. आर्य भारत में उत्तर भारतीय क्षेत्रों मूलत: हरियाणा क्षेत्र में आकर बसे थे. इनके यहाँ आने के बाद ही हरियाणा क्षेत्र में हरियाणवी भाषा अस्तित्व में आई एवं आम बोल चाल की भाषा के रूप में इसका प्रचलन हुआ. वैसे तो हरियाणा की आधिकारिक एवं प्रशासनिक भाषा हिन्दी है लेकिन हिन्दी के बाद आम बोल-चाल में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं का विवरण इस प्रकार है:-

हरियाणवी - 37.17%

पंजाबी - 7.36%

बागड़ी (राजस्थान मिश्रित हरियाणवी)- 2.11%

मेवाती- 1.66%

उर्दू - 1.48%

अन्य - 2.26%

हरियाणवी भाषा हिन्दी भाषा की ही उपभाषा है एवं इसकी लिपि भी देवनागरी ही है. इसे खड़ी बोली के नाम से भी जाना जाता है. हरियाणवी भाषा केवल हरियाणा तक ही सीमित न होकर दिल्ली, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में मुख्य बोल चाल की भाषा है. वर्तमान में दिल्ली के साथ लगे गुरुग्राम, फरीदाबाद एवं चंडीगढ़ के साथ लगे पंचकुला एवं अंबाला आदि शहरों में हरियाणवी का प्रचलन लगातार कम होता जा रहा है.

जहां पूरे भारत में हरियाणवी को एक दबंग भाषा के रूप में जाना जाता है, वहीं इसे हिन्दी फिल्मों में मज़ाकिया तौर पर भी बढ़ चढ़ कर प्रयोग किया जाता है जैसे- बावली बूच सै के (पागल हो क्या), लठ गाड़ दिया भाई (कमाल कर दिया) एवं घणा अंग्रेज़ सै के (ज्यादा होशियार मत बन) इत्यादि डायलॉग हिन्दी फिल्मों में आमतौर पर देखने को मिल जाते हैं. कई फिल्में जैसे- 'दंगल' 'सुल्तान' एवं 'चक दे इंडिया' जैसी फिल्मों में हरियाणवी पृष्ठ भूमि से आने वाले किरदारों को दिखाया गया है जिसकी वजह से काफी हरियाणवी शब्द युवाओं की जुबान पर चढ़ चुके हैं जैसे - ताऊ, बावली तरेड़, भड़क, कसूता, एंडी, गदर एवं जुगाड़ इत्यादि.

वर्तमान में हरियाणा पुलिस या हरियाणा रोडवेज की बोल चाल का तरीका, सपना चौधरी एवं हरियाणवी कलाकारों के गाने, हरियाणवी खिलाड़ियों की बोल- चाल इत्यादि ने हरियाणवी शब्दों को और अधिक लोकप्रिय बनाया है. आप हरियाणवी को उत्तर भारत में बोली जाने वाली समस्त भाषाओं का समूह भी कह सकते हैं क्योंकि हरियाणवी बोलने का लहजा उत्तर हरियाणा का कुछ और है वहीं दक्षिण हरियाणा की हरियाणवी का लहजा अलग है. इसी प्रकार पंजाब के लगते क्षेत्रों की हरियाणवी कुछ अलग ही है.

वैसे आम तौर पर हरियाणवी भाषा को लठ मार बोली कहा जाता है क्योंकि हरियाणवी भाषा में व्यंग्य की प्रधानता इसे और भी अधिक आकर्षक बनाती है. हरियाणवी बोली जीवन में कितनी भी नीरसता हो या उत्साह की कमी हो लेकिन हरियाणवी भाषा अपने अंदाज में हमें आत्म विश्वासी एवं उत्साहित रहने की प्रेरणा देती है. यही इस भाषा की महानता है.

हरियाणवी भाषा हरियाणा के अधिकतर जिलों में बोली जाती है. राजस्थान से जुड़े मेवात जिले में मेवाती, महेंद्र गढ़ एवं रेवाड़ी जिले में अहीरवाली, भिवानी और सिरसा में बागड़ी, फरीदाबाद और गुरुग्राम में ब्रज एवं फतेहाबाद में पंजाबी बाहुल्य होने के कारण पंजाबी बोली ज्यादा बोली जाती है.इनके अलावा अन्य सभी जिलों में मुख्यत: हरियाणवी बोली जाती है. यहाँ पर गौर करने योग्य बात यह भी है कि हरियाणवी भाषा केवल देश की सीमाओं तक सीमित नहीं है. आपको जानकार आश्चर्य होगा कि पाकिस्तान में भी एक बड़ी आबादी जो क्षेत्रीय भाषा बोलती है वह हरियाणवी से काफी मिलती जुलती भाषा है. हरियाणवी बोली में भी बहुत सी विभिन्नताएँ हैं. इसका उच्चारण एवं कुछ किलोमीटर की दूरी पर ही बदलता जाता है. उदाहरण के लिए हिसार, कैथल, रोहतक व सोनीपत में बोली जाने वाली हरियाणवी एकदम अलग अलग है. आप उक्त क्षेत्र के लोगों के वाणी प्रवाह से ही आसानी से उनके क्षेत्र का पता लगा सकते हैं कि वो व्यक्ति किस जिले से संबंध रखता है. हरियाणवी बोली हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को मुखरित करती है जो कि इस भाषा का यहाँ की मिट्टी से जुड़े होने का अहसास कराती है.

कपिल देव ठकराल
क्षे.का.हिसार

पानीपत के ऐतिहासिक युद्ध

पानीपत का ऐतिहासिक युद्ध वर्तमान हरियाणा के पानीपत स्थान पर हुआ था. इतिहास के अनुसार पानीपत के मैदान में कुल 03 युद्ध हुए थे. प्रथम युद्ध वर्ष 1526 ई. में, द्वितीय युद्ध वर्ष 1556 ई. में तथा तृतीय युद्ध वर्ष 1761 ई. में हुआ था. पानीपत के युद्धों का पूरे भारत पर असर पड़ा. इन युद्धों ने भारत के भविष्य को प्रभावित करते हुए यहां की राजनीति में असाधारण प्रभाव डाला. पानीपत वह स्थान है, जहाँ बारहवीं शताब्दी के बाद से उत्तर भारत के नियंत्रण को लेकर कई निर्णायक लड़ाइयां लड़ी गयीं.

पानीपत का प्रथम युद्ध :- पानीपत के प्रथम युद्ध की शुरुआत 21 अप्रैल, 1526 में मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर एवं इब्राहिम लोदी के बीच हुई थी. इस युद्ध ने भारत में मुग़ल साम्राज्य की नींव डाली. यह उन पहले युद्धों में से एक था जिसमें बारूद, आग्नेयास्त्रों और मैदानी तोपखाने को लड़ाई में शामिल किया गया था. इस युद्ध में अफगानिस्तान के तैमूरी शासक ज़हीरूद्दीन मोहम्मद बाबर की सेना ने दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को युद्ध में परास्त किया तथा भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की.

एक अनुमान के मुताबिक बाबर की सेना में 12,000-25,000 के करीब सैनिक और 20 मैदानी तोपें थीं जबकि इब्राहिम लोदी के सेनाबल में लड़ाकू सैनिकों की संख्या कुल 100000 से 110000 के आसपास थी. इसके साथ ही कम से कम 300 हाथियों ने भी युद्ध में भाग लिया था. क्षेत्र के हिंदू राजा इस युद्ध में तटस्थ थे. इस युद्ध में बाबर ने तुलुगमा पद्धति जैसे उच्चतर युद्ध कौशल का प्रयोग किया था. यह अब तक के युद्धों में पहला ऐसा युद्ध था जिसमें इसका प्रयोग किया गया था.

इस युद्ध में इब्राहिम लोदी की पराजय हुई थी तथा भारतवर्ष पर मुगल साम्राज्य की स्थापना हो गयी थी. बाबर के नेतृत्व में मुगल सम्राट का दिल्ली की गद्दी पर राज्यारोहण हुआ.

पानीपत का द्वितीय युद्ध : 24 जनवरी 1556 में मुगल शासक हुमायूं का दिल्ली में निधन हो गया और उसके बेटे अकबर ने गद्दी संभाली. उस समय अकबर की उम्र केवल तेरह वर्ष की थी. 14 फ़रवरी 1556 को पंजाब के कलानौर में उसका राज्याभिषेक हुआ. इस समय तक मुगल शासन का प्रभाव काबुल, कंधार, दिल्ली और पंजाब के कुछ हिस्सों तक ही सीमित था. अकबर अपने संरक्षक बैरम खान के नेतृत्व में मुगल साम्राज्य की बागडोर संभाल रहा था.

हेमू वर्तमान हरियाणा के रेवाड़ी का एक हिन्दू था. 1553-1556 के दौरान हेमू ने सेना के प्रधान मंत्री व मुख्यमंत्री के रूप में पंजाब से बंगाल तक 22 युद्ध जीते थे. हेमू ने दिल्ली (तुगलकाबाद के पास) की लड़ाई में 06 अक्टूबर को मुगल सेना को पराजित किया. लगभग 3,000 मुगलों की हत्या कर हेमू का मनोबल काफी ऊंचा हो गया था. मुगल कमांडर तरदी बेग दिल्ली को हेमू के कब्जे में छोड़, बचे खुचे सैनिकों के साथ युद्ध छोड़कर भाग गया था. अगले दिन दिल्ली के पुराने किले में हेमू का राज्याभिषेक किया गया. हालाँकि यह भी कुछ ही दिन का मेहमान साबित हुआ.

दिल्ली और आगरा के पतन से कलानौर में मुगल परेशान हो उठे. कई मुगल सेनापतियों ने अकबर को हेमू की विशाल सेना को चुनौती देने की बजाय काबुल की तरफ पीछे हटने की सलाह दी. लेकिन बैरम खान ने युद्ध के पक्ष में निर्णय लिया. इसके पश्चात् अकबर की सेना ने दिल्ली की ओर कूच कर दिया.

05 नवम्बर को पानीपत के ऐतिहासिक युद्ध के मैदान में दोनों सेनाओं का सामना हुआ, जहाँ तीस साल पहले अकबर के दादा बाबर ने पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी को हराया था. जी. कीन के अनुसार - अकबर और उसके अभिभावक बैरम खान ने लड़ाई में भाग नहीं लिया और युद्ध क्षेत्र से 5 कोस (8 मील) दूर से ही युद्ध का संचालन किया. बैरम खान 13 साल के अल्पवयीन राजा को युद्ध के मैदान पर भेजने के पक्ष में नहीं था. इसके बजाय उसे 5000 सुप्रशिक्षित और सबसे वफादार सैनिकों की एक विशेष टीम के साथ

लड़ाई के इलाक़े में एक सुरक्षित दूरी पर तैनात किया था. अकबर को बैरम खान द्वारा निर्देश दिया गया था कि युद्ध के मैदान में यदि मुगल सेना हार जाए तो वह काबुल की ओर पलायन कर जाए.

हेमू ने अपनी सेना का नेतृत्व स्वयं किया. हेमू की सेना 1500 युद्ध हाथियों और उत्कृष्ट तोपखाने से सुसज्जित थी. हेमू, जिसकी पिछली सफलता ने उसके गर्व में वृद्धि कर दी थी, 30,000 की सुप्रशिक्षित राजपूत और अफगान अश्वारोही सेना के साथ उत्कृष्ट युद्ध कौशल के साथ आगे बढ़ा. हेमू की विशाल सेना के बावजूद अकबर की सेना ने युद्ध में विजय प्राप्त की. हेमू को गिरफ्तार कर लिया गया और मौत की सजा दी गई थी. हेमू की पत्नी खजाने के साथ, पुराने किले से भाग निकली और कभी उसका पता नहीं चला. 1556 में पानीपत में अकबर की जीत ने भारत में मुगल सत्ता की वास्तविक नींव को मजबूती से पुनर्स्थापित कर दिया.

पानीपत का तीसरा युद्ध : पानीपत के उसी ऐतिहासिक मैदान में 14 जनवरी, 1761 में पुन: अफगानी शासक अहमद शाह अब्दाली तथा मराठा सेना के बीच तीसरा युद्ध हुआ. इस युद्ध में मराठों की पराजय से दिल्ली के सिंहासन पर अफगानों का शासन कायम हो गया.

पानीपत के तीसरे युद्ध के साथ ही मुग़ल साम्राज्य के अंत की शुरुआत हो गई थी, जब मुगलों के ज्यादातर भू भागों पर मराठों का आधिपत्य हो गया था. सन् 1757 ई. में रघुनाथ राव ने दिल्ली पर आक्रमण कर दुर्रानी को वापस अफ़गानिस्तान लौटने के लिए विवश कर दिया. तत्पश्चात् उन्होंने अटक और पेशावर पर भी अपने थाने लगा दिए. अहमद शाह दुर्रानी को ही नहीं अपितु संपूर्ण उत्तर भारत की शक्तियों को मराठों से संकट पैदा हो गया जिसमें अवध के नवाब शुजाउद्दौला और रोहिल्ला सरदार नजीबुद्दौला भी सम्मिलित थे.

अहमद शाह दुर्रानी जो कि दुर्रानी साम्राज्य का संस्थापक था और सन् 1747 में राज्य का सुल्तान बना था, ने अहमदशाह को भारत में आने का न्योता दिया था. जब यह समाचार मराठों के पास पहुंचा तो 1757 को पेशावर में दत्ताजी सिंधिया, जिन्हें पेशवा बालाजी बाजीराव ने वहाँ पर नियुक्त किया था, ने कार्रवाई की परंतु अफगान सेना और शुजाउद्दौला आदि ने उन्हें धोखे से मार दिया.

उस वक्त सदाशिव राव भाऊ जो कि पानीपत युद्ध के नायक थे, उदगीर में थे जहाँ पर उन्होंने सन् 1759 में निजाम की सेनाओं को हराया था जिसके बाद उनके ऐश्वर्य में काफी वृद्धि हुई और वह मराठा साम्राज्य के सबसे ताकतवर सेनापतियों में गिने जाने लगे. इसलिए बालाजी बाजी राव ने अहमदशाह से लड़ने के लिए भी उन्हें ही चुना.

अफ़गानों की कुंजपुरा में हार : सदाशिवराव भाऊ अपनी समस्त सेना को उदगीर से लेकर सीधे दिल्ली की ओर रवाना हो गए. उस वक्त अहमद शाह अब्दाली दिल्ली पार करके अनूप शहर यानी दोआब में पहुँच चुका था और वहाँ पर अवध के नवाब शुजाउद्दौला और रोहिल्ला सरदार नजीबुद्दौला ने उसको रसद पहुंचाने का काम किया. इधर जब मराठे दिल्ली में पहुंचे तो उन्होंने लाल किले को जीत कर कुंजपुरा के किले पर हमला कर दिया. कुंजपुरा में अफगानों को पूरी तरह तबाह करके उनसे सभी सामान और खाने-पीने का सामान हासिल कर मराठों ने लाल किले को जीता.

जब मराठों की सेना वापिस मराठवाड़ा जा रही थी तो उन्हें पता चला कि अब्दाली उनका पीछा कर रहा है, तब उन्होंने युद्ध करने का निश्चय किया. अब्दाली ने दिल्ली और पुणे के बीच मराठों का संपर्क काट दिया. मराठों ने भी अब्दाली का संपर्क काबुल से काट दिया. इस तरह तय हो गया था कि जिस भी सेना को पूर्ण रूप से अन्न, जल की आपूर्ति होती रहेगी वह युद्ध जीत जाएगी.

करीब डेढ़ महीने की मोर्चा बंदी के बाद 14 जनवरी सन् 1761 को बुधवार के दिन सुबह 8:00 बजे दोनों सेनाएं आमने-सामने युद्ध के लिए आ गई. मराठों को रसद की प्राप्ति बंद हो गई थी और उनकी सेना में भुखमरी फैलती जा रही थी, परंतु अहमदशाह को अवध और रूहेलखंड से रसद की आपूर्ति हो रही थी. इसी समय युद्ध के मैदान में विश्वासराव को एक गोली लगी और वह गोली इतिहास को परिवर्तित करने वाली साबित हुई. जब सदाशिवराव भाऊ अपने हाथी से उतर कर विश्वासराव को देखने के लिए मैदान में पहुंचे तो उन्होंने विश्वासराव को मृत पाया. इधर जब बाकी मराठा सरदारों ने देखा कि सदाशिवराव भाऊ अपने हाथी पर नहीं है तो पूरी सेना में हड़कंप मच गया और सारे सैनिक भागने लगे. इसी भगदड़ में कई सैनिक वीरगति को प्राप्त हो गए परंतु भाऊ सदाशिवराव अपनी अंतिम श्वास तक लड़ते रहे. इब्राहिम खान गार्दी जो कि मराठा तोपखाने की कमान संभाले हुए थे उनकी भी इस युद्ध से मौत हो गई और कई दिनों बाद सदाशिवराव भाऊ और विश्वासराव का मृत शरीर भी मिला.

पानीपत के तीनों युद्धों ने भारतीय राजनीति एवं इतिहास को प्रभावित किया. पानीपत के मैदान में लड़े गये युद्ध ने भारत की दिशा एवं दशा को बदलने का प्रयास किया तथा तीनों युद्धों के परिणाम से आगामी राजवंश का भविष्य भी निर्धारित किया. इस तरह हम देखते हैं कि पानीपत के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय युद्ध ने भारत के भूगोल एवं इतिहास को प्रभावित किया है.

अजय बंसल
क्षे.का.पटना

हरियाणा का खान-पान एवं पहनावा

हरियाणा के विषय में एक प्रसिद्ध कहावत है कि 'जहां दूध - दही का खाना, वह मेरा हरियाणा' अर्थात् हरियाणा के लोग दूध एवं दूध से बने खाद्य पदार्थ यथा दही, लस्सी, घी इत्यादि खाना पसंद करते हैं. इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि हरियाणा एक कृषि प्रधान राज्य है. अत: यहाँ के लोग खेती से जुड़े हुए हैं. चूंकि खेती का काम बहुत ही परिश्रम भरा होता है अत: इस काम को करने के लिए आपका शरीर भी मजबूत होना चाहिए जो कि शुद्ध एवं पौष्टिक आहार के बिना संभव नहीं है. चूंकि यहाँ के लोग खेती से जुड़े हैं अत: इन लोगों का दूसरा मुख्य व्यवसाय पशु पालन है, जिसे ये लोग सह कारोबार के रूप में भी देखते हैं.

पशु पालन में यहाँ भैंस, गाय एवं बकरी पालन बहुत अधिक मात्रा में किया जाता है. पशुपालन में घर की स्त्री एवं पुरुष समान रूप से भागीदारी करते हैं यथा सुबह चार बजे उठकर पशु के सामने चारा डालने का काम पुरुष का होता है तो वहीं भैंस का गोबर उठाने एवं सफाई से संबन्धित काम स्त्री का होता है. भैंस का दूध निकालने (दुहने) का काम पुरुष का होता है तो भैंस को नहलाने का काम स्त्री करती है. खेत से चारा लाकर उसे काटने का काम पुरुष और स्त्री साथ साथ करते हैं तो शाम को चारा डालना एवं दुहने इत्यादि का काम पुरुष भी करता है. इस प्रकार यहाँ की महिलाएं भी पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है.

हरियाणा के लोग हृष्ट-पुष्ट और गठीले बदन वाले, लंबे चौड़े कद के होते हैं, जिसके पीछे का राज यहाँ का शुद्ध देसी एवं शाकाहारी भोजन ही है. अब आपको यहाँ पर दूध से बनने वाले खाद्य पदार्थों (मिठाइयों) के बनाने की विधि के बारे में थोड़ा संक्षिप्त में बताना चाहता हूँ:-

घी - यहाँ की औरतें घर पर घी बनाने के कार्य में बहुत निपुण हैं. इस प्रक्रिया के अनुसार एक मिट्टी के घड़े (जिसे बिलोनी कहा जाता है) में दूध डालकर इसे पूरा दिन उपलों की आंच पर पकाती हैं. शाम को सोते समय वे इस मटकी में थोड़ी सी लस्सी अर्थात छाछ डालती है जिसे जामन अर्थात् दूध को जमाना कहते हैं. अब सुबह चार बजे उठकर वे इस जमे हुए दूध को रई (एक यंत्र) के साथ खूब मथती हैं. इस दूध को तब तक मथा या बिलोया जाता है जब तक इस दूध से माखन अलग नहीं हो जाता. इसके बाद साफ हाथों से इस दूध से मक्खन को अलग कर दिया जाता है. इस प्रकार मटके में जो बचा जमा दूध होता है, वह मट्ठा/लस्सी अर्थात् छाछ का रूप धारण कर लेता है. अब जो मक्खन तैयार होता है उसे चूल्हे पर धीमी आंच पर गरम किया जाता है, जिससे वह तरल रूप धारण कर लेता है. हुनर मंद औरतों द्वारा इस तरल घी से छाछ के कणों को अलग कर इसे शुद्ध घी का रूप दिया जाता है. बाद में इसे घी के मटके या पात्र में सुरक्षित रख खाने के साथ इसका सेवन किया जाता है. इस प्रकार हरियाणा में दूध, दही, छाछ एवं घी ग्रामीण अंचल में लगभग सभी घरों में भरपूर मात्रा में पाया जाता है.

मावा- दूध को लगातार धीमी आंच पर पका कर घर पर ही मावा भी तैयार किया जाता है, जो यहाँ बहुत पसंद किया जाता है.

गाजरपाक- यह भाजी यहाँ की स्त्रियों द्वारा विशेषकर सर्दियों में बनाई जाती है. इसमें भी दूध को लगातार धीमी आंच पर पकाकर इसमें धीरे धीरे गाजर के बुरादे को छोड़ा जाता है एवं बाद में इसमें मावे का मिश्रण कर लड्डू बना लिए जाते है. जिसे सर्दियों में सुबह उठकर गरमा गरम दूध के साथ कई दिनों तक खाया जा सकता है.

गूँद : यह एक प्रकार का सुखा मेवा है, जिसे अक्सर सर्दियों में खाया जाता है. हरियाणा में गूँद डालने की कला में लगभग प्रत्येक महिला को महारत हासिल है. सर्वप्रथम सूखा गूँद पंसारी से खरीद कर लाया जाता है जिसे कड़ाई में भून कर देशी घी में छोड़ा जाता है एवं धीरे धीरे पकाया जाता है. इसके बाद इसमें आटा, काजू, बादाम, किसमिस, गोला, डोरी एवं नजर से बचाने के लिए काली मिर्च की छोटी छोटी गोलियां मिलाकर इसे अच्छे से तैयार करने के बाद एक मिट्टी के बड़े सकोरे जिसे अमृतबान बोलते हैं, में छोटे छोटे लड्डुओं के रूप में स्टोर किया जाता है. अब हर रोज सुबह व शाम दूध के साथ इसका सेवन किया जाता है जो कि बड़ा ही स्वादिष्ट होता है. यह भी एक ताकतवर खाद्य पदार्थ है. इसे विशेष रूप बच्चे को जन्म देने वाली जापे की औरत के लिए बनाया जाता है. हरियाणा में मज़ाकिया कहावत यह भी है कि "क्यूँ गूँद मांगे है तेरे के जापा हो रया स" इसकी मात्रा का मापन भी घी के माप से ही होता है. जैसे यहाँ की एक औरत दूसरी औरत को बताती हुई बहुत गर्व महसूस करती है कि जब मुझे बेटा हुआ था तो मेरी सास ने मुझे 20 किलो घी का

गूँद दिया था और दस किलो घी का गूँद मेरी माँ ने पहुंचाया था. इस प्रकार यह गूँद विशेषकर औरतों को शारीरिक रूप से मजबूत बनाने के लिए खाया जाता है.

मालपूआ : हरियाणा में देशी घी से बनाया जाने वाला मालपूआ बहुत प्रसिद्ध है. इसे हरियाणा के ग्रामीण इलाकों में प्रत्येक तीज - त्यौहार पर बनाया जाता है. यह एक मीठा पकवान है जिसे कड़ाई में घी डालकर मथे हुए आटे से तैयार किया जाता है एवं जाएकेदार आलू या मटर पनीर की सब्जी के साथ खाया जाता है. यह एक ताकतवर व्यंजन होता है. हरियाणा में आमतौर पर कार्यालयों में किसी कर्मचारी की रिटायरमेंट पार्टी के उपलक्ष्य पर मालपूआ को प्राथमिकता दी जाती है.

इसी क्रम में यहाँ माल पुड़ा, गुलगले, सुहाली, हलवा, इत्यादि भांति-भांति के मेवों को देसी घी से घर की स्त्रियों द्वारा घर पर ही तैयार किया जाता है जिनकी खुशबु और स्वाद आप एक बार खाने के बाद कभी भूल नहीं सकते. हरियाणा की खीर एवं पूरी भी बहुत प्रसिद्ध हैं. आप जानकर हैरान होंगें कि आज भी ग्रामीण अंचल में अधिकतर घरों में रोटी मिट्टी के चूल्हे पर ही पकाई जाती है जिन्हें घर के सारे सदस्य चूल्हे के चारों ओर बैठकर खाते हैं.

हरियाणा के अधिकतर लोग शाकाहारी हैं. इस बात का प्रमाण यह है कि हरियाणा से निकले हुए अधिकतर खिलाड़ी शाकाहारी हैं जबकि वे बड़े बड़े देशों के खिलाड़ियों को पटखनी दे चुके हैं.

यहाँ यह बात भी उल्लेखनीय है कि वर्तमान में यहाँ के खान-पान में कुछ बदलाव आए हैं. चूंकि रोजगार के लिए गाँव से बाहर गए युवा अपने साथ कुछ आधुनिकता को साथ ले आते हैं जो कि बाद में गाँव का भी फैशन बनने लगता है. आजकल यहाँ की युवा पीढ़ी के बच्चे आधुनिकता की दौड़ में ग्रामीण परिवेश के खान-पान को छोड़ पैकिंग वाले खाने को ज्यादा महत्त्व देने लगे हैं. लेकिन यह बात भी सत्य है कि हरियाणा से जुड़ा हर व्यक्ति देशी घी एवं छाछ के बिना आज भी अपने भोजन को अधूरा मानता है.

हरियाणा की पारंपरिक पोशाक : हरियाणा के लोगों की जीवंतता उनकी जीवन शैली में भी काफी स्पष्ट है. उनकी सादगी और जोशीला उत्साह उनके सजने-संवरने के तरीके से अभिव्यक्त होता है. हरियाणा की महिलाओं का रंगों के प्रति विशेष लगाव है. उनकी मूल पोशाक में दामन, कुर्ती और चंदर शामिल हैं. 'चंदर' कपड़े का लंबा, रंगीन टुकड़ा है, जिसे चमकदार लेस और रूपांकनों से सजाया गया है और इसका कार्य सिर को ढंकना है. 'कुर्ती' ब्लाउज की तरह एक शर्ट है. 'दामन' चमकीले रंग की टखने तक लंबी स्कर्ट है. हरियाणा के लोगों के पहनावे के लिए भी एक कहावत प्रसिद्ध है कि - 'सीधे साधे लोग यहाँ के, सीधा साधा बाणा, यहाँ दूध दही का खाना, यह मेरा हरियाणा' अर्थात् यहाँ के लोगों का पहनावा सीधा-सादा मतलब बहुत सरल है. यहाँ के बुजुर्ग धोती- कुर्ता पहनते हैं एवं सिर पर पगड़ी धारण करते हैं. यहाँ पगड़ी की बहुत अहम् भूमिका होती है. यहाँ पगड़ी का अर्थ इज्जत एवं मान सम्मान से होता है. यहाँ के बुजुर्ग हमेशा पगड़ी की इज्जत करना सिखाते हैं. यहाँ की औरतें लहंगा-चोली एवं घाघरा इत्यादि पारंपरिक वेशभूषा भी धारण करती हैं. वहीं यहाँ के बच्चे कुर्ता पायजामा, पेंट-शर्ट एवं जींस आदि डालते हैं. इसी क्रम में यहाँ की महिलाएं एवं लड़कियां भी अब सूट-सलवार एवं आधुनिक वेश भूषा धारण करती हैं.

यहाँ मैं विशेष रूप से एक बात का उल्लेख करना चाहूँगा कि कई हिन्दी फिल्मों तथा अन्य माध्यमों से दुष्प्रचार किया गया है कि हरियाणा के लोग बहुत खूंखार एवं निर्दयी होते हैं एवं हरियाणा में लड़कियों को जन्म लेने से पहले ही मार दिया जाता है या यहाँ लड़कियां सुरक्षित नहीं हैं इत्यादि.

इस संबंध में मैं यह अवश्य कहना चाहूँगा कि हरियाणा के विषय में कहीं या दर्शायी गई उक्त बातें पूर्ण रूप से असत्य हैं. यहाँ के लोगों के बोली में थोड़ा अक्खड़पन भले ही दिखे लेकिन ये लोग दिल के बहुत साफ होते हैं. भाईचारा इन लोगों में कूट कूट कर भरा हुआ है एवं यहाँ के लोग 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' के सिद्धान्त पर चलने वाले लोग हैं.

धीरज सिंह
क्षे.का.हिसार

हरियाणा के त्योहार

भारत का उत्तरी राज्य हरियाणा अपने मस्तमौला अंदाज के साथ ही त्योहार मनाता है. अनादि काल से यह भारतीय संस्कृति और सभ्यता का उद्गम स्थल रहा है. उत्तर भारत में मनाए जाने वाले अन्य सभी त्योहारों के साथ-साथ यहां के त्योहार उत्साह, उमंग एवं हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं. हरियाणा खुशियां नहीं मनाता, मौज लेता है. हरियाणा राज्य भारत की समृद्ध, शानदार संस्कृति को विभिन्न प्रकार के मेलों और त्योहारों में मनाता है.

तीज का त्योहार : श्रावण मास के शुक्लपक्ष की तृतीया (तीज) को हरियाणा में झूलों (पींघ) का त्योहार मनाया जाता है, जिसे 'हरियाली तीज' के नाम से भी जाना जाता है. वैसे 'तीज' एक लाल रंग का प्यारा सा कीट होता है जो मिट्टी में रहता है और बरसात के दिनों में तीज त्योहार के समय ही दिखाई पड़ता है. इस दिन सभी लड़कियां अपने हाथों और पैरों पर मेहंदी लगाती हैं और झूला झूलती हैं. पींघ-पाटड़ी, बहन की कोथली के लिए बनाये जाने वाले पकवान जैसे कि-गुलगुले, सुह्वाली, नमकीन, भुजिया, बतासे-मखाणे, शक्कर-पारे इत्यादि और कुछ लोकगीत जैसे कि-पींघ ऊँची चढ़ा के सासू का नाक तोड़ना, बागों में झूले-झूलना इत्यादि तथा नीम पे निम्बोली लगना, वातावरण में सावन के लोकगीतों की स्वर-लहरियां इस त्योहार की पहचान है और इस उत्सव को मनाने के भिन्न-भिन्न रस्म और रिवाज हैं. इस त्योहार से बहुत से त्योहारों की शुरुआत होती है जो कि देवोत्थान एकादशी (देवठणी ग्यास) तक चलते हैं. इसीलिए कहावत बनी है 'आई तीज बिखेर-गी बीज' अब एक के बाद एक त्योहार लगातार आयेंगे और मनाये जायेंगे.

गूगा नवमी : यह त्योहार रक्षा-बंधन के ठीक नौ दिन बाद भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की नवमी को आता है. इस दिन बहनों द्वारा भाइयों के हाथों पे रक्षा-बंधन के दिन बाँधी गई राखियों को उतार के गूगा जी को सौंपने का दिन होता है. गाँव की गली-गली में गूगा जी के प्रवर्तक डेरू और मोर-पंख वाली नीली पताका ले, गीत गाते हुए आपकी राखी पताका पे बंधवाने आते हैं. गूगा नवमी एक आध्यात्मिक त्योहार है, जिसमें सांप-पूजा होती है. लोग गूग्गा-पीर या ज़हीर-पीर की पूजा करते हैं जो खतरनाक सांप द्वारा काटे हुए लोगों को ठीक करने की शक्ति के लिए प्रतिष्ठित किया गया था.

दशहरा : यह त्योहार अश्विन मास के शुक्ल पक्ष को भगवान राम की रावण पर विजय की याद में मनाया जाता है. दुर्गा पूजा और रावण दहन के साथ हरियाणा में इस त्योहार के कुछ स्थानीय आकर्षण भी हैं. जैसे कि लड़कियों द्वारा सांझी-रंगोली बनाना, सांझी भिन्न प्रकार की होती हैं जैसे गोबर - गारा - मडकन - कपास की सांझी, मोज़े-सितारे और रंगों की सांझी. सांझी बनाने की तैयारियां दस-दिन पहले से ही शुरू हो जाती हैं. फिर दशहरे वाली रात को लड़कियां इक्कट्ठी होकर सांझी को जोहड़ों में बहाने जाती हैं. लड़के गाँव के जोहड़-कल्लर-गौरों पे खुलिया लाठियों के साथ चांदनी रातों में गींड खेलते हैं. हालाँकि आज बदलते परिवेश में ये चीजें कम जरूर हो गई हैं परन्तु आज से पांच-सात साल पहले तक भी इन चीजों को ले के युवक-युवतियों का उत्साह देखते ही बना करता था. पुराने दौर में दशहरे की रात गाँव के घरों में जितने भी पुराने मटके होते थे उनको उठा कर गली में फोड़ा जाता था ताकि पीने के पानी के पुराने बर्तनों की जगह नए बर्तन ले सकें और युवकों में इस बात की होड़ लगती थी कि किसने सबसे ज्यादा मटके फोड़े.

देव-उठनी ग्यास : यह त्योहार मंगसर (मार्गशीर्ष) माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाया जाता है. इस दिन के बाद ब्याह-शादियों का शीतकालीन सत्र शुरू हो जाता है. इस अवसर के एक मुख्य लोकगीत का मुखड़ा: 'ओळएं-कोळएं धरें जंजीर, जियो दुल्हन तेरे बीर बीर'. इस दिन गुड़ या चीनी के मीठे चावल बनाए जाते हैं और शादी वाले घर में शादी के दिन से पहले भी मीठे-चावल बनते हैं, जिनको खुद भी खाया जाता है और बांटा भी जाता है. इन चावलों को बरात के नाम के चावल कहा जाता है.

लोहड़ी : लोहड़ी, मकर संक्रांति से एक दिन पहले हरियाणा राज्य में मनाई जाती है. पंजाबियों के समुदाय के लिए, लोहड़ी का त्योहार एक बहुत ही खास त्योहार है. सभी स्थानीय लोग अलाव के चारों ओर इकट्ठा होते हैं और मिठाई, फूला हुआ चावल और पॉपकॉर्न को आग की लपटों में फेंक देते हैं. वे गाने गाकर और अभिवादन का आदान-प्रदान करके खुद को महफिल में शामिल करते हैं. नवविवाहित दुल्हन और नवजात बच्चे की पहली लोहड़ी बेहद महत्वपूर्ण है.

बैसाखी : बैसाखी का त्योहार हरियाणा राज्य में पंजाबियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जिसे बसंत ऋतु के आने, पेड़-पौधों और फसलों में नए अंकुर फूटने की ख़ुशी में हर्षित संगीत और नृत्य के साथ मनाया जाता है. यह हर साल 13 अप्रैल को पड़ता है और 36 साल में एक बार 14 अप्रैल को पड़ता है. इस विशेष दिन को सिखों के दसवें गुरु (गुरु गोबिंद सिंह) ने वर्ष 1699 में खालसा पंत की स्थापना की थी. इस दिन सिख गुरुद्वारों में जाते हैं और कीर्तन सुनते हैं. धार्मिक संस्कारों और परंपराओं के

खत्म हो जाने के बाद, मीठी सूजी आम जनता को परोसी जाती है. इस त्योहार को मकई की कटाई शुरू करने से पहले आराम करने के अंतिम अवसर के रूप में भी चिह्नित किया जाता है.

हरियाणा की लट्ठमार होली : यह त्योहार फागुन माह की पूर्णिमा को हरियाणा में सबसे बड़े त्योहार के तौर पर मनाया जाता है. लोगों में इस त्योहार का जोश एक सप्ताह पहले से ही चढ़ना शुरू हो जाता है. होली वाले दिन, रात में होलिका-दहन का कार्यक्रम होता है, जिसमे स्त्रियाँ होली की आग में से नारियल (गोला) को घुमाकर प्रार्थना करती हैं और अपनी इच्छानुसार फल-कामना करती हैं. होलिका दहन के दौरान, प्रहलाद को बचाने का कार्य देखने लायक होता है. रंगों के इस त्योहार को हरियाणा राज्य में 'दुल्हंदी- होली' के नाम से भी जाना जाता है. फाग वाले दिन गाँव के युवकों की टोली बनाकर, ढोल लेकर पूरे गाँव की फेरी लगा के आना और पूरे गाँव की भाभियों को चुनौती देते चलना और भाभियों की ये जिद मेरे आगे देखूं कौन ठहर सकता है का जोश और उमंग से लबालब वातावरण, ये सब अद्भुत दृश्य होता है हरियाणा में! आज के दिन भाभियां कपड़े का कोड़ा बनाकर उसे रंगों में डुबाकर देवरों को कोड़े मारती हैं, इसीलिए इसे हरियाणा की लट्ठमार होली कहते हैं.

सीली-सात्तम : यह चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की सप्तमी को मनाया जाता है. इसे बासोड़ा भी कहते हैं. इस दिन पिछली रात का बना हुआ बासी खाना खाया जाता है. इसके बाद अगला बड़ा त्योहार आता है - तीज, जो त्योहारों के मौसम का नया बीज बो के जाती है और फिर यह सिलसिला साल-दर-साल यूँ ही चलता जाता है.

पिंजौर विरासत महोत्सव : हर साल दिसंबर के महीने के दौरान 'पिंजौर गार्डन' में आयोजित किया जाने वाला यह त्योहार हरियाणा की समृद्ध संस्कृति के साथ-साथ इसकी ऐतिहासिक परंपरा को बढ़ावा देता हैं यह एक वार्षिक आयोजन है जो पूरे हरियाणा पर्यटन पर ध्यान केंद्रित करता है. पिंजौर का यह उद्यान पुराने मुगल उद्यानों में से एक हैं, जहां अच्छी थीम के साथ मेले का आयोजन खूबसूरती से किया जाता है. इसे विभिन्न प्लेटफार्मों, द्वारों के साथ-साथ सुंदर रोशनी से सजाया जाता है. मेले के आसपास फूड प्लाजा और दुकानों जैसी सुविधाएं भी हैं. कुछ समारोह भी होते हैं, जिनमें प्रमुख गायकों और भारतीय शास्त्रीय नर्तकियों के साथ-साथ कवियों द्वारा लाइव प्रदर्शन जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल होते हैं.

हरियाणा में आम मेला : आम मेला भारत के कई हिस्सों में आयोजित किया जाता है, लेकिन हरियाणा में, यह जून और जुलाई के महीनों के दौरान पिंजौर के 'यादविंद्र गार्डन' में आयोजित किया जाता है. हरियाणा सहित बिहार और पंजाब, हिमाचल प्रदेश और यूपी राज्यों से कई तरह के आम हरियाणा पहुंचते हैं. यही कारण है कि मैंगो फेस्टिवल मे अलग-अलग आकार के आम (गुणवत्ता और संकर दोनों) लोगों को आकृष्ट करते है. दो दिवसीय आम मेले का मुख्य उद्देश्य किसानों को नवीनतम तकनीक के साथ अपने आम उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करना है. ताकि, वे गुणवत्ता वाले आम उगा सकें, और उगाए गए आमों पर अच्छा मूल्य प्राप्त कर सकें. आम मेला किसानों को अपने आम बेचने में मदद करने के लिए एक मंच भी प्रदान करता है. यह स्वयं सहायता समूहों को अपने उत्पाद बेचने के लिए एक साझा मंच भी प्रदान करता है.

गीता जयंती महोत्सव : श्रीमद्भगवद्गीता हिंदुओं का पवित्र ग्रंथ है और गीता जयंती महोत्सव श्रीमद्भगवदगीता के जन्म को समर्पित है. यह त्योहार हिंदुओं के लिए बहुत पवित्र है और इसे अत्यधिक धार्मिक उत्साह और समर्पण के साथ मनाया जाता है.

सोहना कार रैली, हरियाणा : सोहना कार रैली उर्फ विंटेज कार रैली पुरानी कारों का त्योहार है, जो हर साल फरवरी के महीने में दिल्ली-अलवर हाईवे पर स्थित खूबसूरत पहाड़ी स्थल सोहना में आयोजित की जाती है. सोहना कार रैली 1964 में शुरू की गई थी और उस समय से इसने एक राष्ट्रव्यापी महत्व हासिल कर लिया है. यह पारंपरिक कार रैली दिल्ली से शुरू होती है और फिर गुड़गांव से गुजरती हुई सोहना पहुंचती है. रॉल्स रॉयस से लेकर फोर्ड और ऑस्टिन जैसी पुरानी कारें, जो कभी सड़कों पर अपना जलवा बिखेरती थीं, अब लोकप्रियता हासिल करने के लिए रैली में एक-दूसरे से मुकाबला कर रही हैं. इस रैली में पूरे देश से हजारों कार प्रेमी आते हैं.

कार्तिक सांस्कृतिक महोत्सव, हरियाणा : वार्षिक कार्तिक सांस्कृतिक महोत्सव नवंबर के महीने में बल्लभगढ़ के नाहर सिंह महल में आयोजित किया जाता है. कार्तिक उत्सव का मुख्य उद्देश्य, किले के माहौल, मार्शल आर्ट, भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य और लोक रंगमंच की समृद्ध विविधता को बढ़ावा देना है. महोत्सव स्थल पर आने वाले दर्शकों को शास्त्रीय कलाओं के क्षेत्र में भारत की समृद्धि के बारे में जानकारी मिलती है और गायकों, नर्तकियों को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए एक राष्ट्रीय मंच भी मिलता है.

शैलेन्द्र कुमार
क्षे.का.पटना

हरियाणा का संगीत

हरियाणा का संगीत : हरियाणा का प्राचीन लोक संगीत बहुत लोकप्रिय है जिसे खूबसूरती से गाया जाता है. विशेष अवसरों के साथ-साथ त्योहारों पर भी लोग बड़ी संख्या में गाते हैं. यहां गाए जाने वाले गीत दो प्रकार के होते हैं-शास्त्रीय और ग्रामीण. शास्त्रीय रूप महान किंवदंतियों (पौराणिक) बारहमास के साथ-साथ जयमल-फट्टा आदि से संबंधित है; जबकि, ग्रामीण इलाकों के संगीत में विभिन्न रागों वाले गाने शामिल होते हैं, जिन्हें हिंदुस्तानी शैली में गाया जाता है, खासकर समारोहों और विभिन्न मौसमों के दौरान. इन रागों में पहाड़ी, भैरवी और मल्हार शैली एवं अन्य शैलियाँ शामिल हैं. इसके अलावा, विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्ययंत्र जैसे ढोलक और ड्रम, साथ ही मटका, हारमोनियम, डमरू और शहनाई, मंजीरा और नागरा, खंजरी, सारंगी, ताशा और घुंघरु आदि को गायन और नृत्य के दौरान बजाया जाता है.

प्राचीन हरियाणवी संगीत एवं संगीतकार - प्राचीन काल में हरियाणवी लोग कहानी या कथा का रागनी के माध्यम से मंचन करते थे जिसे सांग कहा जाता था. रागनी हरियाणवी संगीत का ही एक स्वरूप है. उस समय साँगी (नाटक का मंचन करने वाला) अपनी कहानी के विभिन्न पात्रों के माध्यम से कहानी को मंच पर इस प्रकार प्रस्तुत करता था कि दर्शक उसके पात्रों में इस हद तक खो जाते थे कि वे पात्रों के साथ ही रोने लगते एवं उनके हंसने पर हंसने लगते थे. कहानी को उस मंच पर किस्सा कहा जाता था. उस समय के किस्से उच्च सामाजिक मूल्यों पर आधारित होते थे जिसके माध्यम से कवि समाज को अच्छाई एवं बुराई से अवगत कराते थे. नाटकों का मंचन बहुत जीवंत होता था. उस समय के किस्से करुण, वीर, वात्सल्य एवं प्रेम रस से ओत-प्रोत हुआ करते थे. उस समय के कवियों का मंचन इतना प्रभावशाली होता था कि लोग इन सांगों को देखने के लिए 50-50 किलोमीटर से पैदल चलकर आया करते थे. हरियाणा के रागनी कवियों में पंडित लखमी चंद, मांगे राम एवं धनपत सिंह इत्यादि सबसे प्रसिद्ध कवि हुए हैं. बुजुर्गों के अनुसार इन कवियों को ब्रह्मज्ञान प्राप्त था. ये कवि मंच पर आने के बाद किसी भी विषय पर तत्समय ही रचना करके किस्सा सुनाते थे. हरियाणवी किस्सों में इन कवियों द्वारा रचित किस्सों में से कुछ प्रसिद्ध किस्से निम्नलिखित हैं जिनकी प्रसिद्धि आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है- गोपी चंद भर्तृहरि, रूप बसंत, सत्यवान- सावित्री, लीलो- चमन, हीर- राँझा, नल -दमयंती, नरसी का भात, ज्यानी- चोर एवं राजा हरीश चंद्र इत्यादि. जो व्यक्ति विरह अग्नि से पीड़ित है उसे हीर- राँझा, जो प्रेम से पीड़ित है उसे लीलो चमन, जो गरीबी से पीड़ित है उसे गोपी चंद, जो पतिव्रता नारी है उसे सत्यवान सावित्री, जिस बहन का भाई नहीं है उसे नरसी का भात एवं जो व्यक्ति चतुर है उसे ज्यानी चोर आदि रचनाएँ पूर्ण रूप से चरितार्थ करने में सक्षम हैं. इस प्रकार ये हरियाणवी किस्से एवं रागनियाँ हरियाणवी साहित्य को समृद्ध बनाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिन पर आज भी कई विश्वविद्यालयों में बड़े बड़े शोधकर्ता शोध कर रहे हैं.

आधुनिक हरियाणवी संगीत एवं संगीतकार - धीरे-धीरे समय के साथ परिवर्तन आया एवं दुनिया आधुनिकता की तरफ बढ़ती चली गईं. हालांकि आज भी इन प्राचीन कृतियों की महत्ता तो उतनी ही बनी हुई है लेकिन विशेषकर युवा पीढ़ी के हमारे बच्चे इन ज्ञानवर्धक किस्सों को छोड़ कर उच्च ध्वनि वाले संगीत से अधिक प्रभावित हो रहे हैं. इसी क्रम में हरियाणा के युवा गायक कलाकार भी युवाओं को आकर्षित करने के लिए आधुनिक म्यूजिक पर आधारित गाने लगातार बना रहें है. वर्तमान में हरियाणवी गाने विशेषकर शादी समारोह इत्यादि में नाचने के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं. शायद ही पूरे भारत वर्ष में कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसने आज तक "हट जा ताऊ पाछे न, नाचन दे जी भरके" गाना न सुना हो और इस पर नृत्य ना किया हो. यह बात मैं दावे के साथ इसलिए भी कह सकता हूँ कि मैंने ये गाना मेरे उन मित्रों से भी सुना जो कि दक्षिण भारत से हैं. हरियाणवी गानों का संगीत (म्यूजिक) श्रोताओं को मस्ती में झूमने के लिए मजबूर कर देता है एवं महफिल में चार चाँद लगा देता है. हाल में हरियाणवी गायक कलाकारों में निम्नलिखित कलाकार बहुत प्रसिद्ध है जिनके गाने यू ट्यूब पर आसानी से ढूंढ कर सुने जा सकते हैं:- सपना चौधरी, एम डी- के ड़ी, गुलजार छानी वाला, अमित सैनी रोहतकिया, राजू पंजाबी, विश्व जीत चौधरी, मासूम शर्मा, दिलेर खरकिया, अमित उचाना, काका हरियाणवी, सुमित गोस्वामी इत्यादि. इन कलाकारों ने हरियाणवी संगीत उद्योग को बहुत से अच्छे-अच्छे गाने दिये हैं जिनमें से कुछ प्रसिद्ध गाने इस प्रकार है- 52 गज का दामण, लीले के पापा, टूम, जूती तिलेदार, कोको, घूँघट, मोटो, सेंडल, सॉरी डार्लिंग, 40 किलो, डी जे ना रोक दिये, फिलिंग, टोरा, यो हरियाणा है प्रधान इत्यादि.

इस प्रकार उच्च नैतिक मूल्यों की प्राप्ति हेतु हमारे पास हरियाणा का प्राचीन संगीत है तो वहीं मनोरंजन के लिए हमारे पास आधुनिक संगीत भी विद्यमान है. हरियाणा के संगीत में यहाँ की मिट्टी की महक है जो श्रोता को भावविभोर कर देती है साथ ही साथ यह यहाँ के मूल्यों का परिचायक है. हरियाणा का संगीत यहाँ की अद्वितीय संस्कृति एवं परंपरा का परिचायक है जो मृदु है व भावों से सराबोर है. यहाँ का संगीत रोते हुए को हँसाता है और दुखी को भी नचाता है. यहाँ के संगीत पर किसी ताऊ या ताई (हरियाणा में बुजुर्ग पुरुष को ताऊ व बुजुर्ग महिला को ताई सम्मान के तौर पर कहा जाता है) को नाचते हुए देखना एक रोमांचक अनुभव है, यहाँ प्रत्येक विपरीत परिस्थिति से उबरने के लिए संगीत मिल जाएगा जो आपके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को दुरुस्त कर देगा और आपकी आभा को बढ़ाएगा.

संजीव कुमार
क्षे.का.हिसार

हरियाणा के प्रसिद्ध लोकनृत्य

भारत त्योहारों का देश है, यहाँ हर समय कोई न कोई उत्सव मनाया जाता है. भारत के प्राय: हर क्षेत्र में विभिन्न उत्सवों पर अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न नृत्य किए जाते हैं, जिन्हें लोक नृत्य के नाम से जाना जाता है.

लोक नृत्य किसी विशेष क्षेत्र के प्रसिद्ध नृत्य होते हैं. सामान्यत: यह उस क्षेत्र की भाषा, संस्कृति और संस्कार को समावेशित कर लेती है. लोक नृत्य शास्त्रीय बंधनों से स्वतंत्र होते हैं.

हरियाणा प्रदेश भारत का वह प्रदेश है जो सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध है तथा विभिन्न कलाओं एवं सांस्कृतिक गौरव को धरण किए हुए है. हरियाणा प्रदेश में विभिन्न संस्कृति के लोग रहते हैं जो अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं. हरियाणा में उत्सव, त्योहार बड़ी धूम धाम से लोक नृत्य के साथ मनाए जाते हैं और एक अनोखे अंदाज में अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं.

हरियाणा के प्रसिद्ध लोकनृत्य निम्नलिखित हैं-

धमाल नृत्य- धमाल नृत्य मुख्य रूप से पुरुषों का नृत्य है. इस नृत्य में मुख्य रूप से बीन, ख़ंजरी, तुम्बे, घडवे, खदताल, ढोलक और बांसुरी आदि यंत्रों का प्रयोग किया जाता है. यह नृत्य हरियाणा के झज्जर और महेंद्रगढ़ जिले में अधिक लोकप्रिय है. इस नृत्य का आयोजन चाँदनी रात में खुले मैदान में किया जाता है. लोगों का मानना हैं कि यह नृत्य महाभारत काल से चला आ रहा है.

मंजीरा नृत्य- इस नृत्य में पुरुष और महिलाएं दोनों ही भाग लेती हैं. यह नृत्य मुख्य रूप से मेवत जिले में आयोजित किया जाता है और इसमें बड़े-बड़े नगाड़ों, डफ और मजीरों का प्रयोग किया जाता है.

सांग नृत्य- सांग नृत्य हरियाणा का वह लोकप्रिय पारंपरिक लोक नृत्य है जो सही मायनों में अपनी संस्कृति को दर्शाता है. इस पारंपरिक लोकनृत्य में क्रास-ड्रेसिंग काफी लोकप्रिय है, कुछ पुरुष प्रतिभागी नृत्य में महिला का हिस्सा बनने के लिए महिलाओं के रूप में तैयार होते हैं. इसमें वीर रस की प्रधानता होती है.

घोड़ी नृत्य- इस नृत्य का आयोजन मुख्य रूप से शादी के समारोह में किया जाता है. यह नृत्य पुरुषों द्वारा किया जाता है. इसमें पुरूष गट्टे और रंगीन कागजों से घोड़े का मुखौटा पहनकर नृत्य करते हैं.

तीज नृत्य- यह नृत्य सावन के महीने में आने वाले तीज त्योहार के अवसर पर स्त्रियों द्वारा किया जाता है. इस त्योहार पर स्त्रियाँ सुंदर - सुंदर कपड़े पहनकर नृत्य व गायन करती हैं और झूला झूलती हैं.

डफ नृत्य - डफ नृत्य का आयोजन सबसे पहले 1969 में गणतन्त्र दिवस समारोह पर किया गया था. यह नृत्य श्रंगार और वीर रस प्रधान होता है. इसे ढोल नृत्य भी कहा जाता है. यह नृत्य बसंत ऋतु के आने पर किया जाता है.

खोडिया नृत्य - यह नृत्य मुख्य रूप से शादी समारोह में किया जाता है. यह नृत्य लड़के के विवाह में बारात के जाने के बाद महिलाओं द्वारा आयोजित किया जाता है.

घूमर नृत्य- हरियाणा का एक अनोखा पारंपरिक लोक नृत्य, घूमर नृत्य राज्य के पश्चिमी हिस्सों में लोकप्रिय है. यह नृत्य होली, गणगौर पूजा, तीज जैसे त्योहारों पर किया जाता है.

झूमर नृत्य- यह नृत्य हरियाणा प्रदेश के लगभग सभी भागों में प्रचलित है. यह नृत्य मुख्य रूप से स्त्रियों द्वारा किया जाता है. इस नृत्य का नाम माथे पर पहनने वाले आभूषण 'झूमर' के नाम पर रखा गया है. इस नृत्य में महिलाएं झूमर के आकार में पंक्ति में खड़ी होकर नृत्य करती हैं. इसलिए इसका नाम 'झूमर नृत्य' पड़ा है. इस नृत्य को 'हरियाणवी गिद्दा' भी कहा जाता है.

लोक नृत्य प्रकृति की अनोखी देन है. प्रकृति का दूसरा नाम ही लोक नृत्य है. जिस तरह लोकगीत बनाए नहीं जाते, अपने आप बनते हैं, उसी तरह लोकनृत्य किसी के द्वारा बनाए नहीं जाते, वे अपने आप बनते हैं. लोकनृत्यों पर किसी व्यक्ति की छाप नहीं होती एवं उसे सारे समाज द्वारा ही बनाया जाता है. यही कारण है कि लोकनृत्य सर्वग्राह्य होते हैं.

दीपिका लाठर
क्षे.का. करनाल

विश्व आकाश में हिन्दी की उड़ान

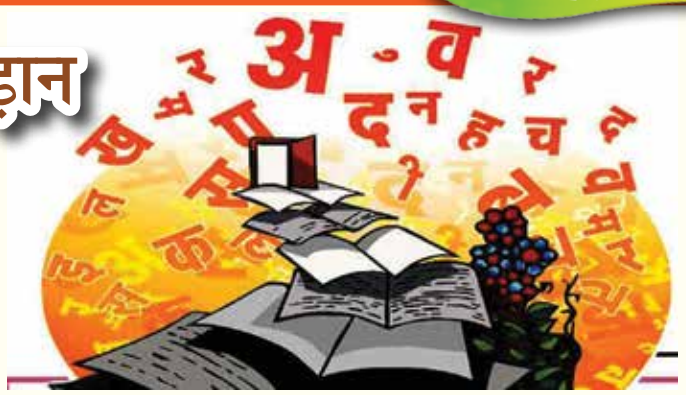

किसी भी भाषा का संबंध उस देश की सांस्कृतिक विरासत से होता है. भारतीय संस्कृतियों और मूल्यों को अपने में समाहित करते हुए राजभाषा हिंदी भारत का विश्व में प्रतिनिधित्व कर रही है. 'वसुधैव कुटुंबकम्' की पवित्र भावना के साथ यह हमारी राष्ट्रीय एकता एवं चेतना की संवाहिका भी है. सरलता, सौहाद्रता, एवं सहज समन्वय गुण के कारण हिंदी देश ही नहीं अपितु विश्व के अन्य देशों में भी संपर्क भाषा का दायित्व निभा रही है. भारतीय संस्कृति, समाज और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण हिंदी के माध्यम से हो रहा है. हिंदी, भाषा, लिपि, बोलने वालों की संख्या समृद्ध साहित्य की दृष्टि से विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है. हिंदी की शब्द संपदा विपुल है, इसमें साहित्य सृजन की परंपराएं लगभग 1200 वर्ष प्राचीन है. हिंदी साहित्य का श्रेष्ठ सृजन विश्व के अनेक भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से कई देशों तक पहुंच रहा है. आज विदेशों में लिखने वाले लेखकों कवियों और साहित्यकारों की संख्या बढ़ी है, कई हिंदी संस्थाएं भी वहां बहुत अच्छा कार्य कर रही है. भारत की अन्य भाषाओं के साथ हिंदी का शताब्दियों से घनिष्ठ संपर्क रहा है. ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, बुंदेली, बघेली, छत्तीसगढ़ी जैसी कई उपजन भाषाओं के शब्द लोकोक्तियां, मुहावरे हिंदी में रच बस गए हैं. हिंदी में भारतीय भाषाओं के शब्द ही नहीं आए बल्कि इसका फैलाव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अप्रवासियों, विदेशियों की बोली में देखा जा सकता है. अनेक भाषाओं के शब्द ग्रहित होकर हिन्दीमय हो गए हैं. यही कारण है कि आज हिंदी का शब्दकोश विश्व का सबसे बड़ा भाषिक शब्दकोश है.

जहां-जहां भारतीय, रोजी रोटी के लिए गए, वह अपने साथ अपनी भाषा अपनी संस्कृति साथ लेकर गए. मारीशस, फिजी, सूरीनाम, गयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो में बड़ी संख्या में आज भी अप्रवासी भारतीय हैं जो सैकड़ों वर्ष पहले जाकर बस गए. वे वहां की आबादी के 40% से अधिक की संख्या में हैं. ये हिंदी बोलते-समझते और पढ़ते-लिखते हैं. भारत के पड़ोसी देश विशेषकर पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और बर्मा में हिंदी समझने, बोलने वालों की अच्छी खासी संख्या है, इन देशों के लोगों के साथ भारतीय हिंदी में बात करते हैं. अमेरिका, यूरोप एवं खाड़ी देशों में, प्रशिक्षित से लेकर मजदूर वर्ग तक में कुशल, अकुशल श्रमिक निरंतर रोजगार की तलाश में जाते हैं विशेषकर खाड़ी देशों में जाने वाले लोगों की एक ऐसी संख्या है जो आपस में या अन्य देशों के नागरिकों के साथ हिंदी या अपनी भाषा में ही संवाद करते हैं जिससे इन देशों में हिंदी की लोकप्रियता अनिवार्य आवश्यकता बन गई है. उर्दू प्रयुक्त फारसी और तुर्की की शब्दावली को हिंदी ने सहज रूप से ग्राहय बनाया है. मारीशस में फ्रेंच के बाद हिंदी एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त भाषा है जिसमें पत्र-पत्रिकाओं तथा साहित्य का प्रकाशन होता है, हिंदी के सैकड़ों शब्द मारीशस की भाषा में है. मालदीव की भाषा दिवेही भारोपीय परिवार की भाषा है जो हिंदी से मिलती-जुलती भाषा है. फिजी, सुरीनाम की तीन राजभाषाओं में भी हिंदी है. त्रिनिदाद की भाषा में भी बहुत से हिंदी के शब्द सम्मिलित हो गए हैं. संयुक्त अरब अमीरात में रेडियो के कम से कम तीन ऐसे चैनल है, जहां आप 24 घंटे नए अथवा पुराने हिंदी फिल्मों के गीत सुन सकते हैं. न्यूजीलैंड में भारतीय मूल के लोगों ने हिंदी कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए अपना दूरदर्शन और आकाशवाणी केंद्र स्थापित किया है. सिंगापुर, फ्रांस, इटली, स्वीडन, ऑस्ट्रिया, नॉर्वे, डेनमार्क, स्वीटजरलैंड, जर्मन, रोमानिया, बलगारिया, हंगरी, जापान, एवं चीन के विश्वविद्यालय में हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था है. प्रशांत महासागर के द्वीप देश-फिजी में हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया है. नेपाल, मारीशस, त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम जैसे देशों में भी हिंदी प्रमुखता से बोली जाती है. विश्व के लगभग 180 विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थाओं में हिंदी का शिक्षण प्रशिक्षण चल रहा है. देश विदेशों में दुनिया भर के हजारों विद्यार्थी हिंदी का अध्ययन किसी न किसी रूप में कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, जर्मनी, पोलैंड, रूस ऑस्ट्रेलिया, कनाडा जैसे दूसरे देशों के लिए आज हिंदी बाजार की जरूरत बनकर उभरी है.

हिंदी सिनेमा की लोकप्रियता आज देश-विदेश में बढ़ती जा रही है हिंदी फिल्मों का अनुवाद दुनिया की सभी प्रमुख भाषाओं में किया जा रहा है. फिल्मों, टीवी धारावाहिकों का एक बड़ा दर्शक वर्ग विदेशों में भी है. हॉलीवुड की फिल्मों में भी हिंदी शब्दों का प्रयोग हो रहा है. ऑस्कर से सम्मानित फिल्म 'अवतार' एक हिंदी शब्द ही था. साहित्यिक भाषा से निकलकर हिंदी का स्वरूप काफी आगे निकल चुका है. यह कहानी, कविता, चुटकुलों की भाषा ना होकर विश्व की प्रमुख भाषाओं के बीच अपनी लोकप्रियता को आज सिद्ध कर चुकी है. आज सभी सरकारी संस्थान हिंदी को संवैधानिक कर्तव्य के द्वारा अपना रहे हैं. जनभाषा के रूप में लोकप्रिय होने के कारण निजी क्षेत्र भी इसे अपना रहे हैं. अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत में व्यापार करने के लिए भारत की भाषा की जानकारी होना आवश्यक है. रोजगार के साधनों की तलाश तथा बाजार के दबाव ने विश्व को हिंदी सीखने के लिए विवश किया है. हिंदी भाषी राज्यों में शहरी बाजार के साथ-साथ ग्रामीण बाजार क्षेत्र में आने से विज्ञापन हिंदी में करना आज कई विदेशी कंपनियों के लिए आवश्यक हो चुका है. भारत में हिंदी के बाजार को देखते हुए कोका कोला, पेप्सी जैसी कई विदेशी कंपनियां आज विज्ञापन

हिंदी में कर अपना ग्राहक बेस बढ़ा कर अपनी पहुंच बढ़ा चुकी है. इंटरनेट और मोबाइल के क्षेत्र में आई क्रांति से आज हर हाथ में एक तकनीकी डिवाइस मौजूद है और उसमें हमारी भाषा भी है. आज देश की ग्रामीण और आदिवासी आबादी भी संचार माध्यम से जुड़ चुकी है. हिंदी में संदेश भेजना, हिंदी की सामग्री को पढ़ना - सुनना या देखना लगभग उतना ही आसान हो चुका है, जितना अंग्रेजी सामग्री को! विशाल आबादी वाले भारत के इस बाजार तक पहुँच बनाने के लिए कई देशी विदेशी कंपनियां लालायित है. आज हिंदी में गूगल के माध्यम से अधिक से अधिक सामग्री सर्च की जा रही है. हिंदी में सामग्री उपलब्ध करवाने का दबाव सभी प्रमुख सर्च इंजनों पर भी है. आज अधिकांश इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा अधिकांश वेबसाइटों पर हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है. इस समय दुनिया की दिग्गज कंपनियां गूगल, फेसबुक, माइक्रोसॉफ्ट, एप्पल आदि हिंदी को अपनाने पर जोर दे रही है

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति है. भारतीय संस्कृति न केवल प्राचीनता का प्रमाण है, अपितु वह भारतीय अध्यात्म और चिन्तन की भी श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है. भारत की मूल आस्था, वैश्विक शांति, समानता के कारण भारत के साथ हिंदी ने भी अपनी पहचान बनाई है. ज्ञान, योग, गीत, संगीत, कला, साहित्य के क्षेत्र में भारत में बहुत कुछ है जिसे विश्व जानना, समझना चाहता है. विभिन्न भाषा-भाषी, खान पान, संस्कृति, धर्म, आस्था, विश्वास वाले इस देश के जीवन मूल्यों को समझने के लिए कई पर्यटक यहां आते हैं. इनमें से कई संपर्क भाषा के रूप में हिंदी सीखते हैं या हिंदी के प्रति रुचि रखते हैं. अमेरिका में जो सेकंड जनरेशन और थर्ड जनरेशन के इंडियन हैं, उन्हें अपने देश से संबंध बनाए रखने के लिए हेरिटेज लैंग्वेज के रूप में हिंदी सीखने की जरूरत पड़ रही है. इस प्रकार विश्व में भारत के प्रति सकारात्मक रुख हिंदी के लिए वरदान साबित हुआ है.

किसी भी राष्ट्र की भाषाएं स्वत: महत्वपूर्ण बन जाती है जब विश्व बिरादरी में उसे अधिक महत्व और स्वीकृति दी जाती है. भारत की बढ़ती हुई शक्ति के साथ हिंदी का वर्चस्व और संख्या बल भी वैश्विक धरातल पर निरंतर बढ़ रहा है. विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन और अन्य अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के माध्यम से हिंदी की लोकप्रियता को बढ़ावा मिला है. प्रवासी भारतीय दिवस द्वारा विश्व भर में रहने वाले प्रवासियों एवं आगामी पीढ़ी को भी भाषा, संस्कृति से जोड़कर हिंदी का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है. विश्व हिंदी सचिवालय, संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए कार्यरत है. वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक छ: भाषाएँ अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनिश, रूसी, चीनी और अरबी है. बोलने वालों की संख्या के आधार पर इनमें से फ्रेंच, स्पेनिश, रूसी और अरबी हिंदी के आसपास भी नहीं है. संयुक्त राष्ट्र ने 2018 से ही हिंदी में ट्विटर अकाउंट और न्यूज पोर्टल शुरू किया हुआ है. हर सप्ताह संयुक्त राष्ट्र का एक हिंदी ऑडियो बुलेटिन जारी होता है. इन सभी प्रयासों का उद्देश्य हिंदी भाषा में संयुक्त राष्ट्र की लोगों तक पहुँच को बढ़ाना तथा लाखों हिंदी भाषियों के बीच वैश्विक विषयों के बारे में जागरूकता फैलाना है. हाल ही में 10 जून 2022 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में बहुभाषावाद संबंधी एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुआ है. इस प्रस्ताव में कहा गया है कि संयुक्त राष्ट्र के सभी जरूरी कामकाज और सूचनाओं को इसकी आधिकारिक भाषाओं के अलावा दूसरी भाषाओं जैसे हिंदी में भी जारी किया जाए. यह संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा को शामिल करने के लिए भारत द्वारा काफी सालों से किए जा रहे प्रयासों में एक बड़ी सफलता है. श्री टी. एस. त्रिमूर्ति, संयुक्त राष्ट्र में भारत के प्रतिनिधि ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र के इस बहुभाषावाद प्रस्ताव में पहली बार हिंदी का जिक्र है. इसके साथ-साथ उर्दू और बांग्ला भाषा का भी जिक्र है. हिंदी जैसी दूसरी भाषाओं में जानकारी की अहमियत को समझाते हुए उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्य तब तक पूरे नहीं होंगे जब तक दुनिया के लोगों को इसकी पूरी जानकारी ना हो. संयुक्त राष्ट्र की वेबसाइट और इसके इंटरनेट मीडिया खातों के माध्यम से हिंदी में संयुक्त राष्ट्र के समाचार पहले से ही प्रसारित किए जा रहे हैं. भारत संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग के साथ साझेदारी कर दुनिया भर में हिंदी भाषी लोगों को जोड़ने का कार्य कर रहा है. जहां तक हिंदी की स्वीकृति का प्रश्न है तो संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी अबू धाबी ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अरबी और अंग्रेजी के बाद हिंदी को अपनी अदालतों में तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल कर लिया है. हिंदी को अदालत की तीसरी आधिकारिक भाषा का दर्जा मिलना दुनिया भर में हिंदी को मिल रहे सम्मान की एक और मिसाल है.

आज चीन की आबादी भले ही हम से अधिक है किंतु उसकी चित्रात्मक लिपि उसे विश्व भाषा बनने से रोकती है, चीन का अपने नागरिकों पर अपनी भाषा और लिपि को अपनाने का दबाव भी है इस वजह से चीनी भाषा दुनिया की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है.

चाहे अमेरिकी चुनाव हो या लंदन के मेयर का चुनाव या भारत देश के खास से आम चुनाव, सभी में विजयी पक्ष की जीत में हिंदी का भी योगदान है. यह सब बाजार के कारण नहीं, बल्कि हिंदी की अपनी ताकत का कमाल है. भारत की बढ़ती हुई शक्ति के साथ हिंदी का वर्चस्व और संख्या बल भी वैश्विक धरातल पर निरंतर बढ़ रहा है हिंदी को केवल एक भाषा ना समझा जाए. यह हिंदुस्तान की संस्कृति है और अपनी संस्कृति का प्रचार प्रसार करना यही सच्ची निष्ठा है. नि:संदेह हिंदी कल विश्व की महत्वपूर्ण संपर्क भाषा रूप में स्थापित होकर आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भाषा भी बनेगी.

राजेश जोशी
के. का. मुंबई

हरियाणा के दर्शनीय स्थल

भौगोलिक रूप से हरियाणा की सीमाएं उत्तर में पंजाब और हिमाचल एवं दक्षिण एवं पश्चिम में राजस्थान से जुड़ी हैं. वर्तमान में हरियाणा में कुल 22 जिले हैं. ये सभी जिले अपनी किसी न किसी विशेषता के कारण प्रसिद्ध हैं. हरियाणा में पर्यटन हेतु भी बहुत से स्थान उपलब्ध हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:-

ढोसी की पहाड़ी - ढोसी की पहाड़ियाँ हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले में स्थित हैं जिसे हरियाणा सरकार द्वारा एक पर्यटन स्थान के रूप में विकसित किया गया है. ये पहाड़ियाँ अरावली पर्वत की शाखाएँ हैं. इन पहाड़ियों के विषय में यह दंतकथा भी प्रचलित है कि लगभग 5000 वर्ष पूर्व पांडव भी अपने अज्ञातवास के दौरान इस पहाड़ी पर रहे थे. इन पहाड़ियों पर अनेक प्रकार की जीवन दायिनी जड़ी बूटियाँ भी विद्यमान हैं.

राजा नाहर सिंह महल - राजा नाहर सिंह महल हरियाणा के फरीदाबाद जिले में स्थित है जिसे बल्लभ गढ़ का किला भी कहा जाता है. राजा नाहर सिंह एक बहुत ही बहादुर राजा था. इस किले का निर्माण राजा नाहर सिंह के पिता श्री राजा राव बलराम द्वारा करवाया गया था. वर्तमान में इस किले को एक सुंदर पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है जहां हर रोज सैकड़ों सैलानी घूमने के लिए आते हैं.

दमदमा झील - दमदमा झील हरियाणा के गुरुग्राम में स्थित है. इस झील का निर्माण अंग्रेजों ने वर्षा के जल का संग्रहण करने के लिए किया था. दमदमा क्षेत्र अरावली की तलहटी में होने के कारण यहाँ बरसात का बहुत सा पानी एकत्रित हो जाया करता था जो बाद में गंदा होने के कारण बदबूदार हो जाता था एवं बीमारी फैलाने का कारण बनता था. अंग्रेज़ अधिकारियों ने इसे पानी संग्रहण केंद्र बनाने का निर्णय लिया एवं इस क्षेत्र का नवीनीकरण कर इस पानी को साफ रखने हेतु इसे एक झील का रूप दे दिया गया. वर्तमान में मानसून के दौरान इस झील में बहुत अधिक मात्रा में जल एकत्रित हो जाता है, जिसमें सैलानी नौका विहार का आनंद लेते हैं.

पिंजौर गार्डन - पिंजौर गार्डन हरियाणा के पंचकुला में स्थित है. इस गार्डन का निर्माण मुगल काल में किया गया था. अत: इसमें मुगल कालीन वास्तु कला अलग ही झलकती है. इस बाग के बीच में झरने भी बहते हैं जो इसे और अधिक आकर्षित बनाते हैं. इस बाग में तीन महल यथा- शीश महल, रंग महल और जल महल बनाए गए हैं जो कि आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं. इस बाग में फूलों की इतनी किस्में हैं जो आपको अन्यत्र एक स्थान पर पाना असंभव है. इसलिए यहाँ देश - विदेश से अनेक सैलानी घूमने के लिए आते हैं.

मोरनी हिल्स - मोरनी हिल्स हरियाणा के पंचकुला में स्थित है जो कि पंचकुला शहर से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर शिमला मार्ग पर स्थित है. किसी समय मोरनी नाम की रानी ने इस जगह पर शासन किया था, जिस कारण इसका नाम मोरनी पड़ा. यह पहाड़ी शिवालिक पहाड़ियों की ही एक शाखा है, जहां एक किला भी बनाया गया है, जिसे हरियाणा सरकार द्वारा एक पर्यटन स्थान के रूप में विकसित किया गया है. यहाँ पर स्थित झीलें सैलानियों को सर्वाधिक आकर्षित करती हैं. यदि आप यहाँ कुछ समय बिताते हैं तो यह आपके लिए सुखद अहसास की अनुभूति होगी.

रजत कुमार नन्दा
क्षे.का.हिसार

भारत का ओलंपियन राज्य हरियाणा

अपने ऑलिंपिक इतिहास में भारत के 30 प्रतिशत से अधिक व्यक्तिगत पदक हरियाणा के खिलाड़ियों ने हासिल किए हैं. यहाँ बताया गया है कि कैसे भारत की खेल कहानी भारत के ओलंपियन राज्य - हरियाणा द्वारा हमेशा बताई गई है.

भारत की खेल कहानी हरियाणा एक ऐसा राज्य है जो भारत की आबादी का सिर्फ 2.09 प्रतिशत है, लेकिन अब तक ऑलिंपिक में व्यक्तिगत खेलों में 8 पदक जीत चुका है. यह रेखांकित करना महत्वपूर्ण है कि भारत ने अब तक खेलों में व्यक्तिगत ओलंपिक में केवल 24 पदक जीते हैं और हरियाणा ने उसमें 8 का योगदान दिया है. यह न केवल देश के लिए बल्कि एक ऐसे राज्य के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसका भारत भर के राज्यों के साहित्यिक या सांस्कृतिक योगदान के संदर्भ में शायद ही कभी उल्लेख किया गया हो.

सबसे आगे हरियाणा : खेलों में इसी प्रदेश का परचम, सबसे ज्यादा खिलाड़ी और पदक यहीं से, खेल के क्षेत्र में हरियाणा का मुक़ाबला करने वाला देश में कोई और राज्य नहीं है. हर खेल में यहाँ के खिलाड़ी कमाल कर रहे हैं. इसकी वजह यहाँ की खेल नीति है. सरकार खिलाड़ियों को स्कूल स्तर से ही निखारने लगती है. उन्हें हर सुविधा देती है और इनामों की बारिश करती है. यही वजह है कि यहां खेलों को प्रोत्साहन मिलता है.

दो फीसदी आबादी, 25 फीसदी खेलों में हिस्सेदारी : हरियाणा में कुश्ती, मुक्केबाज़ी, हॉकी व कबड्डी के बाद अब निशानेबाजी, टेनिस, एथलेटिक्स के खिलाड़ियों की पौध तैयार की जा रही है. देश की कुल आबादी में हरियाणा की हिस्सेदारी महज दो फीसदी है. टोक्यो ऑलिंपिक में हरियाणा के 31 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया. यह देश से टोक्यो पहुँचने वाले कुल खिलाड़ियों का 25 फीसदी हिस्सा है.

सबसे ज्यादा पदक भी यहीं से : हरियाणा के तीन खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने स्वर्ण, रवि दहिया ने रजत और बजरंग पुनिया ने कांस्य पदक जीता. हॉकी के कांस्य में भी हरियाणा की हिस्सेदारी है. इस तरह टोक्यो ओलंपिक में भारत की झोली में आए कुल पदक में से 50 फीसदी हरियाणा के खिलाड़ियों ने जीते है. हरियाणा में खिलाड़ियों के लिए सुविधाएं काफी अच्छी हैं और यही कारण है कि यहां सबसे ज्यादा खिलाड़ी तैयार होते हैं. कॉमनवेल्थ, एशियन व ओलंपिक गेम्स में हरियाणा के सबसे ज्यादा पदक होते हैं. यह सरकार की खेल नीति का असर है.

नर्सरी से लेकर स्टेडियम व कॉम्प्लेक्स का निर्माण : हरियाणा में करीब 440 खेल नर्सरियाँ स्थापित हैं, उनमें से करीब 400 चल रही हैं. यहां एक ही जगह पर हर तरह की खेल कि सुविधाएं मिलती हैं. राज्य में 232 मिनी स्टेडियम 21 जिला स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स और दो प्रदेश स्तरीय स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स हैं. ये अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कॉम्प्लेक्स हैं, यहां 350 से ज्यादा लोग तैनात हैं. इसके साथ ही सबसे ज्यादा 22 सेंटर प्रदेश में हैं और उत्तर क्षेत्र का सेंटर भी यहां हैं.

खिलाड़ियों पर होती है इनामों की बारिश : देश में हरियाणा ऐसा राज्य है, जहां स्कूल स्तर तक मेडल जीतने पर सरकार इनामी राशि देती है. नेशनल स्कूल गेम्स व खेलों इंडिया के पदक विजेताओं को 20-50 हजार, सैफ जूनियर के पदक विजेताओं को 50 हजार से डेढ़ लाख तक, सैफ गेम्स में पदक जीतने पर 2-5 लाख, एशियन चैंपियनशिप के पदक विजेताओं को 3-5 लाख, कॉमनवेल्थ के पदक विजेताओं को 50 लाख से डेढ़ करोड़ का इनाम दिया जाता है. इसके अलावा एशियन गेम्स के पदक विजेताओं को 75 लाख से तीन करोड़, ओलंपिक में पदक जीतने पर 2-5 करोड़ से छह करोड़ का इनाम मिलता है. इसके अलावा ओलंपिक की तैयारी के लिए खिलाड़ियों को 5 लाख रूपये दिए जाते हैं.

पेरिस ओलंपिक की तैयारी शुरू : हरियाणा सरकार ने टोक्यो ओलंपिक खत्म होते ही पेरिस ओलंपिक की तैयारियां शुरू कर दी है. सरकार का पूरा ध्यान पेरिस ओलंपिक में और पदक जीत कर हरियाणा का दबदबा कायम रखना है. यही वजह है कि हरियाणा में सरकार 200 नए कोच के अलावा डाइट विशेषज्ञ भर्ती करेगी. खेल नर्सरियों कि संख्या बढ़ाकर लगभग 1000 की जाएगी. नए स्टेडियम, सिंथेटिक ट्रैक, एस्ट्रो टर्फ मैदान बनाए जाएंगे. ट्रेक एंड फील्ड खेलों पर ज्यादा ध्यान रहेगा. प्रदेश में चार पुनर्वास व उपचार केंद्र बनाने की तैयारी है. इससे खिलाड़ी राज्य में ही चोट से छुटकारा पाकर दोबारा अपना खेल शुरू कर सकेंगे.

टोक्यो ओलंपिक खेलने वालीं महिला खिलाड़ी : हरियाणा से कुश्ती में वीनेश फोगाट, अंशु मालिक, सोनम मालिक, सीमा, शूटिंग में यशस्विनी, मनु भाकर, बॉक्सिंग में पूजा, हॉकी में रानी रामपाल, सविता पुनिया, मोनिका मालिक, नवजौत कौर, नवनीत कौर, नेहा गोयल, निशा, शर्मिला, उदिता, सीमा आंतिल ने टोक्यो ओलंपिक खेला.

ओलंपिक खेलने वाले पुरुष खिलाड़ी : कुश्ती में बजरंग पुनिया, दीपक पुनिया, रवि दहिया, हॉकी में सुमित, सुरेन्द्र कुमार, बॉक्सिंग में अमित पंघाल, विकास कृष्ण, मनीष, शूटिंग में अभिषेक, संजीव राजपूत, एथलेटिक्स में नीरज चौपड़ा, संदीप, राहुल, सुमित नागल ने टोक्यो ओलंपिक में जगह बनाई.

कुलदीप तिवारी
पानीपत शाखा, करनाल

डॉ. ज्ञानी देवी

साहित्य से सामाजिक जागरुकता का सफर

डॉ. ज्ञानी देवी, लगभग तीस वर्ष तक गवर्नमेंट कॉलेज में अध्यापन के बाद अब प्रिंसिपल पद से सेवानिवृत्त हुई हैं. 20 पुस्तकों की रचयिता, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला से सर्वश्रेष्ठ महिला रचनाकार के सम्मान से सम्मानित इस लेखिका की कई कृतियाँ श्रेष्ठ कृति पुरस्कार से पुरस्कृत हैं. आप पूर्व अध्यक्ष, हरियाणा विधान सभा स्वर्गीय चौधरी ईश्वर सिंह जी के हाथों क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संघर्षशील, जुझारू व्यक्तित्व एवं राजकीय महविद्यालय में पहली प्रोफेसर चुने जाने पर सम्मानित, समाज सेवा के लिए सर्वश्रेष्ठ समाजसेवा अवार्ड से सम्मानित एवं आपको साहित्यिक योगदान व समाजसेवा के लिए डी.लिट. की मानद उपाधि से भी विभूषित किया गया है. देश के विभिन्न राज्यों के विश्वविद्यालयों से उनकी पुस्तकों पर अब तक छः एम.फिल. एवं पीएचडी की डिग्रियाँ सम्पन्न हो चुकी हैं. उनकी कहानी (मैं द्रौपदी नहीं हूँ) पर बना लघु नाटक ब्लॉक लेवल पर पुरस्कृत हुआ है और कई लघुकथाओं पर वीडियो फिल्में बनाई गई हैं. देश के विभिन्न राज्यों की सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं से उन्हें लगभग दर्जन पुरस्कारों से नवाजा गया है. ऑल इंडिया रेडियो, रोहतक व कुरुक्षेत्र से आपकी वार्ताएं, चर्चा-परिचर्चा, काव्यपाठ, कहानियां एवं बालकुंज के लिए ज्ञानवर्धक प्रेरक सामग्री निरंतर प्रसारित होती रहती हैं. आपके शोधपत्र, लेख-आलेख, कविताएं, कहानियाँ विभिन्न राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पत्र, पत्रिकाओं में छपते रहते हैं.

प्रश्नः उस समय जब शिक्षा की इतनी सुविधाएं नहीं थी, आपने इतनी पढ़ाई कैसे की?

उस समय जब शिक्षा बहुत सुलभ नहीं थी, मेरे पिताजी पढ़ाई तथा शिक्षा को लेकर अधिक जागरूक थे और उन्होंने मुझे प्रेरित किया कि मुझे शिक्षा पूर्ण करनी चाहिए. मैं अपने परिवार में बड़ी लड़की हूँ. मेरे गाँव में स्कूल भी नहीं था लेकिन मेरे पिताजी मुझे दूसरे गाँव के स्कूल में छोड़कर आया करते थे.

प्रश्नः उस वक्त की लड़कियों की पढ़ाई-लिखाई के बारे में बताइए?

हमारे गाँव में स्कूल नहीं था. दूसरे गाँव में मेरे चाचा जी स्कूल जाते थे. उन्हें देखकर मेरा भी मन स्कूल जाने को करता था. मैं रोती थी कि मुझे स्कूल जाना है. तब उनके साथ मुझे भी स्कूल भेजने लगे, यह सोचकर कि इतनी दूर पैदल चलना पड़ेगा तो थककर खुद ही वापस आ जाएगी. लेकिन मेरी हमेशा पढ़ाई में रुचि रही. मैं स्कूल जाती रही. इस प्रकार मुझे पाँचवी कक्षा में छात्रवृत्ति भी मिली. लेकिन आगे की पढ़ाई के लिए वहाँ अन्य कोई स्कूल नहीं था. प्राथमिक स्तर तक का स्कूल एक गाँव में जबकि माध्यमिक शिक्षा स्तर का स्कूल दूसरे गाँव में था.

प्रश्नः आपको पढ़ाने के बारे में आपके पिताजी के दिमाग में कैसे आया?

हम कुल 5 भाई-बहन हैं जिसमें मैं अकेली लड़की हूँ. मैं रोड समुदाय (खत्री) के साधारण किसान परिवार से संबंध रखती हूँ. हमारे गाँव में एक पटवारी थे. उन्हें बच्चों को राख़ पर उंगली से पढ़ाने का शौक़ था. मेरे पिताजी को वह बहुत अच्छा लगता था. वैसे मेरे पिताजी को भी पढ़ाई में रुचि थी लेकिन स्कूल नहीं था तथा मेरी दादी की मृत्यु के पश्चात् उन्हें ही घर का सारा काम-काज देखना पड़ता था. दादा जी स्वयं खेतीबाड़ी करके मेरे पिताजी को संभालते थे. मेरे पिताजी ने तबसे यह ठान लिया था कि मैं अपने बच्चों को जरूर पढ़ाऊंगा. लेकिन आसपास के गावों में माध्यमिक स्तर का स्कूल नहीं था. दूर के गाँव में दाखिला हुआ तो मैंने वहां मन लगाकर पढ़ाई की. अध्यापकों ने भी मेरे पिताजी से कहा कि इस बच्ची को पढ़ाई के लिए रोकना नहीं.

प्रश्नः आपको लिखने की प्रेरणा कैसे मिली?

मैं ग्रामीण परिवेश से जुड़ी हूँ और मैंने पढ़ाई जारी रखने के लिए संघर्ष भी किया है. मुझे अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए एक गाँव से दूसरे गाँव जाना पड़ा. मैंने गाँव में महिलाओं की स्थिति भी देखी. उन पर

होते हुए अत्याचार भी देखे और प्रोत्साहन भी देखा. मेरी हमेशा से इच्छा रही कि जो मैंने देखा महसूस किया उन्हें शब्दों में ढाला जाए ताकि पूरे समाज को भी पता चल सके कि एक महिला को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है, सामाजिक परिवेश किस तरह से बदलता है.

प्रश्नः आपके लेखन के प्रति आपके परिवार की क्या प्रतिक्रिया है?

मेरे परिवार में सभी पढे लिखे हैं. शिक्षा का महत्व उन्हें बखूबी मालूम है. मेरे पति ने समाज के प्रति मेरी विपरीत मानसिकता एवं शिक्षा के कारण ही मुझसे शादी की और शिक्षा पूरी करने में मदद भी की. मेरे परिवार का मुझे सदैव सहयोग रहा है. हमारा भावनात्मक और विचारात्मक जुड़ाव बहुत अच्छा है. मर्यादा में रहकर अपनी बात कहने में मुझे मेरे परिवार की तरफ से पूर्ण सहयोग मिलता है. यही कारण है कि आज अनेक संस्थाओं द्वारा मुझे सम्मानित किया जाता है, नयी योजनाओं या नयी बातों में मुझसे सलाह ली जाती है, मुझे कुछ नया करने के लिए नामित किया जाता है. यूं तो मैं इस स्थिति से खुश हूँ लेकिन अब भी काफी कुछ करना शेष है, जिसका मुझे एहसास भी है.

प्रश्नः उस समय के परिवेश में आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के दौरान किन कठिनाइयों का सामना किया?

यह वो दौर था जब महिलाओं को पढ़ाया नहीं जाता था. बड़ी मुश्किल से मेरा दाखिला तो हो गया लेकिन मुझे बिना बताए छठी कक्षा में मेरी सगाई कर दी गई और कहा गया कि आठवीं होते ही शादी कर दी जाएगी. मैंने मेरी शादी का विरोध किया. खाना-पीना छोड़कर अपने आपको कमरे में बंद कर लिया. मेरे दादाजी मुझसे बहुत प्यार करते थे. उन्होंने मेरी जिद पर मेरी शादी न करने का आश्वासन दिया और कमरे का दरवाजा खुलवा लिया.

लेकिन जिस लड़के से मेरी शादी तय हुई थी उसने व उसके परिवार वालों ने हमारे गाँव की पंचायत में कहा कि यह हमारी इज्जत का सवाल है. यदि इस लड़की के साथ हमारे लड़के की शादी नहीं हुई तो समाज में हमारी बहुत बदनामी होगी और कोई माता-पिता अपनी लड़की के साथ हमारे लड़के की शादी नहीं करवाएगा. लेकिन मेरी जिद और मेरे दादाजी की विनती के बाद पंचायत ने शादी न कराने का फैसला लिया. तब दादाजी ने मुझसे कहा कि 'तुम खूब पढ़ाई करो लेकिन मेरी पगड़ी/इज्जत की लाज रखना. कोई ऐसा काम न करना जिससे समाज में मेरी इज्जत खराब हो.' मैंने भी उनकी बातों का मान रखा और दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की. दादाजी को यह नहीं पता था कि दसवीं के बाद भी पढ़ाई होती है. मैंने दादाजी से कहा कि मुझे कॉलेज में दाखिला लेकर पढ़ाई करनी है. वैसे उस समय लोगों की मानसिक स्थिति अलग थी. उनका मानना था कि जो बच्चा कॉ लेज में दाखिला लेगा वो बिगड़ जाएगा. मेरे दादाजी ने मुझसे कहा कि आसपास कोई कॉलेज नहीं है और कॉलेज में जाने वाले बच्चे तो बिगड़ जाते हैं. फिर भी मेरी जिद तथा मुझ पर भरोसा करके मेरा दाखिला आईजी (गर्ल्स) कॉलेज, कैथल में करवा दिया गया. कुल मिला कर कहें तो विपरीत सामाजिक मानसिकताओं में रहकर भी मुझे परिवार का पूर्ण सहयोग मिला और शायद इसी का परिणाम है कि आज आप मेरा साक्षात्कार कर रहे हैं.

प्रश्नः आप अब शादी-शुदा हैं. आपकी यहाँ तक की यात्रा के बारे में बताइए?

जैसा कि मैंने बताया कि मेरी जिद तथा मुझ पर भरोसा करके मेरा दाखिला आईजी (गर्ल्स) कॉलेज, कैथल में करवा दिया गया. लेकिन इसी के साथ मेरी दोबारा सगाई कर दी गई. मेरे होने वाले पति मुझे बहुत अच्छे मिले और उन्होंने मुझसे कहा कि आपका जितना मन करता है उतना पढ़िए और जब शादी करनी हो तब शादी करना, मेरी तरफ से पूरा सहयोग रहेगा. इस बात से खुश होकर मैंने एम.ए. प्रथम वर्ष में शादी की. मेरे पति निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं और पढ़े-लिखे परिवार से संबंध रखते हैं. उनके सहयोग से मैंने एम.ए. की परीक्षा पास की. फिर पीएचडी के बाद डी.लिट. की उपाधि ग्रहण की. मेरे पति के सहयोग के लिए यदि मुझे एक लाईन में कहना पड़े तो मैं यही कहूँगी कि "जहां मेरे दादाजी, माता-पिता ने जहां मुझे उड़ने के लिए पंख दिये वहीं मेरे पति ने मुझे खुला आसमान दिया." मैं अपने आपको भाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे ऐसे पति मिले.

प्रश्नः आपके इस चुनौतीपूर्ण सफर में आपके ससुराल वालों ने कितना साथ दिया?

ससुराल में सभी की मानसिकता थी कि बहू पढ़ी-लिखी है तो घर का काम नहीं करेगी, खाना नहीं बनाएगी. यदि मैं कोई साधारण सी

बात भी कहती तो मानसिकता के आधार पर यही सोचा जाता था कि मेरे पढ़े-लिखे होने के कारण मैं ऐसी बातें कर रही हूँ. शादी के बाद मेरे माता-पिता ने साफ कह दिया कि जैसे तुम्हारा पति कहे, ससुराल वाले कहें वैसा ही करना है. पूरे गाँव में सोनीपत व हिसार में मुझ सहित सिर्फ तीन लड़कियां ही पढ़ी-लिखी थी. शादी के बाद मेरी जिम्मेदारियाँ बढ़ गई थी. अब मुझे मेरे माता-पिता के साथ ससुराल का मान-सम्मान भी रखना था. दैनंदिन कार्यों में यदि मेरे द्वारा स्वाभाविक रूप से कोई बात जैसे कि चूल्हे पर रोटी बनाना है तो उसकी पूरे गाँव में चर्चा हो जाती थी कि पढ़ी-लिखी बहू चूल्हे पर रोटी बना रही है. मैं यदि आज भी गाँव में जाती हूँ तो घूँघट करती हूँ. हालांकि मेरे पति ने मुझे ऐसा करने के लिए कभी बाध्य नहीं किया लेकिन मुझे परम्परा के अनुसार अपने आपको ढालना था. मेरे ससुराल तथा गाँव में भी मेरी सराहना की जाती है कि पढ़ी लिखी होने के बाद भी सभी परंपराओं का पालन करती है, घर का काम करती है आदि.

प्रश्नः यह घूँघट की प्रथा यहाँ क्यों प्रचालन में है?

मेरे ज्ञान के अनुसार यह परम्परा मुगलों के समय से चली आ रही है. हरियाणा हमेशा युद्ध का गढ़ रहा है. इस धरती पर हर तरह के युद्ध लड़े गए हैं. जब मुगल यहाँ आए तो स्त्रियाँ को पर्दे में रहने की हिदायत दी गई. सुरक्षा के लिहाज से यह उस समय सही भी था. पर्दे में रहने के अलावा महिलाएं पुरुषों से बातचीत नहीं करती थी और बातचीत नहीं होती थी तो लड़ाई झगड़े भी नहीं होते थे. वहीं से शायद यह परम्परा विकसित हुई कि महिलाओं को पर्दे में रहना है, घूँघट करना है. लेकिन जैसे-जैसे समय बदला मेरे ससुर जी ने मुझे घूँघट करने से मना कर दिया था. इस प्रकार मैंने घर में घूँघट करना बंद कर दिया लेकिन गाँव में मैं घूँघट रखती थी क्योंकि सबका मान-सम्मान करना मेरी जिम्मेदारी थी. मेरा ऐसा मानना है कि यदि कुछ समय के लिए परम्पराओं का पालन असहज होकर भी किया जाए तो इसमें कोई बुराई नहीं है. इसके साथ आम जन की मानसिकता भी सुधरेगी कि लड़कियों को ज्यादा पढ़ाया जाए क्योंकि पढ़ी लिखी लड़कियां बिगड़ती नहीं हैं, मर्यादा में रहती हैं. मैं मेरी बिरादरी में सबसे पहले प्रोफेसर बन गयी. मुझे स्कूल से सम्मानित किया गया. मेरे कारण गाँव में लड़कियों के लिए 10वीं तक का स्कूल बन गया. ये सभी बातें महिलाओं के लिए कुछ करने के लिए मुझे प्रेरित करती है.

प्रश्नः हरियाणा में स्त्री-पुरुष अनुपात बहुत कम क्यों है?

एक समय था जब यहाँ लड़कियों को अभिशाप माना जाता था क्योंकि उनके लिए न तो अच्छी पढ़ाई थी ना ही अच्छा जीवन था. उनके साथ हमेशा दुर्व्यवहार होता था. जन साधारण में अपनी बेटियों और माँ का सम्मान करने की मानसिकता तो थी लेकिन पत्नी को सिर्फ बच्चे पैदा करने और घर का काम करने का साधन माना जाता था. विधि का विधान है कि बेटी को भी एक दिन किसी की पत्नी तो बनना ही था. इसलिए बेटियों को या तो पैदा होते ही मार दिया जाता था या फिर तकनीकी साधनों का उपयोग करके गर्भ में खत्म कर दिया जाता था. लेकिन आज समय बदल गया है. आज की स्थिति इसके ठीक विपरीत है. अब लड़कियां हर क्षेत्र में लड़कों से किसी भी स्तर पर कम नहीं हैं. इसलिए समय के साथ वह पुरानी मानसिकता भी बदल गई है.

प्रश्न : आपको लगता है कि आप लेखन के जरिए समाज को कुछ दे पा रही हैं?

जी बिलकुल! जैसा कि मैंने पहले भी बताया मैं अपने लेखन से समाज में जागरूकता लाने का प्रयास कर रही हूँ. मेरे गाँव से मैं पहली लड़की हूँ, जिसने पीएचडी और डी.लिट. किया है. इसी का प्रतिफल है कि मेरे गाँव में लड़कियों के लिए 10वीं तक का स्कूल खोला गया. मेरे मर्यादा में रहते हुए मेरे द्वारा शिक्षा और नौकरी करने से भी आसपास की सभी महिलाओं में जागरूकता आयी. उसी का परिणाम है कि आज गाँव में सभी लड़कियां शिक्षा ग्रहण कर पा रही हैं. मेरी रचनाएँ भी समाज का लिपिबद्ध प्रतिबिंब ही है जो जन साधारण में चेतना लाने हेतु प्रयास करती है. मैं जिस क्षेत्र से आयी हूँ मैंने स्वयं महिलाओं पर अत्याचार होते देखा है, यातनाएं सहते हुए देखा है. रोजाना लड़ाई-झगड़ा, मारपीट होना आम बात थी. मैंने स्वयं कई महिलाओं को खुदकुशी करने से रोका है. यही कारण है कि मुझे हमेशा लगता है कि पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर बनकर ही सभी यातनाओं से छुटकारा पाया जा सकता है. मेरी सभी पुस्तकों 'मैं द्रोपदी नहीं हूँ, सात फेरों का कर्ज़, तमाशा, बड़ी मछलियाँ आदि' की पृष्ठभूमि में इन सबका जिक्र है. किसानों की आत्महत्या पर हरियाणवी भाषा में मैंने नाटक लिखा है. मैंने खुद भी खेती का कार्य किया है इसलिए मुझे किसानों की स्थिति के बारे में पता है. शादी के बाद हम शहर आ गए. लेकिन हालांकि मेरा ससुराल भी किसान परिवार से है. मेरी रचनाओं के लिए मुझे हरियाणा साहित्य अकादमी से पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं. आसपास के सभी कार्यक्रमों में मुझे अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया जाता है. इससे मैं, मेरा परिवार एवं समाज गर्व महसूस करते हैं और निश्चित तौर पर समाज के लिए मेरा लेखन जागरूकता बढ़ाने का काम कर रहा है.

प्रदीप कुमार
क्षे.का. करनाल

सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला

फरवरी के पहले पखवाड़े के दौरान रंगों की बौछार, ढ़ोल की थाप और विभिन्न क्षेत्रीय संगीतों से हरियाणा के फरीदाबाद में ऐतिहासिक 'सूरजकुंड मेला' आयोजित किया जाता है. इस मेले में ग्रामीण भारत के लोकाचार का प्रतिनिधित्व करने के लिए बनाए गए माहौल में भारतीय परम्परा और संस्कृति की अनूठी विविधता का उत्सव मनाया जाता है. इस दौरान ग्रामीण भारत एवं भारतीय संस्कृति और परम्परा की अनूठी विविधता देखने को मिलती है. सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला भारत के सर्वोत्तम हथकरघा और हस्तशिल्प का प्रदर्शन करता है. इस मेले के दौरान हजारों विदेशी पर्यटकों सहित लगभग

दस लाख आगंतुक मेले में आते है. यह भारत के हस्तशिल्प, हथकरघा और सांस्कृतिक ताने-बाने की समृद्धि और विविधता को प्रदर्शित करता है इस प्रकार यह दुनिया का सबसे बड़ा शिल्प मेला भी है. मेले का आयोजन सूरजकुंड मेला प्राधिकरण और हरियाणा पर्यटन द्वारा केंद्रीय पर्यटन, कपड़ा, संस्कृति और विदेश मंत्रालय के सहयोग से किया जाता है. हर वर्ष मेले को राज्य आधारित थीम दी जाती है. प्रसिद्ध राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय लोक कलाकार और सांस्कृतिक समूह बड़ी संख्या में मेला परिसर स्थित चौपालों, ओपन-एयर थियेटरों में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं. संध्याकाल में मुख्य चौपाल पर आकर्षक 'सांस्कृतिक संध्या' कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं. मेला वास्तव में विरासत एवं शिल्प का एक संरक्षक है जिसमें पारंपरिक कौशल शामिल है.

पुनम
मॉडल टाउन शाखा, करनाल

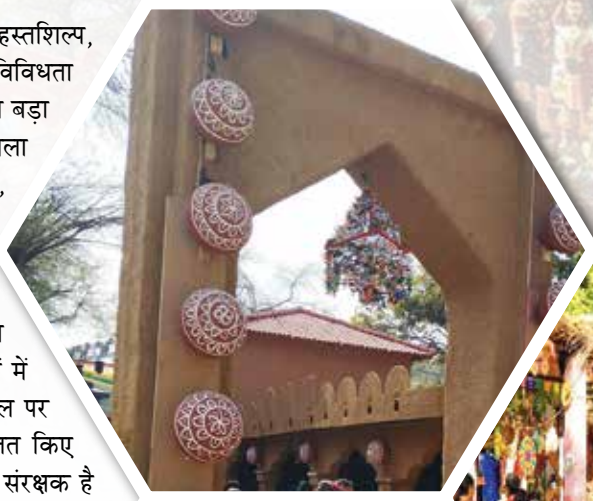

हरियाणा में यूनियन बैंक की वित्त पोषित योजनाएं

हरियाणा राज्य में यूनियन बैंक द्वारा लागू क्लस्टर योजनाएँ -

आम तौर पर देश के विभिन्न हिस्सों में एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र पर केंद्रित औद्योगिक इकाइयों/व्यावसायिक इकाइयों को क्लस्टर कहा जाता है. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा अब तक कई क्लस्टर योजनाएं शुरू की गई हैं. क्लस्टर योजनाओं की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं: -

तेज निर्णय यानी बेहतर टर्न अराउंड टाइम,

अपेक्षाकृत कम ब्याज दर,

कम मार्जिन की आवश्यकता,

लचीले वित्तीय मानक,

न्यूनतम संपार्श्विक (Colletral) कवरेज,

प्रतिस्पर्धी या शून्य प्रसंस्करण शुल्क,

हिसार क्षेत्र में भी बैंक यूनियन बैंक की कुछ विशेष क्लस्टर योजनाएं हैं जिनमें एक क्लस्टर योजना है जो उन क्षेत्रों को वित्तपोषित करती हैं जो यूनिट ऑटो एंड जनरल इंजीनियरिंग आइटम्स / मशीन टूल्स / औधोगिक मशीनरी मैन्युफैक्चरिंग और ट्रेडिंग में कार्यरत हैं.

इस योजना के अंतर्गत नए और विद्यमान एमएसएमई योग्य हैं जो मैन्युफैक्चरिंग, सर्विस और ट्रेडिंग में कार्यरत हैं. प्रोसेसिंग चार्ज में पहले साल 50% की छूट है और टेकओवर के केस में पूर्णतया छूट है. नॉन फंड वित पोषण में जो निर्धारित फीस है उसमें 50% की छूट है.

इस स्कीम में जो मार्जिन है वो इस प्रकार है.

नकद साख - 25% ऑफ स्टॉक एंड बुक डेट

टर्म लोन:- 35% ऑफ लैंड एंड बिल्डिंग.

नॉन फंड बेस्ड :- 15% (नकद / फिक्स्ड डिपॉजिट)

इंटरनेट बैंकिंग की अनुमति दी जा सकती है.

उस यूनिट को विनिर्माण माना जाएगा जिसका कुल बिक्री का 75% बिक्री उसी यूनिट की मैन्युफैक्चरिंग से होना चाहिए वरना इसको ट्रेडिंग एक्टिविटी माना जाएगा. योग्य खाते को CGTMSE में कवर किया जा सकता है. विनिर्माण क्षेत्र के लिए संपार्श्विक प्रतिभूति 50 प्रतिशत तक स्वीकार्य है और अगर ट्रेडिंग इकाई है तो सौ प्रतिशत. इस योजना के अंतर्गत कम से कम 25 लाख और ज्यादा से ज्यादा 50 करोड़ तक का वित्तपोषण किया जा सकता है. यह योजना 31 दिसंबर 2024 तक मान्य है. अगर इस योजना के अंर्तगत वितपोषित किया जाता है और इकाई की रेटिंग CR5 से नीचे जाती हैं तो योजना में जो सुविधा प्राप्त ब्याज हैं उसको वापिस ले लिया जाएगा. हालांकि क्लस्टर योजना का लेबल खाते पर लगा रहेगा.

हिसार और करनाल क्षेत्र के लिए इस योजना का लेबल KARNAUTO रहेगा. इस योजना के अंतर्गत CMR 5 और ज्यादा रेटिंग वाले खाते ही योग्य हैं. सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे हॉस्पिटल, शिक्षा संस्थान आदि को संपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में नही स्वीकार किया जा सकता. ग्राहक को ये वचन पत्र देना होगा कि अतिदेय के कारण अगर एक वित्तीय वर्ष में SMA 2 श्रेणी में 2 या अधिक बार आता है तो बैंक क्लस्टर योजना की सुविधाएं से उन्हें बाध्य कर सकता हैं. अगर पहले से ऋण खाता है और इस योजना में योग्य है तो रिन्यूअल या नया ऋण देते इन खातों को समय इस योजना में शामिल किया जा सकता है. अगर किसी इकाई की रेटिंग CMR 1 हैं तो अतिरिक्त 0.25 प्रतिशत और CMR 2 या 3 है तो अतिरिक्त 0.15 प्रतिशत ब्याज दर में छूट होगी. इसी तरह संपार्श्विक कवरेज भी 150 प्रतिशत से ज्यादा हैं तो ब्याजदार में भी रियायत मिलेगी.

दूसरी योजना है नामित मंडियों में थोक व्यापारियों के वित्तपोषण के लिए क्लस्टर विशिष्ट योजना - पैन इंडिया ऐसी थोक मंडिया जहां कम से कम 100 दुकानें हो और जो की क्षेत्र प्रमुख द्वारा अनुमोदित हो. इस स्कीम में प्रोसेसिंग चार्ज में 50 % की छूट है. चालीस लाख तक का कैश डिपॉजिट चार्ज वेवर है. ओवरड्राफ्ट पर कोई मार्जिन नहीं और कैश क्रेडिट में मार्जिन स्टॉक और बुक डेट का 20 प्रतिशत है. ये अकाउंट यूनियन एक्सपोर्ट में भी कवर किए जा सकते हैं. कैश क्रेडिट की गणना टर्नओवर या फ्लेक्सिबल बैंक फाइनेंस तरीके से की जाती है. अगर कृषि संबंधित उत्पाद है तो 100% संपार्श्विक कवरेज और यदि कृषि उत्पाद संबंधित नहीं है तो 75 प्रतिशत कम से कम संपार्श्विक कवरेज होना चाहिए.

10 लाख से 10 करोड़ तक का वित पोषण किया जा सकता है. इसके अंतर्गत CGTSME कवरेज नहीं कर सकते हैं. यह स्कीम 31 दिसंबर 2024 तक मान्य है. एक करोड़ तक ऋण पर स्टॉक स्टेटमेंट तिमाही रूप से और एक करोड़ से ऊपर के ऋण में मासिक रूप से जमा होगी. व्यक्ति या बिजनेस पार्टिकुलर मंडी में कम से कम 3 साल से डॉक्यूमेंट्री प्रूफ के साथ मौजूद हो और जो भी संबंधित एसोसिएशन ही उसका मेंबर हो. अगर मंडी का कार्यालय या दुकान भार रहित है और मॉर्टगेज करने लायक है तो उसका है मॉर्टगेज अनिवार्य है. इसमें WHMANDI का लेबल लगाया जाता हैं. इसमें भी अन्य शर्तें दूसरी क्लस्टर योजनाएं वाली ही मान्य हैं.

पवन कछवाहा
रोहतक, हुडा कोम्प्लेक्स शाखा,
क्षे.का., हिसार

कृषि अग्रणी राज्य, हरियाणा

भारतवर्ष के नक्शे में हरियाणा राज्य की स्थिति किसी महिला के गले में पड़े हुए ताबीज की तरह है, जिससे उसकी खूबसूरती में चार चांद लग गए हैं. राजधानी दिल्ली को तीन ओर से घेरे हुए इस राज्य की महत्ता आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक तीनों दृष्टिकोणों से महत्त्वपूर्ण है. इसका दक्षिणी भाग राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में शामिल किया गया है, जो कि इसकी महत्वपूर्ण स्थिति का परिचायक है.

हरियाणा भारतवर्ष के अमीर राज्यों में से एक प्रमुख राज्य है. यहां खाद्यान्न और दुग्ध उत्पादन बहुत अधिक होता है. इन दोनों के उत्पादन में यह राज्य भारत में नंबर एक पर है.

यहां नहरों, सबमर्सिबल पंपों और साधारण कुओं से यहां की समतल और उपजाऊ भूमि की वर्ष भर सिंचाई की जाती है. यही कारण है, कि यहां के किसान एक वर्ष में तीन फसलें लेने का महती कार्य कर पाते हैं, जबकि अन्य राज्य जैसे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और केरल आदि राज्यों में किसान एक वर्ष में एक उगा या अधिकतम दो फसलें ही उगा पाता है.

प्रति व्यक्ति आय के आधार पर यदि हरियाणा का आंकलन किया जाए तो यह भारतवर्ष में पांचवा सबसे अधिक प्रति व्यक्ति आय वाला राज्य है. इसकी प्रति व्यक्ति सकल राज्य डोमेस्टिक उत्पादन क्षमता वर्ष 2021-21 में रू. 2,40,000/- थी जो कि भारत के अभी राज्यों में 5वें स्थान पर है. गोवा प्रथम स्थान पर रहा, सिक्किम द्वितीय, राजधानी दिल्ली तृतीय और चंडीगढ़ चौथे स्थान पर. हरियाणा राज्य के कृषि उत्पादन में अग्रणी होने के निम्नलिखित कारण हैं.

भौगोलिक संरचना : हरियाणा राज्य की संरचना ऐसी है, कि यहां की मिट्टी आमतौर पर गहरी और उपजाऊ है. हालांकि सुदूर उत्तर में शिवालिक पहाड़ों की पंक्ति, दक्षिण पश्चिम में अरावली पहाड़ियों के अंतिम छोर और दक्षिण पश्चिम के कुछ रेतीले इलाके इसके अपवाद कहे जा सकते हैं. यही कारण है कि यहां के किसान अच्छी किस्म की और अच्छी मात्रा में फसलों का उत्पादन कर पाते हैं.

पूर्व और उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर बहने वाली नदियां: पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश की सीमा को परिभाषित सी करती हुई, यमुना नदी इस राज्य की जीवन रेखा कही जा सकती है. यह राज्य के पूर्वी हिस्से में बहती है. इसके अलावा उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर बहने वाली कई बरसाती नदियों का सिंचाई में योगदान भुलाया नही जा सकता. जिनके नाम हैं- घग्घर, हकरा, चौटांग, सरस्वती, सोम, और कल्याणी आदि.

अरावली पहाड़ों से निकल कर उत्तर पश्चिम की ओर बहने वाली नदियां : हरियाणा राज्य में न सिर्फ उत्तर -पूर्व से दक्षिण पूश्चिम की ओर बहने वाली नदियां पाई जाती हैं, बल्कि ऐसी नदियां भी यहां

हैं, जो दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर बहती हैं. जिन्हें सरस्वती नदी की सहायक नदियां भी कहा जाता है, इन्होंने भी हरियाणा को सिंचाई के लिए जलापूर्ति से लबरेज़ कर रखा है. इनमे से प्रमुख के नाम इस प्रकार हैं- साहिबी, दोहान, इंदौरी और कृष्णावती आदि.

प्रदेश में अनेक बांधों का होना : राज्य में अनेक बांधों का निर्माण दूरदर्शी योजना के अंतर्गत किया गया है. इनमें से प्रमुख बांधों के नाम हैं:- यमुना नदी पर हथिनीकुंड और ताजे वाला बराज, पंचकुला जिले में कौशल्या बांध, यमुनानगर जिले में पथराला बराज और सिरसा जिले में ओटू बराज आदि.

नहरों से सिंचाई और हाइडिल पावर का निर्माण : इन बांधों से न केवल वर्षा के अतिरेक जल का संचय करके बाढ़ के दुष्परिणामों से बचाव करना संभव हो पाता है बल्कि विद्युत निर्माण और गर्मियों के दिनों में समीपस्थ खेतों में नहरों के माध्यम से सिंचाई की संभावना भी प्रबल हो जाती है.

जल व्यवस्था का जाल : हरियाणा में सिंचाई के लिए जल व्यवस्था के लिए नहरों का जाल सा बिछा हुआ है. जिनमें से मुख्य हैं-पश्चिमी यमुना नहर, इंदिरा गांधी नहर और प्रस्तावित सतलुज यमुना लिंक नहर.

हजारों जोहड़ों और झीलों का पाया जाना : हरियाणा राज्य में लगभग 14,000 जोहड़ और लगभग 60 झीलें पाई जाती हैं. जिनका कुशल जल प्रबंधन हरियाणा राज्य वाटर बॉडी प्रबंधन बोर्ड, हरियाणा केदवारा किया जाता है. प्रमुख झीलों में शामिल हैं- गुरुग्राम का बसई वेट लैंड, फरीदाबाद की बड़खल झील, प्राचीन सूरजकुंड और कुरुक्षेत्र का ब्रह्म सरोवर आदि.

मौसम के बदलते मिजाज़ : यहां का मौसम उत्तर प्रदेश में पाए जाने वाले गंगा के मैदानों के मौसम जैसा होता है. यहां गर्मियों में भीषण गर्मी और सर्दियों में हाड़ कंपाने वाली सर्दी पड़ती है. शायद यही कारण है कि यहां की कृषि उपज में भी विविधता पाई जाती है. सर्दियों की सुबहों की ओस से होने वाली गेंहू की फसल की सिंचाई और तेज धूप से गेंहू की फसल का पकना भला किस आम जन को याद नहीं होगा.

कृषि से संबद्ध अन्य क्रियाकलापों का विकास : कृषि पर आधारित हरियाणा की अर्थ व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने भी अनेक योगदान दिए हैं. इनमें से प्रमुख को इस प्रकार गिनाया जा सकता है.

अ) केंद्रीय अनुसंधान संस्थान की स्थापना

ब) भैंसों, भेड़ों के प्रजनन के फार्म की स्थापना

स) राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान की स्थापना

द) मत्स्य पालन संस्थान की स्थापना

इ) गेंहू और जौ अनुसंधान संस्थान

ई) पशु अनुवांशिकी के राष्ट्रीय ब्यूरो के संस्थान की स्थापना

इन सारे संस्थानों की स्थापना से कृषि की उपज बढ़ाने में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभ हुए हैं. जनता के मानस में यह संदेश गए हैं कि कृषि के क्षेत्र में रोजगार ढूंढना पारंपरिक कृषि करना ही नहीं है बल्कि उसमें अनेकों विकल्प उपस्थित हैं. साथ ही सरकार भी जनता का सहयोग करने को तत्पर है, यह भी स्पष्ट होता है.

कृषि एवम सहयोगी सेवाओं में योगदान : हरियाणा के कृषि से उत्पादकता में 93% फसलों के उत्पादन और पशुधन से प्राप्त उत्पाद और अनुषंगी उत्पादों से है. इस उत्पादकता का 4% वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन और लॉगिंग से है, और शेष भाग मत्स्यपालन से प्राप्त होता है.हरियाणा में, देश की कृषि भूमि का 1.4% भाग पाया जाता है, फिर भारत के कृषि निर्यात में इसका योगदान 7% से अधिक है. यह तथ्य ही इसके भूमि के समुचित दोहन, किसानों और कृषि व्यवसायों में लगे श्रमिकों की कर्मठता और भूमि की ऊंची उर्वरकता को दर्शाती है और तिलहन के उत्पादन वृद्धि में भी उत्कृष्ट कार्य हुआ है. इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है, कि हरियाणा राज्य भौगोलिक दृष्टिकोण से सर्वगुणसंपन्न और ईश्वरीय कृपा से ओतप्रोत है. यहां की भूमि कृषि के लिए गहरी और उपजाऊ मिट्टी से लबरेज़ है. नदियों, झीलों और जोहडों की यहां भरमार है.

इन सबके साथ केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के ईमानदार प्रयासों से कृषि और उससे जुड़ी अनुषांगिक क्रियाओं में लाभप्रदता की बढ़ती संभावनाओं के मद्दे नजर आम जनता का रुझान भी कृषि और सहयोगी गतिविधियों की ओर बढ़ गया है. उपरोक्त अध्ययन के उपरान्त कहा जा सकता है, कि सरकारी रुझान, जनभागीदारी और ईश्वरीय कृपा से प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुर मात्रा के चलते हरियाणा भारत के अग्रणी कृषि राज्य के रूप में पहचाना जाता है. आशा है कि कृषि के क्षेत्र में अग्रणी बने रहने की इन संभावनाओं के सूरज भविष्य में भी इसी तरह देदीप्यमान होते रहेंगे.

राहुल गुप्ता
इंद्रपुरी करेंसी चेस्ट, भोपाल (सेंट्रल)

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

करनाल हरियाणा में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई) डेयरी क्षेत्र के प्रमुख संस्थानों में से एक है, जिसने डेयरी उद्योग के विकास में योगदान एवं निरंतर अनुसंधान के माध्यम से दुग्ध उत्पादन में भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. लगभग एक शताब्दी पूर्व एनडीआरआई को इंपीरियल इंस्टीट्यूट फॉर एनिमल हसबेंडरी एंड डेयरी के नाम से जाना जाता था, जिसे 1923 में डेयरी शिक्षा केंद्र, बैंगलोर (कर्नाटक) में स्थापित किया गया था.

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व भारत रत्न पंडित श्री मदन मोहन मालवीय जी स्वयं भी पशु प्रबंधन के आधुनिक तरीकों से परिचित होना चाहते थे, इसलिए वर्ष 1927 में पूर्ववर्ती इंपीरियल इंस्टीट्यूट, बैंगलोर द्वारा भारत में गायों और भैंसों से संबन्धित समस्याओं की तकनीकी जटिलताओं पर चर्चा एवं समाधान हेतु साप्ताहिक

कार्यक्रम आयोजित कर संस्थान में इन्हें प्रशिक्षण दिया गया. महात्मा गांधी ने संस्थान के काम में बहुत रुचि दिखाई, डेयरी एवं वैज्ञानिक पशु प्रबंधन के महत्त्व पर 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' में कई लेख भी लिखे. गांधीजी की सोच और विचारों का राजनीतिक नेतृत्व पर

विशेष रूप से स्वतन्त्रता पश्चात के शुरुआती दौर में नीतिगत निर्णय लेने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप प्रमुख ग्राम योजना, गौसंवर्धन परिषद और गहन पशु विकास कार्यक्रम तैयार किए गए. गांधीजी संस्थान की सबसे अधिक उत्पादक संकर नस्ल (क्रॉसब्रीड) गाय 'जिल' की अत्यधिक सराहना करते थे.

वर्ष 1955 में इंपीरियल इंस्टीट्यूट के बुनियादी ढाँचे में बदलाव करते हुए बैंगलोर में दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना की गई तथा संस्थान का नाम राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई) कर अपने वर्तमान स्थान करनाल, हरियाणा में स्थानांतरित कर दिया गया. वर्ष 1970 में, एनडीआरआई को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तहत लाया गया. संस्थान को 1989 से अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों को लागू करने के लिए एक डीम्ड विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त हुआ. यह संस्थान डेयरी के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करता है, जिसकी एशिया में कोई समानता नहीं है. करनाल में 560 हेक्टेयर के विशाल परिसर में स्थित, एनडीआरआई में दुग्ध पार्लर प्रणाली एवं प्रबंधन प्रणाली के साथ 1800 से अधिक डेयरी पशु हैं, जो नस्ल सुधार परियोजना और अन्य अनुसंधान गतिविधियों को पूरा करते हैं. जैव प्रौद्योगिकी, आण्विक जीव विज्ञान, कोशिका संरचना, किण्वन प्रौद्योगिकी, प्रोटीन रसायन विज्ञान, पोषण अध्ययन, खाद प्रौद्योगिकी एवं सूक्ष्म तत्व विश्लेषण के सबसे उन्नत क्षेत्रों में अनुसंधान करने के लिए अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक उपकरण से लैस प्रयोगशालाएँ हैं.

एनडीआरआई, करनाल एक अनूठा संस्थान है जिसमें डीम्ड विश्वविद्यालय एवं आवासीय भवनों के साथ विभिन्न सुसज्जित अनुसंधान प्रयोगशालाएँ तथा बारहमासी पौधों एवं उद्यानों के साथ-साथ हरे-भरे मैदान हैं. संस्थान के छात्रों और कर्मचारियों को आधुनिक खेल सुविधाएं और आकर्षक आवासीय सुविधा दी जाती है. शिक्षण और अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के लिए एक प्रयौगिक डेयरी के अलावा, एनडीआरआई में एक वाणिज्यिक मॉडल डेयरी प्लांट भी है जिसकी दैनिक प्रसंस्करण क्षमता 60,000 लीटर से अधिक है. अनुसंधान प्रयोगशालाओं में विकसित उत्पादों और प्रक्रियाओं पर विशाल पुस्तकालय में 94,000 पुस्तकें उपलब्ध हैं. निदेशक व कुलपति के नेतृत्व में, एनडीआरआई के संगठनात्मक रूप से दो विंग हैं, जिसमें प्रत्येक का नेतृत्व एक संयुक्त निदेशक करता है. एनडीआरआई में अनुसंधान एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों को चलाने के लिए प्रशासनिक और सहायक कर्मचारियों के अलावा लगभग 160 योग्य एवं अनुभवी वैज्ञानिक तथा 185 तकनीकी कर्मचारी कार्य करते हैं.

विश्व स्तर पर संस्थान द्वारा कई मुकाम हासिल किए गए हैं. डेयरी अनुसंधान एवं शिक्षा के समग्र विकास में इसके योगदान और भूमिका की मिसाल दी जाती है. संस्थान को वर्ष 2016-17, 2017-18 और 2018-19 में लगातार तीन बार 4 डीम्ड विषविद्यालयों सहित भारत के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है. संस्थान को डेयरी के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए जुलाई 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 'सरदार पटेल उत्कृष्ट आईसीएआर संस्थान पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया है. इसे कृषि नेतृत्व पुरस्कार 2013 से भी सम्मानित किया गया है. इससे पहले, संस्थान को पूरे भारत के शैक्षणिक संस्थानों में प्रतिभा और नेतृत्व की पहचान के लिए एजुकेशन लीडरशिप अवार्ड से भी नवाजा गया है. इसके अलावा, इसके कई वैज्ञानिकों ने अपने उत्कृष्ट शोध के लिए विभिन्न पुरस्कार प्राप्त किए हैं.

अग्रणी संस्थान के रूप में, भाकृअनुप-एनडीआरआई ने पिछले नौ दशकों के दौरान डेयरी उत्पादन, प्रसंस्करण, प्रबंधन और मानव संसाधन विकास के विभिन्न क्षेत्रों में काफी विशेषज्ञता हासिल की है. दुग्ध उत्पादन में वृद्धि और मूल्यवर्धन पर प्रौद्योगिकी के उत्पादन और प्रसार में संस्थान के निरंतर प्रयास से राष्ट्र को सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ प्राप्त हुए हैं. डेयरी अनुसंधान, शिक्षा और खेती के लिए जनमानस विकास में संस्थान का बहुत योगदान है और भारतीय डेयरी के लिए रीढ़ की हड्डी के रूप में मान्यता प्राप्त है. हाल के वर्षों में संस्थान ने नवजात बछड़े, सेमीनल प्लाज्मा, भ्रूण स्टेम सेल के साथ वयस्क जानवरों से प्राप्त दैहिक कोशिकाओं के माध्यम से 'हैंड गाइडेड क्लोनिंग' का उपयोग से दुनिया के पहले भैंस क्लोन बछड़े का उत्पादन कर क्लोनिंग के क्षेत्र में ऐतिहासिक सफलता हासिल की है. दैनिक डेयरी उत्पाद जैसे प्रोबाइयोटिक पनीर और दही, स्पोर्ट्स ड्रिंक, कम कोलेस्ट्राल वाला घी, हर्बल घी, बर्फी मधुमेह रोगियों व कार्डियो वसकुलर रोग के लिए विशेष उदपाद विकसित किए हैं. नाश्ते में स्मूदी बनाने के लिए अनाज, फल और सब्जियों जैसे अन्य खाद पदार्थों जैसी सामग्री को शामिल करना, बाजरा आधारित आइरन-फोर्टिफिएड बिस्कुट, जौ व बाजरा पर आधारित प्रोबाइयोटिक पेय जैसे खाद्य पदार्थ इसके उदाहरण हैं. छोटे पैमाने पर डेयरी संचालन और मशीनीकृत उत्पादन दोनों के लिए उपकरणों को डिज़ाइन किया गया है. संस्थान से प्राप्त जानकारी और सेवाओं से दुग्ध से संबन्धित उत्पादों के लाखों दुग्ध उत्पादकों और उपभोक्ताओं के सम्पूर्ण और कल्याण के लिए डेयरी उद्योग के विकास में योगदान दिया है.

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई), करनाल ने देश के प्रमुख डेरी अनुसंधान के रूप में कई दशकों से डेरी उत्पादन, प्रसंस्करण तथा मानव संसाधन विकास के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विशेषज्ञता विकसित की है. संस्थान द्वारा प्रदत्त सेवाओं ने दुग्ध उद्योग तथा लाखों दुग्ध उत्पादकों के विकास में योगदान दिया है. वैश्विक डेरी व्यापार की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए यह संस्थान दुग्ध व्यापार के माध्यम से देश के बेहतर विकास में निरंतर प्रयत्नशील है.

अभिषेक चौधरी
सेक्टर-3 शाखा, करनाल

'धर्मक्षेत्र'- कुरुक्षेत्र

भगवद्-गीता के पहले श्लोक में **(धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्रे समवेतायुत्सवः ममकाः पाण्डवाश्चैव किम्अकुर्वत संजय),** कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र यानी 'धार्मिकता का क्षेत्र' कहा गया है. कुरुक्षेत्र महान ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व का स्थान है, जो वेदों और वैदिक संस्कृति के साथ अपने पवित्र जुड़ाव के लिए पूरे देश में प्रतिष्ठित है. यहीं पर महाभारत का युद्ध लड़ा गया था और भगवान कृष्ण ने ज्योतिसर में अर्जुन को पवित्र भगवद्-गीता में निहित 'कर्म' के अपने दर्शन का प्रचार किया था.

ऐसा माना जाता है कि सोमवती 'अमावस्या' और सूर्य ग्रहण के समय सभी पवित्र नदियों का पवित्र जल कुरुक्षेत्र के सन्निहित सरोवर में प्रवाहित होता है. ऐसा माना जाता है कि कुरुक्षेत्र में जो लोग तालाबों में स्नान करते हैं, वे मृत्यु के बाद स्वर्ग जाते हैं.

जिले की धार्मिक विशेषता के साथ कुछ महत्त्वपूर्ण स्थानों का विवरण निम्न प्रकार से है-

ब्रह्म सरोवर : कुरुक्षेत्र में एक सुंदर पानी की टंकी, ब्रह्म सरोवर, भगवान शिव को समर्पित है. ऐसा माना जाता है कि भगवान ब्रह्मा ने इसी भूमि से ब्रह्मांड की रचना की थी. इस पवित्र स्थान के पास ही बिरला गीता मंदिर और बाबा नाथ की 'हवेली' है. सर्दियों में सरोवर में जान आ जाती है जब पक्षी दूर-दूर से इस पानी में डुबकी लगाने के लिए आते हैं.

सन्निहित सरोवर : भगवान विष्णु का स्थायी निवास सन्निहित सरोवर 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन तीर्थों की पूरी श्रृंखला यहां एकत्रित होती है और किंवदंतियों के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति सूर्य ग्रहण के समय श्राद्ध करता है और इस तालाब में स्नान करता है, तो उसे 1000 अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त होता है.

कुरुक्षेत्र पैनोरमा और विज्ञान केंद्र : कुरुक्षेत्र पैनोरमा और विज्ञान केंद्र एक अनूठा केंद्र है जो विज्ञान को धर्म से जोड़ता है. केंद्र का मुख्य आकर्षण कुरुक्षेत्र की महाकाव्य लड़ाई की एक जीवंत चित्रमाला है जो युद्ध में हर प्रकरण को सही ठहराते हुए वैज्ञानिक व्याख्याओं के साथ महाभारत युद्ध को प्रदर्शित करता है. केंद्र की भव्य दो मंजिला इमारत में बेलनाकार दीवारें हैं. केंद्र में 'इंडिया: ए हेरिटेज इन साइंस, टेक्नोलॉजी एंड कल्चर' नामक एक दिलचस्प प्रदर्शनी है, जिसमें पदार्थ के गुणों, परमाणु की संरचना, ज्यामिति, अंकगणितीय नियमों, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और सर्जरी की प्राचीन भारतीय अवधारणा पर काम करने और इंटरैक्टिव प्रदर्शन शामिल हैं.

शेख चिल्ली का मकबरा : यह खूबसूरत मकबरा और मदरसा (विद्यालय) सूफी संत अब्दुल रहीम उर्फ अब्द-उल-रजाक से जुड़ा हुआ है, जिसे शेख चेल्ली (जिसे मिर्च भी कहा जाता है) के नाम से जाना जाता है. मकबरा, मदरसे के सामने और एक कृत्रिम छत पर खड़ा, दक्षिण में प्रवेश द्वार के साथ अष्टकोणीय आकार का है. यह मकबरा बलुआ पत्थर से बना है.

स्थानेश्वर महादेव मंदिर : स्थानेश्वर महादेव मंदिर थानेसर में स्थित है. इस मंदिर के पीछे एक कहानी है जिसके अनुसार पांडवों ने महाभारत के युद्ध में जीत के लिए भगवान शिव से उनका आशीर्वाद प्राप्त करने की प्रार्थना की थी. इसलिए मंदिर से लगे तालाब का पानी पवित्र माना जाता है.

ज्योतिसर - गीता का जन्म स्थान : ज्योतिसर कुरुक्षेत्र का सबसे पूजनीय तीर्थ है. ऐसा माना जाता है कि महाभारत का युद्ध ज्योतिसर से शुरू हुआ था, जहां युद्ध की पूर्व संध्या पर अर्जुन को अपने प्रतिपादक भगवान कृष्ण से गीता का शाश्वत संदेश मिला था. ऐसा कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने ईसाई युग की 9वीं शताब्दी में अपने हिमालय प्रवास के दौरान इस स्थान की पहचान की थी.

कल्पना चावला मेमोरियल तारामंडल, कुरुक्षेत्र : इसका नाम हरियाणा की बहादुर बेटी डॉ. कल्पना चावला के नाम पर रखा गया है. यह पिहोवा रोड पर ज्योतिसर के पास स्थित है. तारामंडल को खगोल विज्ञान में अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करने के लिए विकसित किया गया है. तारामंडल की स्थापना 24 जुलाई 2007 को हरियाणा राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा की गई थी. तारामंडल में इमारत के अंदर और बाहर दोनों जगह प्रदर्शन किया गया है.

भीष्म कुंड, नरकटरी : एक अन्य स्थान जो महाकाव्य महाभारत के साथ संबंध रखता है, यह वह स्थान है जिसके बारे में यह माना जाता है कि पितामह भीष्म इस जगह से युद्ध को देख रहे थे, उनके लिए बाणों का एक बिस्तर बनाया गया था. इस स्थान पर अब एक पानी की टंकी के बगल में एक मंदिर है जिसे बाणगंगा या भीष्म कुंड कहा जाता है.

थानेसर पुरातत्व स्थल संग्रहालय : कुरुक्षेत्र से सटा थानेसर पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है. लोगों को थानेसर के इतिहास के बारे में जानकारी देने के लिए हरियाणा में अपनी तरह का यह पहला पुरातात्विक संग्रहालय स्थापित किया गया है, जिसका खुलासा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा यहां किए गए पुरातात्विक उत्खनन से किया गया है.

भद्रकाली मंदिर : भद्रकाली मंदिर कुरुक्षेत्र जिले के थानेसर शहर में झाँसा रोड पर स्थित है. भद्रकाली शक्ति का एक रूप है. इसे भारत के 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है. ऐसा माना जाता है कि सती की एक पायल कुएं में गिरी थी. यह भी माना जाता है कि पांडवों ने भगवान कृष्ण के साथ मां दुर्गा की पूजा की थी और महाभारत युद्ध में जीत के बाद वे फिर से यहां देवी मां की पूजा करने आए थे.

नाभा हाउस : इस महलनुमा भवन का निर्माण नाभा रियासत के शाही परिवार ने करवाया था. इस स्मारक का उपयोग शाही परिवार के सदस्यों द्वारा कुरुक्षेत्र में धार्मिक प्रदर्शन के दिनों में ठहरने के लिए किया जाता था. इमारत एक ऊँचे चबूतरे पर खड़ी है. प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है इमारत की दूसरी मंजिल पर दो खूबसूरत खंभों वाली खिड़कियां (झरोखे) हैं. इन स्तंभों के आधार और शीर्ष को कमल के डिजाइन से सजाया गया है. स्मारक के शीर्ष पर भगवान ब्रह्मा को समर्पित एक मंदिर का निर्माण किया गया है.

प्राचीन टीला अमीन : अमीन गांव का नाम महाभारत के नायक अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से लिया गया है. इस गाँव के प्राचीन स्थल को 'अभिमन्यु खेड़ा' के नाम से जाना जाता है. ऐसा माना जाता है कि यह प्रसिद्ध चक्रव्यूह का स्थल है, जिसे कौरवों ने पांडवों से लड़ने के लिए व्यवस्थित किया था. अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु इस चक्रव्यूह में फंस गया था और महाभारत युद्ध के दौरान मारा गया था. एक टीले के आकार में प्राचीन स्थल, 650X250 मीटर के क्षेत्र में व्याप्त है.

विश्वामित्र का टीला : इस शहर का नाम पिहोवा, इसके पौराणिक नाम, पृथुदका से लिया गया है, और किंवदंती है कि राजा पृथु इस शहर के संस्थापक थे. पिहोवा में गुर्जर-प्रतिहार काल के दो अभिलेख मिले हैं. इस जगह के एक शिलालेख में इस शहर में तीन विष्णु मंदिरों के निर्माण का उल्लेख है. एक अन्य शिलालेख, जो अभी भी 882 ईस्वी के राजा भोजदेव के पिहोवा में गरीबनाथ मठ में है, वहां और अन्य जगहों पर मौजूद इन विष्णु मंदिरों के रखरखाव के उद्देश्य से प्रत्येक व्यापारी से स्वैच्छिक कर का संग्रह दर्ज करता है.

श्री कृष्ण संग्रहालय : संग्रहालय, भगवान कृष्ण के पंथ के रहस्य को उजागर करता है. यह महाभारत और भागवत पुराण में वर्णित कृष्ण के बहुमुखी व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है. संग्रहालय में छह दीर्घाएँ हैं, जिनमें से प्रत्येक में दो ब्लॉक हैं. प्रदर्शनी में पत्थर की मूर्तियां, कांस्य की ढलाई, पत्ती की नक्काशी, लघु चित्र, मिट्टी के बर्तन और टेराकोटा की कलाकृतियां हैं.

पशुपतिनाथ मंदिर : यह पिहोवा में मराठा कब्जे के दौरान बनाया गया सबसे बड़ा मंदिर है. टच स्टोन का एक चतुर्मुख लिंग (पशुपतिनाथ मंदिर, काठमांडू, नेपाल के समान), इसके गर्भगृह में स्थापित है. मंदिर के सामने एक ऊंचे चबूतरे पर बने गुंबददार मंडप की छत पर उत्कृष्ट भित्ति चित्र हैं.

भोर सैदन - क्रोकोडाइल फार्म : 22 किलोमीटर दूर पिहोवा-कुरुक्षेत्र मार्ग पर स्थित ग्राम भौर सैदन में मगरमच्छों से भरा तालाब था. कुरुक्षेत्र से इस तालाब के क्षेत्र का अधिग्रहण कर लिया गया था और 1982-83 के दौरान इसके प्रबंधन को वन विभाग ने अपने कब्जे में ले लिया था.

सुनील कुमार
कुरुक्षेत्र शाखा, करनाल

अब गुरुग्राम

'गुरुग्राम' कहो या 'गुड़गाँव' दोनों एक ही शहर के नाम हैं. गुरुग्राम अर्थात 'गुरु का ग्राम'. इस नाम के पीछे एक घटना है, आप सभी को यह जानकार हैरानी होगी कि गुरुग्राम कोई नया बसाया हुआ स्थान नहीं है. इसका जिक्र महाभारत के समय में किया गया है. यह वही गाँव है जिसे ज्येष्ठ पांडव पुत्र युधिष्टिर ने अपने गुरु द्रोणाचार्य को भेंट स्वरूप दिया था. जिनके प्रमाण आज भी गुरुग्राम में स्थित हैं.

वास्तविक गाँव 'गुरुग्राम' शहर से 1.5 किलोमीटर अंदर है. जिस गुरुग्राम को हम आज देखते हैं उसे बनने में सालों बीत गए. आज बात चली है तो मैं भी आपसे थोड़ी जानकारी सांझा कर लेता हूँ. मुगल शासक अकबर के शासन में इसे दिल्ली और आगरा के अधिकार क्षेत्र में लाया गया. जैसे-जैसे मुगल शासक कमजोर पड़ते गए वैसे-वैसे ही यह ग्राम मुगल और मराठों के बीच बंट गया. उसके उपरांत 1803 ईसवीं में सुरजी अर्जुन गाँव और ग्वालियर के बीच साझा हुआ जिसके तहत गुरुग्राम में अंग्रेजों की हुकूमत का आगाज़ हुआ. 1857 के विद्रोह के पश्चात इसे उत्तर-पश्चिम प्रांत-ए-पंजाब प्रांत में कर दिया. 1861 में फिर इसे पाँच तहसीलों में बांटा गया जैसे- गुदगाओं, नूह, पलवल, रेवाड़ी, फिरोजपुर, झिरका. फिर 1947 के विभाजन के बाद गुरुग्राम पंजाब राज्य में आया जो कि 1967 में नए राज्य हरियाणा में शामिल हुआ.

इतिहास में इसके नामकरण का जो भी कारण रहा हो लेकिन आज के समय में गुरुग्राम को 'लाखों सपनों का शहर' कहा जाता है. इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत का एक बड़ा रोजगार हब है यहाँ अनेकों कारखाने, एमएनसी व सरकारी दफ्तर हैं, जिससे लाखों को रोजगार मिल रहा है.

चलिए अब गुरुग्राम का भ्रमण कर लेते हैं. वैसे यहाँ घूमने के लिए तो बहुत सारी जगह हैं लेकिन हम कुछ प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों के बारे में बात करेंगे.

1. **डीएलएफ़ साइबर हब** - यह एक विशाल रिटेल मॉल है, जिसमें शॉपिंग और भोजन करने के लिए प्रीमियम रेस्तरां है. इसमें रुफ़टॉप टैरेस और थिएटर भी मौजूद हैं.

2. **किंगडम ऑफ ड्रीम्स** - इसे हम लोग 'केओडी' के नाम से जानते हैं. यह हमारे देश में पहले लाईव मनोरंजन और थिएटर स्थल के रूप में जाना जाता है. यदि आप भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, शिल्प या व्यंजनो का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो यह आपके लिए एक आदर्श स्थान है. केओडी का जांगुरा, नौटंकी महला, शौशा थिएटर काफी प्रखयात है.

3. **हेरिटेज ट्रांसपोर्ट म्यूज़ियम** - यह भारत का पहला ट्रांसपोर्ट म्यूज़ियम है जो गुरुग्राम में मानेसर के पास तौरु में स्थित है. संग्रहालय मानव परिवहन के इतिहास को प्रदर्शित करता है. यहाँ ब्रिटिश काल से लेकर आधुनिक काल तक के परिवहन के सभी साधनों का विशाल प्रदर्शन है.

4. **फन एंड फूड विलेज़** - यह एक मनोरंजन पार्क है जो सबसे लंबा जल चैनल (400 फीट) प्रदान करता है. यह 'दिवाली' त्योहार को छोड़कर पूरे वर्ष खुला रहता है. यह पुरानी दिल्ली गुरुग्राम रोड पर स्थित है. भारत का सबसे बड़ा इंडोर स्नो पार्क भी यही स्थित है. वाटर स्पोर्ट्स गतिविधियों के अलावा यहाँ खाने के लिए स्वादिष्ट व्यंजन मिलते हैं.

5. **शीतला माता मंदिर** - माता शीतला उत्तर भारत, पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश, नेपाल और पाकिस्तान में पाक्सो देवी के रूप में व्यापक है. हिन्दू पौराणिक कथाओं में घावों और रोगों की देवी कहा जाता है. हिन्दी कैलेण्डर के चैत्र माह में यहाँ भव्य त्योहार/मेला आयोजित किया जाता है जो काफी लोकप्रिय है.

6. **सुल्तानपुर बर्ड सेंचुरी** - यह प्रकृति और पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग के समान है. यह अभ्यारण्य कई प्रवासी पक्षियों का घर है. सितम्बर से मार्च तक यहाँ पर पक्षियों की 250 से भी ज्यादा प्रजातियाँ पाई जाती हैं.

7. **पटौदी महल** - गुरुग्राम से 26 कि.मी. दूर पटौदी में बना यह सफ़ेद महल पटौदी परिवार की निशानी है. वैसे तो पटौदी रियासत की स्थापना 1804 ई. में हुई थी. लेकिन इस महल को बने अभी करीब 80 साल ही हुए हैं. इसका निर्माण 1935 में 8वें नवाब और भारतीय टीम के पूर्व कप्तान इफ़्तिकार अली हुसैन सिद्दकी ने करवाया था. जिसमें 150 कमरे हैं और किसी समय इसमें 100 से भी ज्यादा नौकर काम करते थे. इस महल को 9 वें नवाब मंसूर अली उर्फ नवाब पटौदी ने विदेशी वास्तुकार की मदद से पुनर्निर्मित करवाया था.

गुरुग्राम भारत का दूसरा सबसे बड़ा सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र और तीसरा सबसे बड़ा वित्तीय और बैंकिंग केंद्र है. गुरुग्राम भारत के सबसे बड़े चिकित्सा पर्यटन उद्योग का भी घर है. जनसंख्या की दृष्टि से भारत का 56वां सबसे बड़ा शहर होने के बावजूद गुरुग्राम कुल संपत्ति के मामले में देश का 8वां सबसे बड़ा शहर है.

मनीष लाम्बा
मॉडल टाउन शाखा, करनाल

हरियाणा का ऐतिहासिक जिला, हिसार

हरियाणा राज्य के प्रमुख जिले हिसार नगर को इस बात का गर्व है कि यहाँ प्राचीन काल से ही शौर्य, राष्ट्रीय प्रेम, बलिदान व देश पर मर मिटने की उच्च परम्परा रही है. खादान क्षेत्र से लेकर रणक्षेत्र तक इस शहर ने अपने पराक्रम और शौर्य के अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं.

फिरोज़ शाह तुलगक ने सन 1354 में हिसार नगर की स्थापना की. उसने इस नए नगर हिसार-ए-फिरोजा को महलों, मस्जिदों, बगीचों, नगरों और अन्य इमारतों से सजाया था. 'हिसार' फारसी शब्द है. इसका अर्थ किला या घेरा है. सन 1354 में दिल्ली के सुल्तान फिरोज़ शाह ने यहाँ जिस किले का निर्माण कार्य शुरू करवाया, हिसार का नाम आज देश के प्रमुख शहरों में शुमार हो चुका है.

हरियाणा के हिसार जिले के मुख्य पर्यटन स्थल निम्न प्रकार से है-

राखीगढ़ी का प्राचीन स्थल : राखीगढ़ी का स्थल भारतीय उपमहाद्वीप पर हड़प्पा सभ्यता के पांच ज्ञात सबसे बड़े शहरों में से एक है. अन्य चार पाकिस्तान में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो गनवेरीवाला और भारत में धोलावीरा (गुजरात) हैं. एक विशाल क्षेत्र में फैले पांच आपस में जुड़े हुए टीले राखीगढ़ी के अनूठे स्थल का निर्माण करते हैं. पांच में से दो टीले घनी आबादी वाले थे.

अग्रोहा धाम : अग्रोहा की साइट को पारंपरिक रूप से अग्रवाल समुदाय के महान राजा महाराजा अग्रसेन की राजधानी माना जाता है. अग्रोहा शहर तक्षशिला और मथुरा के बीच प्राचीन व्यापार मार्ग पर स्थित था. और, इसलिए, फिरोज शाह तुगलक के हिसार-ए-फिरोज (हिसार) की एक नई बस्ती के अस्तित्व में आने तक यह वाणिज्य और राजनीतिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना रहा.

जहाज कोठी : आयरलैंड के मूल निवासी और सिरसा और रोहतक के बीच के क्षेत्र के बेताज शासक जॉर्ज थॉमस ने इस भवन को अपने निवास के रूप में बनवाया था. अपने अलग-थलग स्थान के कारण, यह एक विशाल खुले क्षेत्र से घिरे समुद्र में एक जहाज का आभास देता है.

बरसी गेट : यह विशाल द्वार सल्तनत वास्तुकला का एक सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है. दीवारों वाले प्राचीन शहर हांसी के पांच द्वारों में से, यह एकमात्र ऐसा है जो प्राचीन संरचना के रूप में जीवित है. इस प्राचीन प्रवेश द्वार को फारसी शिलालेख के अनुसार 1303 ई. में सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने बनवाया था.

पृथ्वी राज का किला : बीते जमाने की याद दिलाने वाला यह किला पृथ्वी राज के किला के नाम से मशहूर है और अब इसे पूरी तरह से टीले में तब्दील कर दिया गया है. टीले के शीर्ष पर एक सपाट छत के साथ एक लंबी खंभों वाली संरचना स्थित है, जिसे बारादरी कहा जाता है.

फिरोज शाह का महल और तहखानासी : फिरोज शाह के महल और तहखाना के रूप में जाना जाने वाला भवन दिल्ली के सुल्तान फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 ईस्वी) द्वारा बनाया गया था. महल मोटे चूने के प्लास्टर से ढके मलबे की चिनाई से बना है. इसके मेहराब बलुआ पत्थर के नक्काशीदार स्तंभों पर समर्थित हैं. महल परिसर में दो और तीन मंजिला संरचनाओं से घिरा एक खुला प्रांगण है. छत की ओर जाने वाली सीढ़ियों के साथ एक मार्ग महल की विशाल पश्चिमी दीवार में सन्निहित है.

प्राचीन गुम्बद दाना शेर : यह शेर बहलोल या दाना शेर के आध्यात्मिक गुरु बाबा प्राणपीर बादशाह का मकबरा है. शेर बहलोल एक प्रसिद्ध संत थे और उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि गयास-उद-दीन-तुगलक (1320-25 ईस्वी) दिल्ली का राजा बनेगा. मकबरे के चारों ओर मेहराबदार उद्घाटन हैं.

हांसी का किला : हरियाणा के सबसे पुराने किले में से एक हांसी में स्थित था. हालांकि इसकी अधिकांश दीवारें और संरचनाएं अब गिर चुकी हैं, फिर भी उस ऐतिहासिक किले के कुछ अवशेष बचे हुए हैं. यह किला 1,000 साल से अधिक पुराना है और प्राचीन किला 1857 तक रहा, जब इसका बड़ा हिस्सा ध्वस्त कर दिया गया था.

ब्रिटिश पैलेस : एक यूरोपीय शैली का दो मंजिला महल ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा लगभग 1810 ई. में बनवाया गया था. इसे हिसार मवेशी फार्म के अधीक्षक के आवास के लिए बनाया गया बंगला कहा जाता था. इनके अतिरिक्त यहा रानी मुज्जरी महल, दरगाह चार कुतुब, लाट की मस्जिद जैसे एतिहासिक स्थल भी है.

मुकुन्द बिहारी पाठक
निंबरी शाखा, करनाल

हरियाणा की ऐतिहासिक / महत्वपूर्ण हस्तियाँ

हरियाणा की पावन धरा ने आदिकाल से ही अनेक महान हस्तियों को जन्म दिया है, जिनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया जा रहा है :-

1. पण्डित जसराज (भारतीय शास्त्रीय गायक) :- पण्डित

जसराज भारत के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायकों में से एक हैं, जिनका सम्बंध मेवाती घराने से है. जब वे चार साल के थे तभी उनके पिता पण्डित मोतीराम का देहान्त हो गया था और उनका पालन पोषण उनके बड़े भाई पण्डित मणीराम के संरक्षण में हुआ. पण्डित जी का जन्म 28 जनवरी, 1930 को पीली मंडोरी, हिसार में हुआ था जोकि अब फ़तेहाबाद जिले में आता है. जसराज नें संगीत की दुनियाँ में 80 वर्ष से अधिक समय बिताया और कई पुरस्कार प्राप्त किए. पण्डित जसराज ने भारत, कनाडा और अमेरिका में संगीत सिखाया है और उनके कुछ शिष्य उल्लेखनीय संगीतकर भी बने हैं. अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ ने 11 नवम्बर, 2006 को खोजे गए हीन ग्रह 2006 VP 32 को पंडित जसराज के सम्मान में 'पंडित जसराज' नाम दिया है. 17 अगस्त, 2020 को अमेरिका के न्यू जर्सी में उनकी मृत्यु हो गई.

2. दयाचन्द मायना (कवि) :- दयाचन्द मायना हरियाणवी के एक

मशहूर कवि हैं. उनका जन्म 10 मार्च, 1915 को रोहतक जिले के मायना गाँव में हुआ था. उन्होंने बहुत सारे साँग और रागिनियाँ लिखी हैं. नेताजी सुभाष पर उनका लिखा हुआ किस्सा बहुत प्रसिद्ध है. उन्होंने 21 किस्से और 150 से ज्यादा रागिनियाँ लिखीं हैं. दयाचन्द मायना को हरियाणा का 'जॉन मिल्टन' भी कहा जाता है. कवि होने के साथ साथ उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी भी माना जाता हैं क्योंकि उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय सेना में भी अपनी सेवाएँ दी थी. 20 जनवरी 1993 को उनका निधन हो गया. हरियाणा सरकार ने उनके सम्मान में 'लोक कवि दयाचन्द मायना पुरस्कार' की शुरुआत की है जोकि हरियाणवी बोली के माध्यम से प्रदेश के लोक साहित्य एवं संस्कृति के प्रति उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति को प्रदान किया जाएगा.

3. बाजे भगत (साहित्यकार) :- बाजे भगत एक साहित्यकार, कवि, रागिनी लेखक, सांग कलाकार और हरियाणवी सांस्कृतिक कलाकार थे. हरियाणा में सबसे पहले पंडित लखमीचन्द और बाजे भगत दो कवि हुए. दोनों ही एक दूसरे का साथ देते हुए बहुत अच्छी

रागिनियाँ गाते थे. बाजे भगत का जन्म 16 जुलाई, 1898 को सोनीपत जिले के सिसाना गाँव में हुआ था. 120 के दशक के पूर्वार्ध में उन्होंनें 15 से 20 रचनाएँ की, जिनसे उन्हें कम ही समय में हरियाणा में असाधारण प्रसिद्धि मिल गई. 26 फरवरी, 1939 को उनका निधन हो गया.

4. नेक चंद सैनी (मूर्तिकार, रॉक गार्डन, चडीगढ़ के निर्माता) :-

चंडीगढ़ के मशहूर रॉक गार्डन के निर्माता, नेक चंद सैनी का जन्म 15 दिसम्बर, 1924 को बरियाला कलाँ में हुआ था जोकि अब पाकिस्तान में है. 1947 के विभाजन के बाद वो चंडीगढ़ आ गए थे और चंडीगढ़ में पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट में रोड़ इंस्पेक्टर के रूप में अपनी सेवाएँ दी. नेक चंद ने 1958 में टूटा फूटा सामान इकट्ठा करना शुरू किया जिसे लोग बेकार समझकर फेंक देते थे. इसी टूटे फूटे सामान से नेक चंद ने रॉक गार्डन का निर्माण किया, जिसे बनाने में उन्हें 18 साल की कड़ी मेहनत करनी पड़ी. नेक चंद विदेशों में भी बहुत लोकप्रिय थे. उनकी रचनाएँ पेरिस, लंदन, न्यूयॉर्क, वाशिंग्टन और बर्लिन जैसे प्रमुख शहरों का हिस्सा थीं. नेक चंद पर विभिन्न भाषाओं में कई किताबें भी लिखी गयी हैं. उन्हें 1984 में पद्मश्री पुरस्कार मिला.

5. ओम पुरी (अभिनेता): ओम पुरी हिन्दी फिल्मों के प्रसिद्ध

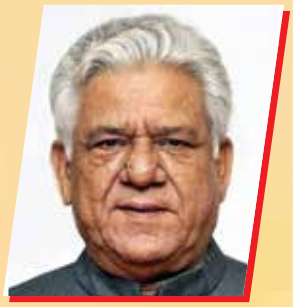

अभिनेता थे. उनका जन्म 18 अक्तूबर, 1950 को अम्बाला, पंजाब (अब हरियाणा) में हुआ. उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पंजाब के पटियाला से पूरी की. 1976 में पुणे फिल्म संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया और लगभग डेढ़ वर्ष तक एक स्टूडियो में अभिनय की शिक्षा दी. बाद में ओम पुरी ने अपने निजी थिएटर ग्रुप 'मजमा' की स्थापना की. ओम पुरी ने अपने फिल्मी जीवन की शुरुआत मराठी नाटक पर आधारित फिल्म 'घासीराम कोतवाल' से की. वर्ष 1980 की फिल्म 'आक्रोश' उनके फिल्मी जीवन की पहली हिट फिल्म साबित हुई. इसके बाद उन्होंने कई भारतीय फिल्मों में काम किया. सिनेमा जगत में उनके योगदान के लिए उन्हे 'पद्मश्री' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया. 6 जनवरी, 2017 को 66 साल की उम्र में दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया.

6. सोनू निगम (गायक): सोनू निगम का जन्म 30 जुलाई, 1973 को फ़रीदाबाद (हरियाणा) में हुआ. वे हिन्दी फिल्मों के प्रसिद्ध गायक हैं. इन्होंने बहुत सारे संगीत एल्बम बनाए हैं और कुछ हिन्दी फिल्मों में भी काम किया है. सोनू निगम ने 4 साल की उम्र में ही गाना शुरू कर दिया था. उन्होंने बहुत सी संगीत प्रतियोगताओं में भाग लिया और गायन को अपना व्यवसाय बनाने के लिए मुंबई आ गए. उन्होंने शास्त्रीय गायक उस्ताद गुलाम मुस्तफा खान से संगीत की शिक्षा ली. प्रारम्भिक वर्षों में उन्हें अपना नाम बनाने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा. उन्होंने 'रफी की यादें' नाम से एल्बम के लिए मोहम्मद रफी के गाने गाना शुरू किया, जिससे उन्हें ज्यादा लोगों तक पहुँचने का मौका मिला. उन्होंने रेडियो पर विज्ञापन भी शुरू किये हैं. बहुत सी फिल्मों में पार्श्व गायन भी किया. उन्हें कई फिल्मों में पार्श्व गायन के लिए सर्वश्रेठ पार्श्व गायक की श्रेणी में फिल्मफेयर पुरस्कार मिल चुका है.

7. सतीश कौशिक : 13 अप्रैल, 1956 को हरियाणा के महेंद्रगढ़ में जन्में सतीश कौशिक ने हिंदी सिनेमा के डायरेक्टर, प्रोड्यूसर और अभिनेता जैसे हर किरदार को निभाया है. फ़िल्म 'मिस्टर इंडिया' में कैलेंडर के किरदार में अपने बेहतरीन काम के लिए इन्हें जाना जाता है. 1978 में नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से पास होने के बाद इन्होंने फ़िल्म एंड टेलीविजन इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया से पढ़ाई की. इन्होंने फ़िल्म 'मासूम' से बतौर सहायक निर्देशक अपने कैरियर की शुरुआत की, इस फिल्म में इन्होंने अभिनय भी किया. अपने बेहतरीन काम के लिए इन्हें कई सारे अवार्ड्स, फ़िल्मफेयर पुरस्कार - सर्वश्रेष्ठ परफॉरमेंस इन ए कॉमिक रोल आदि से नवाजा जा चुका है.

8. सुनील ग्रोवर (फिल्म अभिनेता एवं हास्य कलाकार): सुनील ग्रोवर का जन्म 13 अगस्त, 1977 को मंडी डबवाली (हरियाणा) में हुआ. वे एक फिल्म अभिनेता और हास्य कलाकार हैं. 'कॉमेडी नाइट विथ कपिल' से उन्हें काफी लोकप्रियता मिलीं. उन्होंने कई हिन्दी फिल्मों में भी काम किया है, जिनमें से द लीजेंड ऑफ भगत सिंह, इंसान, गजनी, गब्बर इज़ बैक आदि नाम उल्लेखनीय हैं.

9. कपिल देव (क्रिकेट खिलाड़ी): कपिल देव भारत के पूर्व क्रिकेट खिलाड़ी हैं. उनका जन्म 7 जनवरी, 1959 को चंडीगढ़ में हुआ था. भारत के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ियों में उनकी गणना होती

है. वे भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान के पद पर रह चुके हैं. 1983 में उनकी कप्तानी में भारतीय क्रिकेट टीम ने पहली बार क्रिकेट विश्व कप जीता था, जिसमें वे विश्व कप जीतने वाले सबसे कम उम्र (24 वर्ष) के कप्तान बने. उन्होंने क्रिकेट की शुरुआत 1 अक्तूबर, 1978 को की थी. तथा उन्होंने कुल 131 टेस्ट और 225 एक-दिवसीय मैच खेले. वे टेस्ट क्रिकेट में 400 से अधिक विकेट और 5000 से ज्यादा रन बनाने वाले दुनिया के इकलोते ऑल-राउंडर क्रिकेट खिलाड़ी हैं, जिसके कारण उनकी गिनती दुनिया के महानतम क्रिकेट खिलाड़ियों में की जाती है. साल 1994 में वे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से सेवानिवृत्त हो गए. उन्हें कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है जिनमें अर्जुन पुरस्कार, 'पद्म श्री' एवं विस्डेन इंडियन क्रिकेटर ऑफ द सेंचुरी प्रमुख हैं.

10. बाबा रामदेव (योग गुरु): बाबा रामदेव भारतीय योग गुरु हैं. उनका जन्म हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले के अली सैयदपुर नामक गाँव में 25 दिसम्बर, 1965 को हुआ. उन्होंने योगासन व प्राणायाम के क्षेत्र में योगदान दिया है. वे अलग-अलग जगह जाकर योग शिविरों का आयोजन करते हैं. रामदेवजी अब तक देश व विदेश के करोड़ों लोगों को योग सिखा चुके हैं. उन्होंने अपने सहयोगी बालकृष्ण के साथ मिलकर 'पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड' की स्थापना की. उनका वास्तविक नाम रामकृष्ण यादव था. उन्होंने समीपवर्ती गाँव शहज़ादपुर के सरकारी विद्यालय से आठवीं कक्षा तक पढ़ाई की और बाद में खानपुर गाँव के गुरुकुल में वेद, संस्कृत व योग की शिक्षा ली. उन्होंने युवावस्था में ही संन्यास लेने का संकल्प लिया और बाबा रामदेव नाम से लोकप्रिय हो गए. 1995 में बाबा रामदेव ने 'दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट' की स्थापना की. 2003 से आस्था टीवी ने हर सुबह बाबा रामदेव का योग का कार्यक्रम दिखाना शुरू किया, जिसके बाद बहुत से समर्थक उनके साथ जुड़ गए. योग को जन-जन तक पहुँचाने मे उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. योग और आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए बाबा रामदेव ने पतंजलि योगपीठ की स्थापना की. 'इंडिया टुडे' पत्रिका द्वारा लगातार दो वर्षों तथा देश की अन्य शीर्ष पत्रिकाओं द्वारा रामदेव को देश के सबसे प्रभावशाली 50 लोगों की सूची में शामिल किया गया है.

दिनेश कुमार
क्षे.का.हिसार

करनाल की बेटी कल्पना चावला

भारतीय मूल की एस्ट्रोनॉट ''कल्पना चावला'' का जन्म 17 मार्च, 1962 में हरियाणा राज्य के करनाल जिले में हुआ था. परिवार में माता-पिता के साथ चार भाई-बहनों में सबसे छोटी थी. घर में प्यार से उन्हें 'मोटो' कहकर पुकारते थे.

बचपन में जब वह आसमान में विमान उड़ते देखती तो रोमांचित हो जाती थी. अक्सर अपने पिता के साथ फ्लाइंग क्लब जाती थी और पुष्पक विमान व गलाइडर देखकर बहुत खुश होती. जब कोई उससे पूछता बड़ी होकर क्या बनना चाहती हो तो वह सबसे यही कहती कि मैं अंतरिक्ष के लिए ही बनी हूँ, अंतरिक्ष में जाना चाहती हूँ. उसके सपनों को पंख तब लगे जब उसके पिता ने उसे अपने भाई के साथ पुष्पक विमान से हवाई सैर कराई. बस फिर क्या था, उसे एक राह मिल गई और ऐरोनोटिकल इंजीनियर बनकर उसने अपना कथन सत्य सिद्ध किया कि वह अन्तरिक्ष के लिए ही बनी है.

प्राथमिक शिक्षा करनाल के टैगौर बाल निकेतन स्कूल से करने के पश्चात पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़ से ऐरोनोटिकल इंजीनियरिंग उत्तीर्ण कर 1982 में अमेरिका चली गई. 1984 में ऐरोस्पेस की मास्टर डिग्री टेक्सास विश्वविध्यालय से प्राप्त की. 1986 में दूसरी मास्टर डिग्री करके यूनिवर्सिटी ऑफ क्लोराल्डो से ऐरोस्पेस में पीएचडी की उपाधि हासिल की तथा 1988 में वह नासा से जुड़ गई. 1995 में नासा के अंतरिक्ष के 15वें ग्रुप में उसने प्रशिक्षण लिया.

कल्पना का पहला मिशन 19 नवंबर, 1997 से शुरू हुआ. इस मिशन में उसके साथ छः और एस्ट्रोनॉट भी थे. इस मिशन का नाम 'दी स्पेस ऑफ कोलम्बिया फ्लाइट एसटीएस87' था. इस उड़ान से पहले भी यह स्पेसशिप 24 उड़ाने भर चुकी थी. यह मिशन 19 नवम्बर, 1997 से 5 दिसम्बर, 1997 तक रहा. उसने अपने मिशन में 10.4 मिलियन मील की यात्रा की यानि पृथ्वी के 252 चक्कर लगाए. इस यात्रा में 15 दिन 16 घंटे बिताए यानि 372 घंटे लगे तथा यह एक सफल मिशन रहा.

इसके बाद उनका चुनाव दूसरे मिशन के लिए हुआ जो कि उनका आखिरी मिशन भी साबित हुआ. शुरू में इस मिशन में बार-बार टेक्निकल खराबी आती रही. लेकिन सभी टेक्निकल खराबियों को खत्म करने के बाद उन्होने अपना मिशन 16 जनवरी, 2003 को शुरू किया. इस मिशन का नाम एसटीएस 107 स्पेस शटल कोलम्बिया था. जब यह स्पेस शटल शुरू हुआ तभी विमान पर लगा ऊष्मा रोधी फ़ोम टूट कर बाए विंग से टकराकर जमीन पर आ गिरा था जांच के बाद विमान पर इसका कोई असर नहीं पाया गया और यह सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में पहुँच गया. यह उड़ान, विज्ञान और अनुसंधान को समर्पित थी. इसमें क्रू के सदस्य 24 घंटों में लगातार दो पारियों में काम करते थे. उन्होंने 80 प्रयोगों का सफल परीक्षण किया. अंतरिक्ष में 24 घंटों में 16 बार सूर्योदय और सूर्यास्त देखा यानि हर 1 घंटा 30 मिनट में सूर्योदय. यह परिक्रमा 28000 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पृथ्वी से 400 किलोमीटर की ऊंचाई पर थी. 16 दिन स्पेस में बिताने के बाद 1 फरवरी, 2003 को एसटीएस107 अंतरिक्ष यान 'कोलम्बिया' के वापस पृथ्वी पर लौटने का समय था. वापस लौटते हुए पृथ्वी से महज़ 63 किलोमीटर की दूरी पर तेज रफ्तार (तकरीबन 20000 किलोमीटर प्रति घंटा) से सतह के भीतर प्रवेश करते समय यह यान एयर फ्रिक्शन के कारण आग के गोले में बदल गया और भयानक विस्फोट के साथ टूटकर पूरे आसमान में बिखर गया. नासा के निदेशक से लेकर पूरा विश्व (चाहे वह अंतरिक्ष में रुचि रखता हो या नहीं) सभी गहरे सदमें में पड़ गए.

कल्पना के साथ बाकी छः यात्री अंतरिक्ष के सितारों में खो गए. इस दुर्घटना की जांच में ऊष्मा फ़ोम के टुकड़े टूटने के बाद टकराने के अलावा कोई और कमी नहीं पाई गई. यह इस तरह की पहली दुर्घटना नहीं थी पहले भी ऐसी दुर्घटनाएँ हो चुकी थी. लेकिन मनुष्य के साहस से परिपूर्ण अपने सपनों को साकार करने के लिए ऐसे जोख़िम निरंतर उठाए जाते हैं जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनते हैं.

मरणोपरांत उन्हें कोंग्रेसनल अंतरिक्ष पदक से सम्मानित किया गया. उन्हें नासा अंतरिक्ष उड़ान पदक व नासा विशिष्ट सेना पदक से भी नवाजा गया. इसके अतिरिक्त कल्पना चावला के नाम पर कई मेमोरियल बने हैं जैसे की 'छोटा तारा 51826' का नाम कल्पना चावला रखा गया है. न्यूयार्क शहर में जैक्सन हाइटस क्वींस के 74 स्ट्रीट का नाम '74 स्ट्रीट कल्पना चावला' रखा है. भारत में उपग्रहों के शृंखला 'METSAT' का नाम कल्पना के नाम पर रखा है जैसे कल्पना-1, कल्पना-2 इत्यादि. हरियाणा के ज्योतिसर, कुरुक्षेत्र में कल्पना चावला के नाम से तारामंडल बनाया गया है. अनेक विश्वविद्यालयों में छात्र परिसरों का नामकरण कल्पना चावला के नाम पर किया गया है. करनाल में कल्पना चावला सरकारी अस्पताल व मेडिकल कॉलेज की स्थापना की गई है. नासा ने कल्पना चावला के नाम पर 'कल्पना चावला युवा महिला वैज्ञानिक पुरस्कार' भी दिया है.

कल्पना के जाने से दुख के साथ सुखद एहसास भी होता रहता है. स्वप्न सभी देखते हैं किन्तु स्वप्न तो नन्हीं कल्पना के मन का बीज है. एक बीज जो एक विमान को उड़ते देख उत्पन्न हुआ कल्पना ने उसे मनोभूमि पर बोकर संकल्प एवं परिश्रम की खाद से निरंतर पोषित किया. नारी जाति का संघर्ष बहुत बड़ा है उसे कई मिथक तोड़ने पड़ते हैं. कल्पना चावला ने 80 के दशक में जो साहस, संकल्प और इच्छाशक्ति दिखाई उसने सभी सामाजिक, पारिवारिक मिथकों को तोड़ अपने सपने साकार करने की अदम्य शक्ति प्रदान की. भारतीय चिंतन का सार कहीं न कहीं भारतीय समाज में नारी/स्त्री की सामाजिक स्थिति के प्रति संवेदनशील रहा है. कल्पना चावला भारतीय संस्कृति के चिंतन का चरितार्थ व्यक्तित्व है तथा लाखों/करोड़ों महिलाओं के लिए सदैव प्रेरणा के रूप में भारतीय मन:स्थल पर अमिट रूप से अंकित रहेगी. आज उन्हें गुजरे हुए 18 साल हो चुके हैं लेकिन आज भी करोड़ो लोगों खासकर लड़कियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनी हुई है. हर बेटी कल्पना चावला की तरह बनना चाहती है.

रमनदीप कौर
हांसी रोड़ शाखा, करनाल

फसल अवशेष - खेतों में पराली जलाने के दुष्प्रभाव एवं जागरूकता

ऋग्वेद में कहा गया है कि "एक मुट्ठी भर माटी पर हमारा जीवन निर्भर करता है. हम इसकी सुरक्षा और देखभाल करें. यह हमें भोजन, वस्त्र, ईंधन, औषधि एवं आवास प्रदान करती है तथा हमारे चारों तरफ सौन्दर्य बिखेरती है. यदि हम मृदा की अनदेखी करेंगे तो यह मृत एवं समाप्त हो जाएगी तथा मनुष्य के अस्तित्व को समाप्त कर देगी. उपरोक्त कथनानुसार यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि भोजन, वस्त्र, ईंधन, औषधि एवं आवास की सभी आवश्यकतों की पूर्ति करने वाली मृदा से इतना ही नहीं, अपितु भूमिगत जल की गुणवत्ता भी सीधे तौर पर प्रभावित होती है. मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुण एक दूसरे से परस्पर जुड़े होते हैं और उनमें एक साम्य पाया जाता है, और इन तीनों ही गुणों का फसल उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान होता है. प्रकृति में मृदा, जल एवं वायु, पर्यावरण के तीन मुख्य घटक हैं. मृदा प्रकृतिक कारकों (जलवायु, जैविक पदार्थ, स्थलाकृति, जनक द्रव्य एवं समय) द्वारा निर्मित एक समृद्ध सजीव माध्यम है जो वनस्पति संवर्धन एवं उत्पादन का मुख्य आधार है. परंतु किसानों को शायद ही इस तथ्य की जानकारी होती है कि मृदा के ये तीनों गुण कमोबेश फसल की वृद्धि, विकास एवं उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

आधुनिक कृषि में प्रति इकाई भूमि से अधिकतम उत्पादन लेने की होड़ में मृदा स्वास्थ्य की अनदेखी हो रही है. मृदा को सजीवता का गुण प्रदान करने वाले जीवांश की मात्र न्यूनतम से भी निचले स्तर पर पहुँच गई है जिसका मुख्य कारण है कि मृदा में जैव पदार्थो के कार्यद्रव का न्यूनतम पुन: चक्रण तथा इससे भी बढ़कर फसल अवशेषों को खेत में जलाना. आधुनिक खेती के दौर में हाल के कुछ वर्षों में धान-गेहूँ फसल चक्र में फसल की कटाई उपरांत शेष बची हुई फसल अवशेषों की खेतों में जाने की प्रवृत्ति तीव्र हुई है.

खेत में कटाई-मढ़ाई उपरांत बचे हुए फसल अवशेषों को जलाना विकसित एवं विकासशील देशों के सिंचित क्षेत्रों में व्यापक रूप से प्रचलन में है, जबकि इससे पर्यावरण में वायु प्रदूषण बढ़ने के साथ-साथ मृदा की ऊपरी सतह का तापमान बढ़ने से मृदा में जीवांश एवं पोषक तत्वों की हानि होती है और मृदा के कार्बनिक पदार्थ की परत/सतह में कमी आती है.

देश के कई हिस्सों में फसल अवशेषों के मूल्यों के बारे में किसानों की अज्ञानता एवं उनके स्वास्थ्यपरक समावेश हेतु उचित तकनीकी प्रौद्योगिकी व्यवस्था की कमी के कारण उन्हें जला दिया जाता है. उदाहरण के तौर पर गंगा-यमुना के मैदानी भागों में सघन गेहूँ-चावल फसल प्रणाली में फसल अवशेषों, विशेष रूप से धान के पुआल/पराली के अधिशेष-अवशेष, का उपयोग पशु आहार के रूप में नहीं किया जाता बल्कि इसे जलाकर निपटाया जाता है. यह पुआल निपटाने का एक लागत रहित तरीका है और पुआल अवशेष में रहने वाले कीट एवं रोगों की आबादी को कम करने में मदद करता है. परंतु यह कार्बन डाई आक्साइड, कार्बन मोनो आक्साइड, अमोनिया एवं कालिखयुक्त राख़ को वायु मण्डल में उत्सर्जित करके वायु प्रदूषण का कारण भी बनता है जिससे भूमंडलीय तापमान में बढ़ोतरी एवं स्वास्थ्य संबंधी चिंतायें बढ़ती हैं. जलवायु परिवर्तन पर काम करने वाली संस्था आई.पी.सी.सी. (1995) ने एक रिपोर्ट में बताया है कि हरित गृह गैसों के वार्षिक उत्सर्जन में मानव जनित उत्सर्जन के अलावा लगभग 20 प्रतिशत गैसों का उत्सर्जन सीधे तौर पर कृषि क्षेत्र से आता है. अवशेष जलाने पर कालिख कण उच्च तीव्रता एवं स्तर पर पर्यावरण में उत्सर्जित होते हैं जिससे उत्तर-पश्चिम भारत की मानव आबादी को हृदय एवं सांस अथवा अस्थमा जैसी बीमारियाँ होने का खतरा रहता है. जैन एवं सहयोगी (2014) के एक अध्ययन के अनुसार वर्ष 2016 एवं 2017 के नवंबर माह में चावल के फसल अवशेष जलाने से दिल्ली सहित राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में छायी धुंध की भयावहता, समस्या की व्यापकता को बताती है. अनुमान यह भी लगाया गया है कि चावल के अवशेषों के एक टन में सूक्ष्म पोषक तत्वों की महत्वपूर्ण मात्र के अलावा लगभग 400 किलोग्राम कार्बन, 5-7 किलोग्राम नाइट्रोजन, 1-1.7 किलोग्राम फास्फोरस, 15-25 किलोग्राम पोटेशियम एवं 1.1-1.4 किलोग्राम सल्फर होता है. अतिरिक्त पराली को खेत में जलाने से लाभकारी सूक्ष्मजीव एवं वनस्पति भी नष्ट हो जाते हैं और मृदा स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है.

फसल अवशेषों को जलाने से वातावरण में प्रदूषण की समस्या होती है और मिट्टी में भारी पोषण की हानि होती है तथा स्वास्थ्य बिगड़ जाता है. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अनुमान के अनुसार एक तन धान की पराली जलाने से 3 किलोग्राम कालिख कण, 60 किलोग्राम कार्बन मोनोऑक्साइड, 1460 किलोग्राम कार्बन डाई ऑक्साइड, 199 किलोग्राम राख़ और 2 किलोग्राम सल्फर डाई ऑक्साइड निकलता है. वायु गुणवत्ता में सामान्य गिरावट के कारण ये गैसें मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं जिसके परिणामस्वरूप आँखों और त्वचा रोगों में वृद्धि होती है.

वस्तुत: चावल की कटाई और गेहूँ कि बुवाई के बीच उपलब्ध समय बहुत कम 20-30 दिनों की समय सीमा में होता है. अत: यह परिकल्पना कि गई है कि फसल अवशेष जलाने की परंपरा को रोकने एवं प्रभावी कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त योजना बनाई जाये. बड़े और छोटे दोनों क्षेत्रों में फसल अवशेष प्रबंधन प्रौद्योगिकी के अनुकूलन के साथ-साथ व्यापक प्रचार प्रसार एवं फसल अवशेष प्रबंधन प्रथाओं को अपनाने के लिए उपयुक्त प्रोत्साहन सहित संस्थागत और नीतिगत समर्थन विकसित करने की आवश्यकता है.

शुभम बाटर
क्षे.का. करनाल

अंबाला एयरबेस

अंबाला शहर भारत के हरियाणा राज्य के अम्बा राजपूत का एक मुख्य एवं ऐतिहासिक शहर है. यह भारत की राजधानी दिल्ली से दो सौ किलोमीटर उत्तर की ओर, हरियाणा की राजधानी पैंतालिस किलोमीटर दक्षिण की ओर शेरशाह सूरी मार्ग (राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर-1(44)) पर स्थित है. अंबाला जिला हरियाणा एवं पंजाब राज्यों की सीमा पर स्थित है. अंबाला जिले की स्थापना 1 नवंबर 1966 को हरियाणा राज्य के गठन के समय ही की गई थी.

अंग्रेजों ने अंबाला में बनाई थी, सैन्य छावनी: हरियाणा स्थित अंबाला में सैन्य छावनी की स्थापना अंग्रेजों ने 1843 में की थी. इससे पहले सैन्य छावनी करनाल में थी, लेकिन 1841 में वहां मलेरिया फैलने के कारण इसे अंबाला में शिफ्ट किया गया था. इस बात की तस्दीक इंडियन एक्सप्रेस ने अंबाला जिले के इतिहास के हवाले से भी अपनी रिपोर्ट में की है.

शिमला के कारण अंबाला में बनी थी छावनी : हालांकि, लोगों का मानना है कि करनाल से सैन्य छावनी को अंबाला शिफ्ट करने की सबसे बड़ी वजह दिल्ली-लाहौर रोड पर अपनी पकड़ को मजबूत करना था. इस सड़क के जरिए सैन्य छावनी शिमला से भी सीधे जुड़ जाती थी, जो उस समय देश की ग्रीष्मकालीन राजधानी हुआ करती थी.

अंबाला एयरबेस :

1919 में रॉयल एयर फोर्स ने बनाया बेस : अंबाला एयरबेस की शुरुआत साल 1919 में एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) से हुई थी. इस दौरान डीएच-9 व ब्रिस्टर फाइटर एयरक्राफ्ट को ऑपरेट किया गया था. एक अप्रैल 1938 को स्टेशन हेडक्वार्टर की स्थापना हुई, जिसके कमांडिंग आफिसर विंग कमांडर सीएफ हार्सले थे. साल 2019 में अंबाला में पूर्व वायु सेना अध्यक्ष बीएस धनोआ ने 19 स्क्वाड्रन गोल्डन एरो की स्थापना की थी.

भारतीय वायु सेना द्वारा अंबाला वायु सेना स्टेशन के इतिहास पर एक पुस्तिका प्रकाशित की गई थी, जिसमें कहा गया था कि सितंबर 1919 में रॉयल एयर फोर्स (आरएएफ) का 99 स्क्वाड्रन उमबाला (Umbala) में बेस था. तब अंबाला को उमबाला ही कहा जाता था. बताया जाता है कि 99 स्क्वाड्रन को बाद में 114 आरएफए स्क्वॉड्रन बना दिया गया था.

1920 में अंबाला एयरबेस को बनाया गया था, सेना मुख्यालय: इसके बाद फिर 114 आरएफए स्क्वाड्रन को 29 आरएफए स्क्वाड्रन बना दिया गया, जो फरवरी, 1939 तक अंबाला एयरबेस से संचालित होता रहा. 1920 में अंबाला एयर फोर्स स्टेशन को आरएएफ इंडिया कमांड के मुख्यालय में बदल दिया गया था. इसके बाद 1922 में सेना मुख्यालय को शिमला में ट्रांसफर कर दिया गया था.

1938 में बनाया गया स्थायी वायुसेना अड्डा : अंबाला एयर फोर्स स्टेशन से शुरुआती दिनों के एयरक्राफ्ट डी हैविलैंड 9 ए और ब्रिस्टल F2B उड़ान भरते थे. जैसे-जैसे भारत में हवाई परिचालन बढ़ने लगा, उसके बाद अधिक अधिकारियों को अंबाला भेजा जाना शुरू कर दिया गया. अंबाला एयरफोर्स स्टेशन को 18 जून, 1938 को एक स्थायी वायुसेना अड्डा बना दिया गया. यहीं पर एडवांस्ड फ्लाइंग ट्रेनिंग स्कूल भी था.

सुब्रतो मुखर्जी बने थे पहले स्क्वाड्रन लीडर : 1939 में भारतीय वायुसेना के इतिहास में महत्वपूर्ण घटना हुई थी. तत्कालीन फ्लाइट लेफ्टिनेंट (बाद में एयर मार्शल) सुब्रतो मुखर्जी, अंबाला में स्क्वाड्रन लीडर बने थे. स्क्वाड्रन की कमान संभालने वाले वह पहले भारतीय अधिकारी थे. उन्होंने सीएच स्मिथ से कमान ली थी. 1947-48 में कश्मीर घाटी से घुसपैठियों को खदेड़ने में अंबाला एयरबेस का अहम योगदान था.

अर्जन सिंह ने संभाली थी अंबाला एयरबेस की कमान : आजादी मिलने के बाद अंबाला में भारतीय वायुसेना ने अपने 1 स्क्वाड्रन को तैनात किया था. आजादी के तुरंत बाद भारतीय वायु सेना के मार्शल अर्जन सिंह ने अंबाला एयरबेस की कमान संभाली थी. उन्होंने

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले के उपर से पहले फ्लाईपास्ट का नेतृत्व किया था.

एरियल फोटोग्राफिक सर्वेक्षण का केंद्र भी बनाया गया : आजादी के बाद के शुरुआती वर्षों में भारत सरकार पूर्वी सीमा के इलाकों में हवाई मार्ग से ही पहुंच सकती थी और इस दौरान अंबाला एयरबेस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. तब इसे एरियल फोटोग्राफिक सर्वेक्षण का केंद्र भी बनाया गया था. अंबाला एयरबेस से वैम्पायर्स, टोफोरिस, मिस्ट्रेस और हंटर्स एयरक्राफ्ट का संचालन कॉम्बाट अभियानों में किया गया था.

1965 में पाकिस्तान ने एयरबेस पर किया था हमला : 1965 में पाकिस्तान के B-57 बमवर्षकों द्वारा अंबाला एयरबेस पर हमला किया गया था. 20 सितंबर, 1965 को तड़के 3 बजे पाकिस्तान के फाइटर जेट ने अंबाला एयरबेस को निशाना बनाया. मकसद अंबाला एयरबेस को ध्वस्त करना था लेकिन बम पास वाली जगह पर गिरा. एयरबेस के हैंगर और रनवे सुरक्षित थे.

1971 में पाकिस्तान ने किया था हमला : 1971 में फिर पाकिस्तान ने अंबाला समेत कई एयरफोर्स स्टेशन को तबाह करने की कोशिश की थी, लेकिन वह नाकाम हुए थे. 14 दिसंबर, 1971 को पाकिस्तान वायु सेना के एफ-86 जेट विमानों ने श्रीनगर हवाई अड्डे को तबाह करने की कोशिश की. अंबाला एयरबेस के 18 स्क्वाड्रन में तैनात फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों अपने जीनैट विमान के साथ रूटीन फ्लाइंग पर थे.

निर्मल जीत सिंह सेखों ने दिया था जवाब : फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों आदेश के बाद उड़ान भरने की तैयारी में थे, लेकिन आदेश नहीं आया. इसके बाद वह बिना आदेश उड़े. जैसे ही वह उड़े, अचानक हवाई अड्डे पर बम गिरा. इसके बाद उन पर पाकिस्तान के 6 सेबर फाइटर जेट ने हमला कर दिया. निर्मल जीत सिंह सेखों ने दो जेट मार गिराए. आखिर में उनका जेट विमान भी हादसे का शिकार हो गया.

बहादुरी के लिए मिला था परमवीर चक्र : निर्मल जीत सिंह सेखों ने अंतिम सांस तक उन पाकिस्तानी फाइटर जेट्स से संघर्ष करते रहे. सेखों की बहादुरी की बदौलत पाकिस्तानी वायुसेना अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाई थी. इसके बाद शहीद निर्मल जीत सिंह सेखों को परमवीर चक्र (मरणोपरान्त) दिया गया था. वह इकलौते वायुसैनिक हैं, जिन्हें परमवीर चक्र भी मिला है. अंबाला एयरबेस को शहीद निर्मल पर गर्व है.

यहीं से मिराज-2000 ने किया था ऑपरेशन सफेद सागर : 1980 में अंबाला एयरबेस पर ही जगुआर एयरक्राफ्ट की तैनाती की गई थी. इसके बाद साथ ही मिग-21 बाइसन और मिराज-2000 को भी तैनात किया गया था. 1999 कारगिल युद्ध के दौरान अंबाला एयरबेस से ही मिराज-2000 के जरिए पाकिस्तानी घुसपैठियों के खिलाफ ऑपरेशन सफेद सागर को अंजाम दिया गया था.

अंबाला एयरबेस से उड़े बालाकोट एयरस्ट्राइक : फरवरी 2019 में बालाकोट एयरस्ट्राइक को भी अंबाला एयरबेस से उड़े मिराज-2000 विमानों ने अंजाम दिया था. इस एयरस्ट्राइक के जरिए पाकिस्तान के बालाकोट में आतंकियों के शिविरों को तबाह कर दिया गया था.1999 के कारगिल युद्ध के समय में भी अंबाला के इस एयरबेस ने अहम भूमिका निभाई थी. जब 234 ऑपरेशन उड़ानें यहाँ से भरी गई थी.

नाल एयरबेस शिफ्ट किया गया मिग-21 बाइसन स्क्वाड्रन : अंबाला एयरबेस में राफेल के आने से पहले मिग 21 बाइसन को नाल (जोधपुर) एयर बेस शिफ्ट कर दिया गया है. उसकी जगह राफेल की तैनाती हो रही है. राफेल के लिए एयरफोर्स की 17वीं गोल्डन एरो स्क्वाड्रन को 2019 में सितंबर में फिर से शुरू किया गया. इस स्क्वाड्रन की स्थापना 1 अक्टूबर, 1951 में हुई थी और यह 2016 तक मिग-21 विमानों का संचालन करती थी.

अंबाला एयरबेस में लैंड हुए 5 राफेल लड़ाकू विमान : भारतीय वायुसेना के इतिहास में 29 जुलाई, 2020 अंबाला एयरबेस में महत्वपूर्ण दिन रहा. यही वो दिन है जब फ्रांस से 5 राफेल फाइटर विमान अंबाला एयरबेस पर लैंड हुए और भारतीय वायुसेना का अंबाला एयरबेस बाहें खोलकर राफेल विमानों के स्वागत में खड़ा रहा. राफेल भारतीय वायुसेना के बेड़े की खास ताकत के तौर पर जंगी बेड़े का हिस्सा बना. जब ये लड़ाकू विमान अंबाला लैंड हुए तो यहाँ पर वाटर सैल्यूट के जरिये इनका भव्य स्वागत भी किया गया. भारतीय वायुसेना प्रमुख आर. के. एस. भदौरिया के साथ-साथ अन्य उच्च अधिकारी भी इस दौरान अंबाला में मौजूद रहे, राफेल फाइटर विमान को भारत लाने वाले सभी पायलटों से वायुसेना प्रमुख ने मुलाक़ात की और उन्हें बधाई दी.

फ्रांस से मिले लड़ाकू विमान राफेल को भारतीय वायुसेना में शामिल हुए दो साल हो चुके है. इन दो सालों में राफेल ने श्रीनगर और लेह-लद्दाख के लिए उड़ानें भरीं, वहीं पाकिस्तान और चीन को संदेश भी दिया है. राफेल जब भी अंबाला एयरबेस से उड़ान भरता है तो इसकी गर्जना से सैन्य जवानों के साथ-साथ स्थानीय लोगों में एक अलग तरह का जोश भर जाता है.

अत्याधुनिक हथियारों से लैस यह लड़ाकू विमान भारत के लिए गेम चेंजर हैं. वायुसेना में राफेल को शामिल करने के लिए अंबाला एयरबेस पर 10 सितंबर, 2020 को इंडक्शन सेरेमनी हुई थी. समारोह में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सहित फ्रांस की मिनिस्टर आफ आरम्ड फोर्सेज फ्लोरेंस पार्ले भी शामिल हुईं थीं. हमें इस बात का बहुत गर्व है कि राफेल फाइटर विमान फ्रांस से सीधा अंबाला एयरबेस पर लैंड हुए.

रीना
क्षे.का.जालंधर

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

"माँ मैं अभी छोटी हूँ, अभी शादी नहीं करना चाहती हूँ. कृपया दादाजी और पिताजी से बात करें कि उन्हें मुझे आगे पढ़ने देना चाहिए" प्रेरणा ने यह बात अपनी माँ को बताई लेकिन उसकी माँ पार्वती खुद असहाय थी. खुद उनकी शादी 12 साल की उम्र में हुई थी और अब इतिहास अपने आप को दोहरा रहा था. प्रेरणा के पिता, केशव एक किसान थे. उनके अनुसार बेटियों की शिक्षा पर कोई खर्च करने की आवश्यकता नहीं थी. उनकी सोच थी कि बेटियों की जितनी जल्दी हो सके शादी कर देनी चाहिए, ताकि जिम्मेदारियों से छुटकारा मिल जाए. हालांकि पार्वती कभी नहीं चाहती थी कि उनकी बेटी को जीवन में ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़े जिसका उसे खुद सामना करना पड़ा था. लेकिन वह घर के मुखिया के फैसले के खिलाफ बोलने में संकोच कर रही थी. साहस जुटा कर वह अपने पति के पास गई और कहा "क्या हमें अभी अपनी बेटी का विवाह करना जरूरी है? वह पढ़ाई में बहुत अच्छी रही है" केशव के पास कोई जवाब नहीं था. उन्होंने अपनी पत्नी को कोई स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता महसूस नहीं की. जब पार्वती ने उन्हे अपने फैसले को बदलने का आग्रह दोबारा से किया तो उन्होंने कहा, "तुम एक महिला हो और तुम्हें अपने पति के फैसले पर सवाल करने का कोई अधिकार नहीं है. अपने पति के शब्दों को सुनकर पार्वती निशब्द रह गयी. उसकी आँखों में आँसू थे, वह रात भर सो न सकी. उसे अपनी बेटी की इस छोटी सी उम्र में शादी करने का विचार बार-बार दुख दे रहा था. इस कारण वह बहुत परेशान थी. उसने दृढ़ संकल्प किया कि वो अपनी बेटी की रक्षा एवं उसकी शिक्षा के लिए सभी बाधाओं के खिलाफ खड़ी होगी. पार्वती की एक मित्र थी जो पास के शहर में रहती थी. उसने उसे बुलाया और मदद मांगी. उनकी मित्र जिला बाल कल्याण समिति की सदस्य थी जो सरकार की तरफ से बाल कल्याण के लिए काम करती थी. उससे आश्वासन मिलने के बाद पार्वती की चिंता कुछ कम हुई. अगले दिन सुबह प्रेरणा ने पूरा साहस जुटाया और स्कूल के लिए तैयार हो गयी. जब उसके पिता ने उसे स्कूल की पोशाक में देखा तो उस पर चिल्लाया, "तुम स्कूल की पोशाक में क्यों हो? मैंने तुम्हें कल बताया था कि तुझे आगे नहीं पढ़ना है. कुछ खाना पकाना और सिलाई कढ़ाई सीखो, क्योंकि जल्दी ही तेरी शादी करनी है".

"प्रेरणा के मुख से एक भी शब्द नहीं निकला, उसकी आँखों से आँसू छलक गए और वह पूरी ताकत से खेतों की और भाग गयी. वह बहुत परेशान और निराश होकर एक कुएं के पास बैठ गयी. उसके मन में कुएं में कूदने का विचार आया. इससे पहले कि वह कूद पाती, अपने कुएं की दीवार पर चढ़ने का बार-बार प्रयास कर रही छिपकली को देखा. छिपकली बार-बार नाकाम होने के बाद भी चढ़ाई करने की कोशिश तब तक करती रही, जब तक कि वह दीवार पर सफलतापूर्वक चढ़ न गयी. छिपकली ने प्रेरणा के चेहरे पर मुस्कुराहट ला दी. वह घर वापस चली गई. जहां उसने देखा कि उसकी माँ एक महिला के साथ कुछ चर्चा कर रही थीं. "प्रेरणा ने उसे पहचाना नहीं, लेकिन जब उस महिला ने उसे देखा तो मुस्कुराते हुए पूछा, "क्या आप अपनी पढ़ाई पूरी करना चाहती हो?" प्रेरणा, जो अब अपने सपने पूरे करने के लिए और अधिक दृढ़ संकल्पित थी, ने कहा "हाँ, मैं अपनी पढ़ाई पूरी करना चाहती हूँ" मुझे बड़ा होकर कुछ बनना है और अपने गाँव का नाम रोशन करना है. मेरे रास्ते में कोई भी बाधा आए मैं उसका डटकर सामना करूँगी.

महिला ने केशव की तरफ देखकर कहा: "यदि आप इस छोटी बच्ची की शादी करने की कोशिश करेंगे तो मुझे कानून के उल्लंघन के लिए आपके खिलाफ मुकदमा दायर करके कठोर कार्रवाई करनी पड़ेगी. जब महिला ने केशव को समझाया तो उसे अपनी भूल का एहसास हुआ. चर्चा के बाद, महिला वहाँ से चली गयी और केशव ने अपनी पत्नी से कहा कि प्रेरणा अपनी पढ़ाई जारी रख सकती है. प्रेरणा ने अपनी माँ को गले लगा लिया और उसे छिपकली की कहानी के बारे में बताया जिसने उसे वापस लौटकर हजारों बाधाओं के होते हुए अपने सपने पूरे करने की प्रेरणा दी.

हरेन्द्र सिंह
सोनीपत शाखा, करनाल

हरियाणा के महान स्वतंत्रता सेनानी

सर छोटू राम चौधरी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में छोटू राम चौधरी का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है. उन्होंने अपनी बुद्धिजीविता से आम नागरिकों को एकजुट कर अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलन में अमूल्य भूमिका का निर्वहन किया. छोटूराम चौधरी एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ तथा पत्रकार थे. सर छोटूराम को नैतिक साहस की मिसाल माना जाता है.

जीवनी: सर छोटू राम, का जन्म 24 नवंबर, 1881 में रोहतक जिले (वर्तमान में झज्जर जिला) के छोटे से गांव गढ़ी सांपला में बहुत ही साधारण परिवार में हुआ था. छोटूराम का असली नाम राय रिछपाल था. वे अपने भाइयों में से सबसे छोटे थे इसलिए सारे परिवार के लोग इन्हें छोटू कहकर पुकारते थे. स्कूल रजिस्टर में भी इनका नाम छोटूराम ही लिख दिया गया और वह महापुरुष के रुप में भी छोटूराम के नाम से ही विख्यात हुए. जीवन के आरंभिक समय में ही सर्वोत्तम आदर्शों और युवा चरित्रवान छात्र के रूप में वैदिक धर्म और आर्यसमाज में अपनी आस्था बना ली थी.

सर छोटूराम चौधरी ने वर्ष 1911 में इन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त की. यहां रहकर छोटूराम जी ने मेरठ और आगरा डिवीजन की सामाजिक दशा का गहन अध्ययन किया तथा वर्ष 1912 में चौधरी लालचंद के साथ वकालत आरम्भ कर दी और उसी साल जाट सभा का गठन किया. प्रथम विश्वयुद्ध के समय में चौधरी छोटूराम जी ने रोहतक से 22,144 जाट सैनिक भर्ती करवाये. उन्होने भारतीय उपमहाद्वीप के . गरीबों के हित में सदैव काम किया. इस उपलब्धि के लिए, उन्हें सन् 1937 में 'नाइट' की उपाधि प्रदान की गई. चौ. छोटूराम ने राष्ट्र के स्वाधीनता संग्राम में डटकर भाग लिया. सन् 1916 में पहली बार रोहतक में कांग्रेस कमेटी का गठन हुआ जिसमें चौ. छोटूराम रोहतक कांग्रेस कमेटी के प्रथम प्रधान बने.

अगस्त 1920 में चौ. छोटूराम ने कांग्रेस छोड़ दी क्योंकि वे गांधी जी के असहयोग आंदोलन से सहमत नहीं थे. उनका विचार था कि इस आंदोलन से किसानों का हित नहीं होगा. उनका मत था कि आजादी की लड़ाई संवैधानिक तरीके से लड़ी जाए. कुछ बातों पर वैचारिक मतभेद होते हुए भी चौधरी साहब महात्मा गांधी की महानता के प्रशंसक रहे और कांग्रेस को अच्छी जमात कहते थे.

एक तरफ गांधी जी का असहयोग आंदोलन था तो दूसरी ओर प्रांतीय स्तर पर चौधरी छोटूराम और चौ. लालचंद आदि जाट नेताओं ने अंग्रेजी हुकूमत के साथ सहयोग की नीति अपना ली थी. पंजाब में मांटेग्यू चैम्सफोर्ड सुधार लागू हो गए थे. सर फ़जल हुसैन ने खेतिहर किसानों की एक पार्टी जमींदारी पार्टी खड़ी कर दी चौ. छोटूराम एवं उनके साथियों ने सर फ़जल हुसैन के साथ गठबंधन कर लिया और सर सिकंदर हयात खान के साथ मिलकर यूनियनिस्ट पार्टी का गठन किया.

चौधरी छोटूराम की लेखनी जब लिखती थी तो आग उगलती थी. उनके 'ठग बाजार की सैर' और 'बेचारा किसान' के लेखों में से 17 लेख जाट गजट में छपे. सन् 1937 में सिकन्दर हयात खान पंजाब के पहले प्रधानमंत्री बने और झज्जर के ये जुझारू नेता चौ. छोटूराम विकास व राजस्व मंत्री बने और गरीब किसान के मसीहा बन गए.

सर छोटू राम चौधरी के महत्वपूर्ण योगदान

साहूकार पंजीकरण एक्ट - 1938 : यह कानून 02 सितंबर, 1938 को प्रभावी हुआ था. इसके अनुसार कोई भी साहूकार बिना पंजीकरण के किसी को कर्ज़ नहीं दे पाएगा.

गिरवी जमीनों की मुफ्त वापसी एक्ट - 1938 : यह कानून 09 सितंबर, 1938 को प्रभावी हुआ. इस अधिनियम के जरिए जो जमीनें 8 जून, 1901 के बाद कुर्की से बेची हुई थी तथा 37 सालों से गिरवी चली आ रही थीं, वो सारी जमीनें किसानों को वापस दिलवाई गईं.

कृषि उत्पाद मंडी अधिनियम - 1938 : यह अधिनियम 05 मई, 1939 से प्रभावी माना गया. इस अधिनियम के तहत किसानों को उसकी फसल का उचित मूल्य दिलवाने का नियम बना.

व्यवसाय श्रमिक अधिनियम - 1940 : यह अधिनियम 11 जून, 1940 को लागू हुआ. सप्ताह में एक दिन की छुट्टी वेतन सहित और दिन में 8 घंटे काम करने के नियत किये गए.

कर्जा माफी अधिनियम - 1934 : यह अधिनियम चौधरी छोटूराम ने 08 अप्रैल, 1935 में किसान व मजदूर को सूदखोरों के चंगुल से मुक्त कराने के लिए बनवाया. इस कानून के तहत अगर कर्ज का दुगुना पैसा दिया जा चुका है तो ऋणी ऋण-मुक्त समझा जाएगा.

इस प्रकार सर छोटू राम चौधरी अपने संगठन कौशल एवं बुद्धिमता के बदौलत तत्कालीन पंजाब में लगातार प्रभावी भूमिका निभाते रहे. सर छोटू राम चौधरी ने जीवन पर्यंत अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखीं परंतु कभी भी भारत माता के सम्मान पर आंच नहीं आने दी. हालांकि उनके जीवन काल में भारत स्वतंत्र नहीं हो पाया परंतु उनके द्वारा दर्शाए गए मार्ग पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी चलते रहे, अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद भी हुआ परंतु भारत मां के इस महान सपूत का 09 जनवरी 1945 को देहावसान हो गया. सर छोटू राम चौधरी भले ही हमारे बीच में नहीं रहे परंतु उनके द्वारा किए गए कार्य तथा अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष हम सब के लिए प्रेरणास्त्रोत रहेंगे.

रविनेश कुमार
क्षे. का., पटना

हरियाणा की प्रसिद्ध महिलाएं

हरियाणा की महिलाएं आज देश में हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही है. चाहे खेल का क्षेत्र हो, फिल्म का क्षेत्र हो, संगीत का क्षेत्र हो, विज्ञान का क्षेत्र हो हर क्षेत्र में हरियाणा की बेटियाँ अग्रणी भूमिका निभा रही है. कुछ प्रसिद्ध महिलाओं का जिक्र इस लेख के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं -

गीता फोगाट : हरियाणा के जींद जिले की गीता फोगाट 2010 राष्ट्रमंडल खेलों में कुश्ती में स्वर्ण जीत कर भारत की पहली महिला खिलाड़ी बन गई. गीता और उनकी बहन बबीता के संघर्ष और सफलता को बॉलीवुड फिल्म दंगल में भी दिखाया गया है.

रानी रामपाल : भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान रानी रामपाल कुरुक्षेत्र के शाहबाद की रहने वाली है. टोक्यो ओलंपिक में भारतीय महिला हॉकी टीम की जीत के साथ हरियाणा के कुरुक्षेत्र के छोटे से कस्बे शाहबाद का भी नाम रौशन हुआ. राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से भी इन्हें सम्मानित किया गया.

अंकित जागलान : चंडीगढ़ के डीएवी कॉलेज की छात्रा अंकित जागलान को भारत के सर्वश्रेष्ठ एयर विंग एनसीसी कैडेट के रूप में चुना गया और उन्हें प्रधानमंत्री द्वारा भी सम्मानित किया गया. अंकित जागलान, हरियाणा के हिसार जिले की रहने वाली है. हिसार की यह बोल्ड लड़की एक लड़ाकू पायलट बनने की इच्छा रखती है.

कविता दलाल : कविता दलाल भारतीय पेशेवर पहलवान है जो कि वर्ल्ड रेस्लिंग एंटेरटेनमेंट (डब्ल्यूडब्ल्यूई) में अपने रिंग नाम 'कविता देवी' नाम से जानी जाती है. कविता भारतीय राष्ट्रीयता की डब्ल्यूडब्ल्यूई में कुश्ती करने वाली पहली महिला पहलवान है. कविता हरियाणा के जींद जिले के मालवी (जुलाना) गांव की डब्ल्यूडब्ल्यूई विकास अनुबंध पर हस्ताक्षर करने वाली पहली भारतीय महिला भी है. अपनी कुश्ती के कौशल से लोगों का ध्यान और प्रशंसा दोनों हासिल कर कविता आज घर-घर में पहचानी जाती है.

मनु भेकर : झज्जर जिले के गोरिया गाँव की रहने वाली 16 वर्षीय मनु भेकर ने शूटिंग प्रोडीजी ने ऑस्ट्रेलिया के ब्रिस्बेन में बेलमोंट शूटिंग रेंज में महिला 10 एम एयर पिस्तौल प्रतियोगिता में 240.9 के नए राष्ट्रमंडल खेलों के रिकार्ड स्कोर के साथ शूटिंग में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाया. मनु हरियाणा की युवा लड़कियों के लिए प्रेरणा बन चुकी है.

मानुषी छिल्लर : प्रतिष्ठित मिस इंडिया प्रतियोगिता में हरियाणा के सोनीपत जिले की मानुषी छिल्लर ने 'मिस वर्ल्ड -2017' जीतकर पूरे देश को गौरवान्वित कर दिया. 'प्रियंका चोपड़ा' वर्ष 2000 में 'मिस वर्ल्ड' बनी थी उसके 17 वर्षों बाद भारत की झोली में यह खिताब आया है. 108 अन्य प्रतिभागियों के बीच जीतने के बाद छिल्लर हरियाणा की हजारों युवा लड़कियों के लिए प्रेरणा बनी.

परिणति चोपड़ा : हरियाणा के अंबाला की परिणति चोपड़ा हिन्दी फिल्मों की एक प्रसिद्ध अभिनेत्री है. अभिनय के साथ-साथ हिन्दी संगीत में भी परिणति ने अपना नाम बनाया. परिणति चोपड़ा को फिल्म 'इश्कजादे' में जोया की भूमिका से प्रसिद्धि प्राप्त हुई.

अभिलाषा बराक : हरियाणा के पंचकुला की अभिलाषा बराक भारतीय सेना में पहली 'कॉम्बेट एविएटर' (लड़ाकू विमान चालक) बनी. सेना की 'एविएशन कोर' में पहली बार महिला पायलट चुनी गई अभिलाषा बराक ने 25 मई, 2022 को महिला लड़ाकू एविएटर का तमगा संभाला. अभिलाषा बराक महिलाओं के लिए एक मिसाल है.

प्रियंका बेनीवाल : प्रियंका बेनीवाल हरियाणा के सूलीखेड़ा फ़तेहाबाद की प्रथम महिला पायलट बनी. ये किसान परिवार से ताल्लुक रखती है. उनके पिता और भाई खेती करते है लेकिन प्रियंका बचपन से ही आसमान में उड़ते हवाई जहाजों को देखकर उन्हें छूने के सपने देखती थी.

साक्षी मलिक : हरियाणा के रोहतक जिले के मोखरा गांव की प्रथम ओलंपिक कुश्ती कांस्य पदक विजेता साक्षी मलिक प्रतिभा की धनी है. रियो 2016 ओलंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान बनी और महिला पहलवानों की आने वाली पीढ़ियों की आदर्श बन गई.

संतोष यादव : हरियाणा के रेवाड़ी जिले के छोटे से गाँव जोनियावास की संतोष यादव, दुनिया की ऐसी पहली महिला है जिन्होंने माउंट एवरेस्ट पर दो बार चढ़ाई की. संतोष ने मई 1992 और मई 1993 में माउंट एवरेस्ट को फतेह किया. जिस गाँव में संतोष का जन्म हुआ, वहाँ उन दिनों लड़कियों की पढ़ाई पर पाबंदी थी. सामाजिक पाबंदियों के साथ-साथ संतोष ने पर्वतारोहण के क्षेत्र में खास शिक्षा हासिल की और अपने सपनों को साकार किया.

दीपा मलिक : हरियाणा के सोनीपत जिले के भैंसवाल गाँव की दीपा मलिक जोवलीन थ्रो के साथ-साथ मोटर रेस्लिंग से जुड़ी एक विकलांग भारतीय खिलाड़ी है, जिन्होंने वर्ष 2016 में 'पैरा ओलंपिक' में शॉटपुट में रजत पदक जीतकर इतिहास रचा. पैरालंपिक खेलों में दीपा हरियाणा के साथ-साथ भारत की भी पहली भारतीय विजेता महिला बन गई.

गीतिका जाखड़ : हरियाणा के हिसार जिले के अग्रोहा गाँव की गीतिका जाखड़ वर्ष 2006 में कुश्ती में प्रथम महिला 'अर्जुन पुरस्कार' पहलवान विजेता बनी. गीतिका युवा महिलाओं के लिए एक मिसाल हैं.

सुनील डबास : हरियाणा के झज्जर जिले के मोहम्मदपुर माजरा गाँव के किसान परिवार की बेटी सुनील डबास का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज है. सुनील डबास हरियाणा की पहली महिला कबड्डी कोच बनी. उन्हें एशिया के अग्रणी कबड्डी कोच के रूप में नामित किया गया है. इन्हें दो अग्रणी अवार्ड द्रोणाचार्य (2012) पद्मश्री अवार्ड (2014) मिले हैं.

मेघा जैन : हरियाणा के फरीदाबाद की मेघा जैन वर्ष 2017 में मिग -29 उड़ाने वाली हरियाणा के साथ-साथ देश की पहली सिविलियन भारतीय महिला बनी है. अपने कैरियर के सिलसिले में मेघा जैन जब रूस गई तो वहां फाइटर विमान मिग-29 को साढ़े 18 हजार मीटर की ऊंचाई पर 1850 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से उड़ान भरने का मौका मिला.

डॉ. मुक्ता : डॉ. मुक्ता हरियाणा साहित्य अकादमी की प्रथम महिला निदेशक हैं. ये हरियाणा ग्रंथ अकादमी की संस्थापक निदेशक रह चुकी हैं. इन्हें तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा हिन्दी साहित्य अकादमी में उल्लेखनीय योगदान के लिए सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया. साहित्य की सभी विधाओं में इनकी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. आपको तीन दर्जन से ज्यादा राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय संगठनो द्वारा सम्मानित किया जा चुका है.

सुषमा स्वराज (राजनीतिज्ञ) :- सुषमा स्वराज का जन्म 14 फरवरी, 1952 को अंबाला में हुआ था. उन्होंने एस. डी. कॉलेज, अंबाला छावनी से स्नातक तथा पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से कानून की डिग्री ली. पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने जयप्रकाश नारायण के आंदोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया. आपातकाल का पुरजोर विरोध करने के बाद वे सक्रिय राजनीति से जुड़ गई. वर्ष 2014 में उन्हें भारत की पहली महिला विदेश मंत्री होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री एवं देश के किसी राजनीतिक दल की पहली महिला प्रवक्ता होने की उपलब्धि भी उन्हीं के नाम दर्ज हैं. सुषमा स्वराज की हिन्दी पर अच्छी पकड़ थी. विश्व हिन्दी सम्मेलन में वे बढ़ चढ़ कर भाग लेती थीं और हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा बनाने के लिए भी उन्होंने कई प्रयत्न किए. उन्हें अनेक भाषाओं का ज्ञान था. भाषाज्ञन के साथ वे प्रखर और ओजस्वी वक्ता, प्रभावी सांसद और कुशल प्रशासक थीं. 6 अगस्त 2019 को दिल्ली में उनका निधन हो गया.

मोहम्मद रिजवान
क्षे.का. जालंधर

हरियाणा में दो साल

मैं बिहार से हूँ, जो कि सबसे पिछड़े राज्य में से एक है, जबकि हरियाणा देश के विकसित राज्यों में से एक है. जून 2020 में कोविड के पहले चरण के बीच मेरा तबादला करनाल, हरियाणा हो गया. कोविड काल में किराए के लिए घर तलाशना सबसे कठिन काम होता है क्योंकि लोग एक-दूसरे को चलता देखकर भी डर जाते थे. लेकिन एक एजेंट की मदद से मकान मालिक मुझे किराए पर घर देने को तैयार हो गया.

घर ढूढ़ने के लिए एक मानदंड यह था कि भारतीय शौचालय बाथरूम में होना चाहिए क्योंकि मेरे माता-पिता बिहार में गाँव की पृष्ठभूमि से थे और उन्होंने कभी पश्चिमी शौचालय का इस्तेमाल नहीं किया था और वे मुझसे मिलने आ सकते थे. ढूँढना बहुत मुश्किल था लेकिन मुझे एक घर मिला जो मेरे बजट के साथ-साथ भारतीय शौचालय और अन्य मानदंडों में भी था. यह वास्तव में बगीचे के नजारों वाला एक अच्छा घर है और दूसरी दीवार देखने में लगभग 500 मीटर दूर लगती थी. इसलिए मैंने घर के लिए एक महीने का किराया दिया. कार्यालय स्टाफ के सदस्यों में से एक को घर दिखाने के लिए मैं दूसरे दिन घर गया और बातचीत के दौरान घर की महिला मकान मालिक के साथ वार्तालाप किया, मैंने अपने माता-पिता के बारे में भी बात की. अगले दिन मेरे दलाल ने मुझे फोन किया और बताया कि घर के मालिक ने मेरा अग्रिम वापस कर दिया है और अपना घर किराए पर देने के लिए तैयार नहीं है. जब मैंने पूछा कि वह तैयार क्यों नहीं है तो उसने कहा कि मेरे माता-पिता को मेरे साथ नहीं रहना चाहिए.

मैंने खुशी-खुशी अपना पैसा मालिक से वापस ले लिया, क्योंकि मैं घर बदल सकता हूँ लेकिन मैं अपने माता-पिता को नहीं बदल सकता. अब फिर से तलाशी में एजेंट की मदद से घरों की तलाशी कर रहा हूँ, देखा दर्जनों घर कुछ अच्छे थे लेकिन किराया उस लीज राशि से अधिक है जो बैंक मुझे प्रदान कर रहा है. जो मकान मेरी लीज की योग्यता पर उपलब्ध हैं वो मेरे लिए अनुकूल नहीं हैं.

घर ढूढ़ने के दौरान, मुझे पता चला कि आमतौर पर हरियाणा में लोग शाकाहारी होते हैं और वे केवल शाकाहारी किराएदार को ही पसंद करते हैं. यहाँ पर रोड और चौक भी संतों के नाम पर होते हैं. जैसे एक प्रसिद्ध संत निक्का सिंह या निर्मल कुटिया चौंक के नाम पर था और दूसरा संत ब्रह्मानन्द के नाम पर था. 3-4 दिनों की खोज के बाद मुझे एक और घर मिला, और इसने मेरी पत्नी के सभी मानदंडों को पूरा किया और मेरे माता-पिता के लिए भारतीय शौचालय भी इसमें था. लेकिन घर के लिए मुझे अपने जेब से 5000 रू. ज्यादा देने थे. घर अपेक्षाकृत बड़ा है. शहर की सफाई वास्तव में मेरे आने वाले सभी मित्रों और रिश्तेदारों को प्रभावित करती है. मैंने देखा की सफाई कर्मचारी आधी रात को भी काम कर रहे हैं. कहते हैं न स्वच्छता भगवान के निकट में है. मैंने अपने परिवार को कोरोना काल में ही स्थानांतरित कर दिया, घर के मालिक ने मुझे अपने परिवार से कोविड-प्रमाण पत्र पेश करने के लिए कहा. हमने कल्पना चावला अस्पताल में जांच कराई और कोविड प्रमाणपत्र पेश किया. कल्पना चावला हरियाणा की सबसे प्रेरक बेटी और एक राष्ट्रीय प्रतीक है.

जैसे ही मैंने अपने परिवार के साथ घर में प्रवेश किया, मकान मालिक का एक बड़ा कुत्ता मेरे पास आकर खड़ा हो गया. मेरी पत्नी डर गई और मुझसे साफ-साफ कह दिया की अगर उसे कुत्ते का पता होता तो वह घर में नहीं आती. लेकिन मुझे नहीं पता की यह कुत्ता मुझसे कैसे मिलनसार हो गया और सुबह-शाम हमारी मंजिल पर आने लगा. दिन-ब-दिन मेरी पत्नी और बेटी की भी उस कुत्ते से दोस्ती हो गई जिसका नाम बूजों है.

मालिकों के बच्चे बूजों को ही नहीं, गली के कुत्तों को भी खिलाते हैं. जिस तरह से गली के कुत्ते के साथ व्यवहार किया जाता है. उससे पता चलता है कि वे प्यार और सम्मान से भरे हुए हैं. कुत्ते की मस्ती और प्यार सिर्फ वही लोग जानते हैं, जिनके पास कुत्ता होता है वे उसे प्यार करते हैं और सिर्फ प्यार करते हैं.

हरियाणा एक समृद्ध राज्य है जो हमारे घर के पास के कई पार्कों में देखा जा सकता है, पार्क बच्चों के खिलौनों से सुसज्जित है. हरियाणा में पानी और बिजली पर्याप्त है. दूसरी मंजिल पर भी नगर निगम का पानी आता है. मेरे मन में एक सवाल यह भी उठता है कि हम इंसान अपनी जरूरत के लिए पानी के ट्यूबवेल का इस्तेमाल कर रहे हैं, नलकूप से पानी निकाला जाता है लेकिन पानी तो सभी जानवरों और पौधों के लिए है, दूसरे जानवरों को पानी कैसे मिलेगा, पौधों को पानी कैसे मिलेगा, ऐसा लगता है कि परोक्ष रूप से हम सभी जानवरों और पौधो को मार रहे हैं.

आमतौर पर बाइक और कार घर के बाहर खड़ी होती है लेकिन यह सुरक्षित है. धीरे-धीरे कोविड के खतरे के बादल

छँटते जा रहे हैं और हम सामान्य जीवन का आनंद लेने लगे हैं. पड़ोसी भी अच्छे हैं, मेरी बेटी पड़ोसी बच्चों के साथ खेलने लगी है. हमेशा की तरह लोगों ने हमारे बिहारी लहजे की नकल करना शुरू कर दिया. मुझे लगता है कि हिन्दी भाषा में उसी स्थान पर है जैसे भोजपुरी/बिहारी भारतीय भाषाओं में है. मेरे कार्यालय में राजभाषा को बढ़ावा दिया जाता है. यह वास्तव में हमारी भाषा को बढ़ावा देने का एक अच्छा साधन है. अपनी राजभाषा को बढ़ावा देने की इस पद्धति के अलावा, अगर हम जीडीपी, शिक्षा स्वास्थ्य और अन्य बुनियादी ढांचे के मामले में अपने देश में सुधार कर सकते हैं तो यह निश्चित रूप से हिन्दी की स्थिति में मदद कर सकता है.

इस बीच मेरे माता-पिता भी सावन के महीने में इस शहर में आए थे, मेरे पिता थोड़े बीमार थे. मेरे माता-पिता ने प्रसिद्ध कुरुक्षेत्र का भी दौरा किया, जिसे महाभारत में धर्मक्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है. हमने गीता ज्ञान स्थल का दौरा किया जहां श्रीकृष्ण ने अर्जुन को प्रसिद्ध गीता ज्ञान दिया था. मैंने हमेशा अर्जुन और श्रीकृष्ण के जीवन की एक घटना पर विचार किया. प्रसिद्ध कहानी है- महाभारत का युद्ध शुरू होने से पहले, अर्जुन और दुर्योधन श्रीकृष्ण से मदद मांगने गए. श्रीकृष्ण ने उन दोनों के लिए दो विकल्प दिए. एक तरफ पूरी अक्षय सेना थी और दूसरी तरफ केवल श्रीकृष्ण और वह बिना किसी हथियार के थे. अर्जुन को पहले पूछने का मौका मिला और उन्होंने दूसरा विकल्प मांगा कि श्रीकृष्ण बिना भुजाओं के हैं और इसलिए दुर्योधन को खुशी-खुशी पूरी अक्षुणी सेना मिल गई, जिसका युद्ध में कोई मुक़ाबला नहीं है. मेरे मन में यह प्रश्न बार-बार आता है कि अगर कृष्ण ने वहीं विकल्प दिए होते तो मेरी पसंद क्या होती? और मेरा जीवन मुझे बताता है कि ज़्यादातर समय मेरी पसंद और दुर्योधन की पसंद एक ही होती है. मैं यह पता नहीं लगा पा रहा हूँ कि कैसे एक व्यक्ति अक्षय सेना से ज्यादा महत्वपूर्ण है.

मैं जीवन में धन का महत्त्व आसानी से देख सकता हूँ, जीवन में शक्ति का महत्व आसानी से देख सकता हूँ लेकिन यह नहीं देख सकता कि मेरे जीवन में धन और शक्ति से अधिक महत्व एक व्यक्ति का कैसे हो सकता है? क्या हमारे जीवन में श्रीकृष्ण जैसा व्यक्ति मिलना संभव है. क्या श्रीकृष्ण जैसा व्यक्ति महत्वपूर्ण है या अर्जुन की आंखे/बुद्धि अधिक महत्वपूर्ण थी? करनाल दानवीर कर्ण का शहर है, मैं दिनकर द्वारा लिखित रश्मिरथी खरीदता हूँ. रश्मिरथी वास्तव में मंत्रमुग्ध कर देने वाली है. यह आपको पूरी तरह से अपने आप में समाहित करती है. सिर्फ जाति के नाम पर प्रतिभा को कैसे नज़रअंदाज़ किया जाता है. कैसे खुद की जान की कीमत पर भी देने/मदद करने की आदत हो जाती है. मौत से भी दोस्ती को कैसे प्राथमिकता दी जाती है. कर्ण महाभारत का नायक है या कर्ण महाभारत का खलनायक है, यह तथ्य समझ से बाहर है.

मेरे माता-पिता भी दो दिनों के लिए ऋषिकेश और हरिद्वार गए थे. हमने हरकी पौड़ी और ऋषिकेश में गंगा नदी में डुबकी लगाई है. हमने शांतिकुंज हरिद्वार का भी दौरा किया है जो गायत्री परिवार का मुख्य केंद्र है. मेरी माँ पिछले बीस वर्षों से गायत्री परिवार से जुड़ी हैं. यह दर्शन मेरी माँ के साथ शांतिकुंज में तीसरी बार है. मेरी माँ श्रीकृष्ण के जन्म स्थान वृन्दावन जाना चाहती थी लेकिन हमें समय नहीं मिल सका क्योंकि वह शारदा पक्ष से पहले बिहार लौटना चाहती थी.

शारदा पक्ष शुरू होने वाला है और मेरे माता-पिता को मेरे दादा और अन्य पूर्वजों के लिए शारदा पक्ष के अनुष्ठान को पूरा करने के लिए बिहार वापस जाना है. मेरे दादाजी की याद अभी भी जीवित है. मेरे माता-पिता शारदा पक्ष से दो दिन पहले बिहार चले गए.

दिसंबर में यहाँ हर जगह ठंड है, इस राज्य में शिमला जैसी ठंड महसूस की जा सकती है क्योंकि यह हिमाचल के बहुत करीब है. खुला घर, बड़े-बड़े कमरे ठंडक का अहसास करा रहे हैं, पत्नी नाराज है लेकिन बेटी खुश है.

हमारे कुछ स्टाफ सदस्यों ने पास के होटल में पार्टी की व्यवस्था की, हमारे साथियों के 10 से 15 परिवार ने पार्टी का आनंद लिया. सभी देर रात घर पहुंचे. कानून व्यवस्था की कोई समस्या नहीं है. मेरा परिवार घर के बाहर नए साल की पार्टी मनाकर खुश है. बहुत सारी तस्वीरें और वीडियो लिए और शेयर किए गए.

हरियाणा निश्चित तौर पर देश का अग्रणी राज्य है और इसमें कोई शक नहीं कि यह भविष्य में और अधिक प्रगति कर देश के अन्य राज्यों के समक्ष आदर्श राज्य का एक उदाहरण प्रस्तुत करेगा.

सतीश कुमार
क्षे.का.करनाल

क्षे.का.हिसार

बायो केम ओर्गेनिक प्राइवेट लिमिटेड

श्री सूरत सिंह

श्री सूरत सिंह, M/s बायो केम ओर्गेनिक प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक हैं जो कि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से वर्ष 1976 से जुड़े हुए हैं. आपने वर्ष 1976-77 में कीट नाशक दवाइयों के कारोबार (ट्रेडिंग) से अपने काम की शुरुआत की थी तथा उस समय अपना बचत खाता खोलने के लिए यूनियन बैंक को चुना था. तदुपरांत वर्ष 1988 में आपने हमारे बैंक में सुपर सीड के नाम से अपना खाता खोला और निरंतर प्रगति की उचाइयों को छूते गए. श्री सूरत सिंह ने वर्ष 2002 में भारत सरकार द्वारा सर्टिफाइड सीड प्रोडक्शन का काम शुरू करते हुए अपनी फर्म को एक नए आयाम पर पहुंचा दिया. आज उनकी कंपनी हरियाणा बीज विकास निगम डिव्लपमेंट कॉर्पोरेशन की धुन पर गेहूं, सरसों, ज्वार, बाजरा एवं मक्का इत्यादि फसलों के उन्नत किस्म के बीज तैयार करती है जो भारत के विभिन्न भागों यथा हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश इत्यादि राज्यों में निर्यात किया जाता है. उन्होंने बताया कि जब से हिसार मुख्य शाखा खुली है तब से वे यूनियन बैंक के ग्राहक हैं. उन्होंने बताया कि यूनियन बैंक की संस्कृति बहुत ही अच्छी है एवं यहाँ का स्टाफ बहुत सहयोगी है. सारे स्टाफ के साथ घर के सदस्यों जैसा रिश्ता है. उन्होने यह भी बताया कि हमारे पूरे परिवार के कारोबार संबंधी एवं बचत खाते यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में ही हैं एवं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की सेवाओं से वे सब पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं. श्री सूरत सिंह जी आज लगभग 76 वर्ष के हो चुके हैं लेकिन यह आज भी बहुत चुस्त-दुरुस्त एवं स्वस्थ हैं. शहर के नामी गिरामी व्यक्तित्वों में शामिल होने के बावजूद वह बहुत ही सादा जीवन व्यतीत करते हैं. श्री सूरत सिंह सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं. यहाँ यह बात भी उल्लेखनीय है कि इनके सुपुत्र श्री अरुण सिंह वायु सेना में विंग कमांडर के पद पर तैनात है जो कि विशिष्ट सेवा मेडल, राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित हैं.

- राजीव कुमार, क्षे.का.हिसार

क्षे.का.हिसार

डॉ. पूनम चहल

हमारी सम्मानित ग्राहक **डॉ. पूनम चहल,** छाजू राम विधि महाविद्यालय, हिसार की प्रधानाचार्या है. उन्होंने एल.एल.एम., नेट और पी.एच.डी. की उपाधि ग्रहण की है. छाजू राम विधि महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2003 में कानून पाठ्यक्रम को संचालित करने के लिए की गई थी. इस संस्थान को भारत में सर्व श्रेष्ठ 25 विधि संस्थानो में स्थान प्राप्त है और यह अपनी बेहतर शिक्षा के लिए जाना जाता है. हमारे बैंक की सी आर सी ई शाखा भी इसी महाविद्यालय के प्रांगण में स्थित है. शुरुआती चरण में यूनियन बैंक ने यहाँ एटीएम मशीन लगाई थी जिसके बाद महाविद्यालय के बचत खाते खोलने के लिए एक काउंटर मात्र लगाया गया था. यूनियन बैंक की सेवाओं से प्रभावित होकर महाविद्यालय के अनुरोध पर सन 2007 में यहाँ सी आर सी ई शाखा की स्थापना की गई. डॉ. पूनम चहल ने महाविद्यालय की लगभग 15 करोड़ रुपए की जमा राशि हमारे बैंक को मुहैया कराई है. कॉलेज के सभी विद्यार्थियों के बचत खाते एवं सारे स्टाफ के सेलरी खाते भी हमारी शाखा में ही हैं. हमारा बैंक भी महाविद्यालय को समय-समय पर अनेक अतिरिक्त सुविधाएं प्रदान करने के लिए तत्पर रहता है. डॉ. चहल ने बताया कि उनका सी बी एस सी का काम है एवं वे बैंक से लगातार 2003 से जुड़ी हुई हैं. आज तक किसी भी काम के लिए शाखा में उन्हें रुकने के लिए नहीं कहा गया है. वह यूनियन बैंक से इतनी प्रभावित हैं कि उन्होंने अपने सारे परिवार के बचत खाते भी यूनियन बैंक में ही खुलवा रखे हैं तथा वे अपने सहयोगियों, मित्रों एवं रिश्तेदारों को भी यूनियन बैंक में खाता खुलवाने के लिए प्रेरित करती रहती हैं. आप एक उच्च कोटि के नेतृत्व की धनी हैं. बहुत ही हंसमुख स्वभाव एवं मिलनसार डॉ. पूनम चहल के नेतृत्व में महाविद्यालय भी प्रगति के नए आयामों को छू रहा है.

- कविता देवी, सीआरसीई शाखा, हिसार

क्षे.का. करनाल

श्री राम एग्रो इंडिया

श्री सतीश गुप्ता

कृषि प्रधान देश भारतवर्ष के किसानों को कम खर्च पर अधिक मुनाफे के उद्देश्य से '**श्री राम एग्रो इंडिया**' की आधारशिला हरियाणा के करनाल जिले में रखी गई. मेरठ रोड पर स्थित कंपनी के मुख्यालय में ऑटोमेटिक प्लांट के अलावा दो मैनुफेक्चुरिंग यूनिट भी बनाए गए हैं. खेती की नई व बेहतरीन तकनीक हेतु कंपनी में एक अत्याधुनिक तकनीकी लैब का निर्माण किया गया है जिसे योग्य एवं अनुभवी वैज्ञानिकों का समूह संचालित करता है. किसानों का भरोसा जीतने वाली विश्वसनीय कंपनी श्री राम एग्रो इंडिया के पास उत्तर व मध्य भारत में लगभग 1000 अधिकृत एवं 2500 सब डीलरों का नेटवर्क उपलब्ध है. मुख्य कार्यालय के पर्यवेक्षण में भारत के विभिन्न स्थानों पर 9 शाखा कार्यालय भी कार्य कर रहे हैं. कम दाम पर उच्च गुणवत्ता के उत्पाद व कीटनाशक दवाईयां उपलब्ध करवाने के उद्देश से 'श्री राम एग्रो का वायदा कम खर्च मुनाफा ज्यादा' के नारे के साथ कंपनी की नीव वर्तमान में कंपनी के पार्टनर श्री सतीश गुप्ता जी द्वारा रखी गई. हमसे बातचीत करते हुए उन्होंने बताया कि- "मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारी कंपनी ने 2009 में 5 उत्पादों के साथ अपनी शुरुआत की थी. महज 6 सालों के अंतराल के बाद 2015 में कंपनी ने 80 अन्य उत्पादों तथा बिक्री के लक्ष्य को भी हासिल किया. मैं आज गर्व के साथ कह सकता हूँ कि हमारी मेहनती एवं अनुभवी मार्केटिंग व सेल्स टीम के सहयोग से हमने अपनी कंपनी के 100 करोड़ की बिक्री के लक्ष्य को हासिल कर लिया है."

पारिवारिक पृष्ठभूमि कृषि होने के कारण श्री सतीश गुप्ता जी का जुड़ाव बचपन से ही किसानों से रहा है. इनको किसानों की समस्या 'अधिक दाम पर कम गुणवत्ता' के कृषि उत्पादों की पर्याप्त समझ है. इन्होंने

इस समस्या के समाधान के लिए अक्तूबर 2009 में 5 उत्पादों के साथ कंपनी की शुरुआत की. उत्पादों की अधिक गुणवत्ता से किसानों का विश्वास जीतने में सफलता हासिल करते हुए स्थापना के पहले ही वर्ष 2010-11 के लक्ष्य 120 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ प्राप्त किए. टीम की मेहनत एवं उत्पादों के प्रति विश्वसनीयता से जिस प्लांट में शुरुआत की वह 2 सालों में ही कार्य करने के लिए छोटा रह गया, जिसके चलते 2013 में ऑटोमेटिक प्लांट लगाया गया. स्थापना के 5 वर्षों में ही उत्पादों की संख्या 5 से बढ़कर 80 तक पहुँचने का श्रेय कंपनी से जुड़े हर व्यक्ति व उनकी अनुभवी व सक्षम टीम को जाता है. वर्तमान में यह कंपनी लगभग 130 लोगों की टीम के साथ किसानों की उन्नति व देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए कार्यरत है तथा देश के विभिन्न स्थानों पर अपने उत्पाद पहुंचाने के प्रयास कर रही है. किसानों को जागरूक व प्रशिक्षित करने के लिए अनुभवी कृषि वैज्ञानिकों की टीम गाँवों में जाकर किसान संगोष्ठी का आयोजन करती है. किसानों की सेवा के साथ रक्तदान शिविर, गरीब व असहाय बच्चों की पढ़ाई व जरूरतमंद मरीजों का ईलाज़ इत्यादि करवाकर समाज कल्याण का काम भी कर रही है. आज यह कंपनी सक्षम व योग्य टीम एवं सहयोगी वितरकों के अथक प्रयास से निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर है तथा हर लक्ष्य को पूरा करने का विश्वास रखती है. बैंकिंग कारोबार हेतु कंपनी हमारे बैंक के साथ जुड़ी है. बैंक में इनकी विभिन्न ऋण सुविधाएं हैं. श्री सतीश गुप्ता जी हमारे बैंक की उत्कृष्ट सेवाओं की सराहना करते हुए भविष्य में हमारे साथ जुड़े रहने का आश्वासन करते है.

- महेश अग्रवाल, क्षे.का. करनाल

क्षे.का. करनाल

प्लैटिनम रबर प्राइवेट लिमिटेड

श्री युद्धवीर नैन

रबड़ व्यापार में प्लैटिनम रबर प्राइवेट लिमिटेड आज एक जाना माना नाम है. इस संस्थान की नींव 2007 में उत्तरप्रदेश राज्य के शामली जिला में श्री युद्धवीर नैन जी द्वारा रखी गई. यह कंपनी मुख्य रूप से रबड़ का कारोबार एवं रबड़ टायर से जुड़े उत्पाद मुहैया करवाती है. कंपनी का मकसद ग्राहकों की संतुष्टि के साथ रबड़ कारोबार में शिखर तक पहुंचना है. अपनी स्थापना से ही कंपनी रबड़ उत्पादों के निर्माण का एक समृद्ध केंद्र है. उत्पादों की श्रृंखला में विशेष रूप से दोपहिया एवं तिपहिया वाहनों के लिए आटोमोबाइल टायर का निर्माण करते हैं. कंपनी को भारतीय मानक ब्यूरो (बीएसई) और इंटरनेशनल सेंटर फॉर ऑटोमोटिव टैक्नोलोजी (आईसीएटी) गुणवत्ता का अनुमोदन प्राप्त है. कंपनी के संस्थापक श्री युद्धवीर नैन जी यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, करनाल क्षेत्र की हुडा कॉम्प्लेक्स, सोनीपत शाखा से पिछले 15 साल से जुड़े हैं. व्यापारिक लिमिट व अन्य ऋण सेवाएँ एवं बैंक की नियमित सेवाओं से वे पूर्णत: संतुष्ट हैं. बैंक के साथ अपने व्यावसायिक सम्बन्धों के लिए यूनियन बैंक इनकी पहली प्राथमिकता रही है. आप बैंक के सक्रिय और निष्ठावान ग्राहक हैं.

- गुलशन कुकरेजा, क्षे.का. करनाल

क्षे.का. करनाल

विशाल ट्रेडिंग

श्री रमेश रेवड़ी

पानीपत हथकरघा उत्पादों का एक केंद्र है जहां कालीन, मखमली कुशन, सोफ़े के कपड़े, चद्दरें, पर्दे और तौलिये सहित अन्य उत्पादों का निर्माण किया जाता है. इसके अलावा, यह पुनरसंचरण उद्योग का केंद्र भी बन गया है, जिसके परिणामस्वरूप बेकार कपड़ों से सूत का उत्पादन होता है. पानीपत राष्ट्रीय राजमार्ग 1 पर नई दिल्ली से अमृतसर की ओर लगभग 90 किलोमीटर दूरी पर स्थित है. कपड़ा उद्योग के लिए राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर घरेलू वस्त्रों में एक प्रमुख नाम से जाना जाता है. विभाजन के दौरान, सिंध, झांग और मुलतान (अब पाकिस्तान) से बड़ी संख्या में पेशेवर बुनकर भारत चले आए और अपने करघे स्थापित कर दरी बुनाई के पारंपरिक शिल्प में व्यस्त हो गए. पानीपत उत्तर भारत में कच्चे ऊन के सबसे बड़े बाज़ारों में से एक है. आज इस शहर में बने गलीचे, कपास से बनी ऊनी दरी इत्यादि हथकरघा उत्पाद पूरे देश में प्रसिद्ध है. देश विदेश में इस शहर के नाम से विभिन्न आउटलेट भी हैं. इसी उद्योग में भागीदारी देने के उद्देश्य से **विशाल ट्रेडिंग** कंपनी लगभग आधे दशक से कपड़ा व्यापार कर रही है. कंपनी के प्रमुख श्री रमेश रेवड़ी जी लगभग 25 साल से यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के साथ जुड़े हैं. बातचीत के दौरान आप बताते हैं कि व्यवसाय के विकास के साथ-साथ मेरी यूनियन बैंक के साथ साझेदारी और गहरी होती गई. चाहे उत्पादन के लिए नई इकाई स्थापित करनी हो, व्यवसाय विविधकरण हो या फिर एक जमाकर्ता के रूप में अपनी बचतों को बैंक में जमा करना, यूनियन बैंक को अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए अपने पहले सहयोगी की भूमिका में रखा है. बैंक शाखा के प्रत्येक अधिकारी, कर्मचारी से व्यक्तिगत संपर्क एवं क्षेत्रीय कार्यालय तथा सरल प्रमुख से व्यापार विस्तार की नियमित चर्चा के साथ आप बैंक के एक मूल्यवान ग्राहक हैं.

- गौरव तायल, क्षे.का.करनाल

गुरुग्राम (क्षे.का.दिल्ली एनसीआर)

कियान एंटरप्राइजेस

श्रीमती हरविंदर कौर

फरीदाबाद औद्योगिक शहर में कागज उद्योग में एक जाना-माना नाम, कियान एंटरप्राइजेस ने खुद को गुणवत्ता और समय पर डिलीवरी के बेंचमार्क के रूप में स्थापित किया है. कियान इंटरप्राइजेस की सफलता का श्रेय, श्रीमती हरविंदर कौर को जाता है जिन्होंने अपने दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत से व्यापार की मजबूत नींव स्थापित की है.

एक व्यवसायी परिवार में पली-बढ़ी, घर की सबसे छोटी बच्ची, श्रीमती कौर ने बहुत ही कम उम्र में अपने पिता के यांत्रिक कार्यों के व्यवसाय में गहरी रुचि लेना शुरू कर दिया था. वह सीखने में तेज थी और एम.बी.ए पूरा करने से पहले ही वह व्यवसाय की बारीकियों से अच्छी तरह वाकिफ थी. वित्त में स्नातकोत्तर, श्रीमती कौर ने एक उद्यमी होने के साथ-साथ पर्यावरण में योगदान देने का सपना देखा था.

श्रीमती कौर, जो आज एक बच्चे की माँ हैं, ने पैकेजिंग उद्योग में प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के विचार के साथ पेपर और पेपर बोर्ड ट्रेडिंग का यह व्यवसाय शुरू किया. श्रीमती कौर ने इस विचार की कल्पना उस समय की थी जब उन्होंने नए-नए अपने मातृत्व की शुरुआत की थी. उनकी फर्म कियान एंटरप्राइजेस की शुरुआत के साथ उनका विचार एक वास्तविकता बन गया और तब से उनकी फर्म बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग ग्रेड, स्ट्रॉ और कटलरी के लिए कागज जैसे अन्य दैनिक उपयोगिता उत्पादों में व्यापार कर रही है.

श्रीमती हरविंदर की सफलता की कुंजी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उनका दृढ़ निश्चय है और इस प्रकार अस्थिर कच्चे माल की कीमतों और मांग की अनिश्चितता सहित उद्योग में कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने अपने सपने को कायम रखा और सफलतापूर्वक अपना व्यवसाय चलाती रहीं. वह अपनी विचारधारा को आत्मनिर्भर भारत और स्वच्छ भारत से जोड़ती हैं और उनका मानना है कि उनकी दृढ़ता उन्हें नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी. तमाम बाधाओं के बावजूद, वह अपने दृढ़ निश्चय के साथ इस पुरुष प्रधान उद्योग में हमेशा मजबूत बनी रही है.

- शैली सेहरा गौड़, फरीदाबाद ग्रीन फील्ड शाखा, दिल्ली एनसीआर

क्षे.म.प्र.का. चंडीगढ़

चंडीगढ़ मुख्य शाखा सेक्टर 17

श्री मनजिंदर सिंह

चंडीगढ़ भारत का पहला नियोजित आधुनिक शहर है. यह सुखना झील, रॉक गार्डन, रोज गार्डन, बर्ड पार्क और मार्वल कैपिटल कॉम्प्लेक्स के साथ एक पर्यटन स्वर्ग है. सभी प्रकृति प्रेमियों और छुट्टियों के लिए उत्तर की यात्रा करने वाले लोगों के लिए वन स्टॉप डेस्टिनेशन है.

श्री मनजिंदर सिंह (और श्री हरप्रीत सिंह) पूर्ण से स्थापित / प्रसिद्ध साझेदारी फर्म के मालिक नैनुआन का पंजीकृत कार्यालय सेक्टर - 82 मोहाली में स्थित है व 200 से अधिक कंपनी के स्वामित्व वाली कारों के बेड़े और चंडीगढ़ अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक विशेष यात्रा डेस्क रखने वाले टूर एंड ट्रेवल्स के क्षेत्र में कार्यरत है. इसके अलावा, कंपनी किराये के कारों के कारोबार में भी लगी हुई है. "हमारी कंपनी यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की मुख्य शाखा (सेक्टर - 17) का एक विशेषाधिकार प्राप्त है. चंडीगढ़ मुख्य शाखा सेक्टर 17से हमें ऋण सुविधा प्राप्त है. कंपनी के प्रमोटर होने के नाते में यह कहना चाहूंगा कि हमने कई अन्य बैंकों से भी सेवाओं का लाभ उठाया है लेकिन हम यूनियन बैंक को पसंद करते हैं. केवल हमें ही नहीं, बल्कि हमारे 200 कर्मचारियों को भी बहुत अच्छी ग्राहक सेवाएं प्रदान की जाती हैं, जिनके वेतन खाते आपके पास हैं. आपका पूरा स्टाफ सदस्य हर तरह से, हर बार कमाल का होता है. पेशेवर, दयालु और स्थानीय होने में कभी भी मदद करने के लिए आपकी टीम तत्पर है. शाखा साफ और आरामदायक है. बैंक स्वयं कहता है "अच्छे लोग अच्छा बैंक" जो कि बहुत दुर्लभ है."

- दुष्यंत सिहाग, चंडीगढ़ (मुख्य) शाखा

क्षे.म.प्र.का. चंडीगढ़

एसपीडीडी इंफ्रा,

सैक्टर 8 सी, चंडीगढ़

सुरेन्द्र पाल सिंह

चंडीगढ़ शाखा सेक्टर 8 सी से पिछले 25 वर्षों से जुड़े ग्राहक श्री सुरेन्द्र पाल सिंह के अनुसार "आप की शाखा के सहयोग से मैंने मेरे व्यवसाय में बहुत उन्नति की है. जिसकी शुरुवात आपकी शाखा से ऋण लेने से हुई. आप की शाखा से मैंने बहुत प्रकार के ऋण लिए. शाखा से मैंने बैंक गारंटी लेकर सरकारी ठेके का कार्य किया व बहुत प्रगति की. जिसकी वजह से सरकार द्वारा भी मुझे बहुत अधिक प्रशंसा मिली. आज मेरा कार्य भारत के अन्य राज्यों में भी फैला हुआ है. फिलहाल हिमाचल में भी मेरा सरकारी काम जो कि पुल बनाने का काम है, बहुत अच्छे से चल रहा है. अब मैंने मेरे पुत्र गगनप्रीत को भी अपने साथ काम में शामिल कर लिया है. मेरे पुत्र ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है. जिसकी वजह से व्यवसाय उन्नति की ओर बढ़ रहा है. अंत में यही कहूँगा की 'आपका छोटा सा सहयोग उन्नति की ओर उन्मुख कहानी बन गया है.'

- वीरेंद्र कुमार, सेक्टर 8 सी, चंडीगढ़

क्षे.म.प्र.का. चंडीगढ़

एस्ट्रा एग्रो फूड प्राइवेट लिमिटेड

टी एस बक्शी

शून्य से स्वर्णिम तक का सबसे उत्तम उदाहरण होगा यदि मैं टी एस बक्शी जी के बारे में कहूँ तो उन्होंने छोटे से निवेश से अपने व्यापार की शुरुआत की थी वह भी यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, सेक्टर 8 सी शाखा (03192) से चालू खाता खुलवा कर! आपका व्यापार खाद्य पदार्थ से संबन्धित था. अपने व्यापार को बड़े व्यापार में परिवर्तित करने के लिए आपने शाखा से नकद ऋण हेतु आवेदन किया. उस आवेदन को बैंक पर आधारित मापदंड पर परख कर शाखा ने इन्हें नकद ऋण देने का निर्णय लिया. वर्ष 2005 में एस्ट्रा एग्रो फूड प्राइवेट लिमिटेड नाम से ऋण लिया गया जिसका संचालन उनके पिता श्री टी एस बक्शी जी कर रहे थे. आज इस का संचालन टी एस बक्शी जी की सुपुत्री जसप्रीत, उनकी पुत्र वधू श्रीमती संगीता बक्शी जी के साथ मिल कर कर रही हैं. इस व्यापार को मिल कर प्रगतिशील बनाने में वे कार्यरत हैं. यह व्यापार न केवल देश में बल्कि विदेश में भी अपना नाम उज्ज्वल कर रहा है तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में भी प्रगति की ओर उन्मुख है. इसलिए यह कहावत उनके जीवन पर चरितार्थ होती है कि सही समय व सही सहयोग, शून्य से स्वर्णिम तक का बेहतरीन उदाहरण बन जाता है.

- दीपा कुमारी, सेक्टर 8 सी चंडीगढ़

दि. 20.04.2022 को आयोजित नराकास (बैंक) भुवनेश्वर की 51वीं छमाही बैठक में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे.का.भुवनेश्वर को प्रथम पुरस्कार दिया गया. पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री रमाकांत प्रधान, क्षेत्र महाप्रबंधक, भुवनेश्वर एवं श्री सोवन सेनगुप्ता, क्षेत्र प्रमुख, भुवनेश्वर. राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु सुश्री प्रीति साव को प्रमाण पत्र दिया गया.

दि. 25.05.2022 को आयोजित नराकास गाजियाबाद की अर्धवार्षिक बैठक में क्षे.कार्या. गाजियाबाद को वर्ष 2021-22 हेतु नराकास का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. श्री विकास विनीत, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री राजीव कुमार, राजभाषा अधिकारी द्वारा नराकास अध्यक्ष, श्री संजीव कृष्ण सिंह से पुरस्कार ग्रहण किया गया. इस अवसर पर क्षे. का. गाजियाबाद की क्षेत्रीय गृह पत्रिका 'यूनियन हिण्डन धारा' के मार्च 2022 अंक का विमोचन भी किया गया.

दि. 18.06.2022 को आयोजित नराकास नासिक की बैठक में वर्ष 2020-21 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे.का. नासिक को प्रथम पुरस्कार दिया गया. साथ ही नासिक क्षेत्र की गृहपत्रिका 'यूनियन पंचवटी' को नराकास, नासिक से गृहपत्रिका वर्ग में वर्ष 2020-21 हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अमर नाथ गुप्ता, उप क्षेत्र प्रमुख, नासिक एवं श्री ललित सानप, प्रबंधक (राजभाषा).

नराकास, आणंद की राजभाषा वार्षिक शील्ड योजना-2020-21 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे. का., आणंद को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. श्री राजेश कुमार झा, क्षेत्र प्रमुख एवं अन्य स्टाफ सदस्य राजभाषा पुरस्कार के साथ.

दि. 29.04.2022 को आयोजित नराकास (बैंक) प्रयागराज की अर्धवार्षिक बैठक में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे.का.प्रयागराज को प्रथम पुरस्कार दिया गया. श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक(का), उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय(2), गृह मंत्रालय से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री ज्ञानेन्द्र कुमार सिंह, क्षेत्र प्रमुख, प्रयागराज. राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु सुश्री तनीशा शर्मा को प्रमाण पत्र दिया गया.

दि. 10.06.2022 को नराकास कोषिक्कोड की अर्धवार्षिक बैठक में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे.का.कोषिक्कोड को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. अध्यक्ष नराकास कोषिक्कोड से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री टी ए नारायणन, क्षेत्र प्रमुख, कोषिक्कोड.

दि. 21.06.2022 नराकास गांधीनगर द्वारा वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे.का. गांधीनगर को प्रथम पुरस्कार दिया गया. नराकास अध्यक्ष श्री दीपांकर गुहा, बैंक ऑफ बड़ौदा से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सुनील कुमार गुप्ता, राजभाषा अधिकारी, गांधीनगर.

दि. 29.04.2022 को नराकास(बैंक) राजकोट की छमाही बैठक में वित्तीय वर्ष 2020-21 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे.का. राजकोट को प्रशासनिक श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री बंशीधर त्रिपाठी, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री रिछपाल, राजभाषा अधिकारी एवं व्यक्तिगत पुरस्कार विजेता स्टाफ सदस्य.

दि. 26.04.2022 को वित्तीय वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे.म.प्र.का. हैदराबाद को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण) एवं श्री अमित झिंगरान, मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक व अध्यक्ष, नराकास से शील्ड एवं प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए श्री यू वी रजनीकांत राव, सहायक महाप्रबंधक व श्री देवकांत पवार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा).

दि. 26.05.2022 को क्षे.का.कानपुर के सम्मेलन कक्ष में आयोजित नराकास(बैंक) कानपुर की छमाही बैठक में क्षे.का. कानपुर को वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. साथ ही क्षेत्रीय गृह पत्रिका 'यूनियन प्रगति' के मार्च 22 अंक का विमोचन भी किया गया. इस अवसर पर श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्या.), गृह मंत्रालय; श्री श्याम सुंदर सिंह, नराकास अध्यक्ष; श्री संजीव कुमार, क्षेत्र प्रमुख उपस्थित रहे.

दि. 16.06.2022 को वित्तीय वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे.का.बरेली को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री आशीष त्रिवेदी, उप क्षेत्र प्रमुख एवं श्री राधा रमन शर्मा, राजभाषा अधिकारी.

दि. 28.06.2022 को नराकास, श्रीगंगानगर की अर्द्ध-वार्षिक बैठक में वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु श्रीगंगानगर मुख्य शाखा को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. श्री ओम प्रकाश, शाखा प्रबन्धक, पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

दि. 16.05.2022 को नराकास (बैंक) अजमेर की अर्द्ध-वार्षिक बैठक में वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु अजमेर (मुख्य शाखा) को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया. श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (का.) गृह मंत्रालय से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री धर्म सिंह कुण्डारा, शाखा प्रबन्धक.

दि. 29.06.2022 को नराकास (बैंक), जोधपुर की अर्द्ध-वार्षिक बैठक में वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षे.का. जोधपुर को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया. पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री उपेन्द्र कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख एवं श्री विकास तिवाड़ी, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा).

दि. 23.05.2022 से 26.05.2022 तक स्टा.प्र.के., हैदराबाद में भाषाई क्षेत्र 'ग' में पदस्थ राजभाषा अधिकारियों के लिए गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर बाएं से दाएं. श्री उदय खजाने, प्रभारी, स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, श्री बी जानकी राम, महाप्रबंधक (मासं), श्री सुरेश चन्द्र तेली, क्षेत्र महाप्रबंधक एवं डॉ.सुलभा कोरे, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतिभागियों को संबोधित किया. उपस्थित प्रतिभागियों का समूह चित्र.

दि. 07.05.2022, को पटना क्षेत्र अंतर्गत शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक के अवसर पर क्षे.का.पटना की गृह पत्रिका 'यूनियन पाटलिपुत्र' के मार्च, 2022 'आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक' का विमोचन करते हुए श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक; श्री ज्ञान रंजन सारंगी, क्षेत्र महाप्रंबधक, रांची; श्री अजय बंसल, क्षेत्र प्रमुख; श्री शैलेन्द्र कुमार, उप क्षेत्र प्रमुख; श्री सावन शिव, सरल प्रमुख; श्री के. डी. गुप्ता तथा डॉ. विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी, पटना.

दि. 29.04.2022 को नराकास (बैंक) प्रयागराज, संयोजक-यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन किया गया. बैठक में, श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक, उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (2), गृह मंत्रालय के साथ-साथ विभिन्न बैंकों के कार्यालय प्रमुख भी उपस्थित रहे.

नराकास (बैंक व बीमा) कोच्चि संयोजक यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षे.का. एर्णाकुलम के तत्वावधान में भौतिक रूप से आयोजित तकनीकी कार्यशाला के दौरान स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री अनीश कुमार केशवन, क्षेत्र प्रमुख, बैंक ऑफ बडौदा, सुश्री बिनु टी एस, सदस्य सचिव एवं सुश्री नीना देवसी, मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ बडौदा.

दि.16.06.2022 को नराकास, मंगलूरु संयोजक यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की 70वीं अर्ध-वार्षिक बैठक की अध्यक्षता श्री अरविन्द कुमार उप अंचल प्रमुख, क्षे.म.प्र.का., मंगलूरु द्वारा की गयी. इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक(का.), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूरु, साथ में विभिन्न सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा प्रभारी उपस्थित रहे. बैठक के दौरान नराकास, मंगलूरु की वार्षिक पत्रिका 'त्रिधारा' का विमोचन किया गया.

दि. 31.05.2022 को क्षे.का.एर्णाकुलम में नराकास (बैंक व बीमा) कोच्चि, संयोजक यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की 67वीं ऑनलाइन अर्ध वार्षिक बैठक के दौरान संबोधित करते हुए श्री मंजुनाथस्वामी सी जे, अध्यक्ष, नराकास एवं सुश्री बिनु टी एस, सदस्य सचिव.

दि. 20.06.2022 को क्षे.म.प्र.का. मुंबई के तत्वावधान में अंचल के अधीन क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए डॉ. सुलभा कोरे, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), उपस्थित श्री तनवीर अहमद चौधरी, एसटीसी प्रभारी. कुल 80 स्टाफ सदस्यों ने इस कार्यशाला में प्रतिभागिता की.

दि. 18.06.2022 को क्षे.म.प्र.का. रांची एवं क्षे. का. रांची की संयुक्त गृह पत्रिका 'यूनियन जोहार' के मार्च 2022 अंक का विमोचन अंचल प्रमुख श्री ज्ञान रंजन सारंगी; उप अंचल प्रमुख, श्री विकास कुमार सिन्हा; क्षेत्र प्रमुख, श्री आनंद कुमार; उप क्षेत्र प्रमुख, श्री मुकेश कुमार; मुख्य अतिथि, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक, श्री सुरेश कुमार द्वारा किया गया.

दि.21.06.2022 को क्षे.म.प्र.का.मंगलूरु एवं क्षे.का.मंगलूरु की संयुक्त अर्धवार्षिक गृह पत्रिका - यूनियन मंगल वाणी (मार्च 2022 अंक) का विमोचन श्री एम. रवीन्द्र बाबू, महाप्रबंधक के कर कमलों से संपन्न हुआ. साथ में उपस्थित श्री महेश जे, क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का. मंगलूरु; श्री एम सतीश कुमार, श्री बी आनंद नायक, श्री एस जयराजू, श्री सादनन्द शेट्टी, श्री जॉन ए अब्राहम एवं श्रीमती पूर्णिमा एस राजभाषा प्रभारी.

दि. 18.06.2022 को श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) गृह मंत्रालय द्वारा क्षे.का. ग्रेटर कोलकाता का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया. इसके साथ ही क्षे.का. की गृह पत्रिका 'यूनियन दृष्टि' का विमोचन भी किया गया.

दि. 07.05.2022 को क्षे. का. कोलकाता (मेट्रो) में कारोबार आयोजना बैठक के दौरान श्री जी के सुधाकर राव, क्षेत्र महाप्रबन्धक कोलकाता; श्री बरुण कुमार, क्षेत्र प्रमुख कोलकाता (मेट्रो); श्री प्रेमनाथ राय, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा क्षे.का. की छमाही गृहपत्रिका 'यूनियन पूर्वोत्तर' का विमोचन किया गया.

दि. 20.06.2022 को क्षे.म.प्र.का.पुणे एवं क्षे.का.पुणे (पूर्व) की संयुक्त गृह पत्रिका 'यूनियन सह्याद्री' का विमोचन श्री राजीब एल. पट्टनायक, क्षेत्र महाप्रबंधक, पुणे द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्री नवनीत दत्ता, क्षेत्र प्रमुख, क्षे. का., पुणे (पूर्व) एवं श्रीमती शारदा ए. मूर्ती, क्षेत्र प्रमुख, क्षे. का., पुणे (पश्चिम) सहित अन्य कार्यपालकगण और स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 21.05.2022 को क्षे.का.पटना में स्टाफ सदस्यों के लिए आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में उपस्थित श्री वीरेन्द्र कुमार यादव, हिंदी सलाहकार, स्वास्थ्य मंत्रालय एवं विदेश मंत्रालय, भारत सरकार; श्री अजय बंसल, क्षेत्र प्रमुख, पटना; डॉ. विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी.

दि. 22.06.2022 को क्षे.का. हल्द्वानी में श्री सुमित श्रीवास्तव, क्षेत्र महाप्रबंधक, लखनऊ द्वारा हिंदी पुस्तकालय का उद्घाटन किया गया. उक्त कार्यक्रम में श्री गौरव कुमार, क्षेत्र प्रमुख; श्री कमलेश बर्गली, उप क्षेत्र प्रमुख एवं कार्यालय के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 13.04.2022 को क्षे.म.प्र.का. भोपाल की छमाही गृह पत्रिका 'यूनियन मध्य दर्पण' के मार्च 2022 अंक का विमोचन, श्री रूप लाल मीना, क्षेत्र महाप्रबन्धक; डॉ. अजित मराठे, उप अंचल प्रमुख; श्री एल सी झरवाल, क्षेत्र प्रमुख भोपाल (सेंट्रल) द्वारा किया गया.

दि. 20-21 मई 2022 को स्टा.प्र.के. मंगलूर द्वारा आयोजित दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला में उपस्थित संकाय एवं स्टाफ सदस्य.

दि. 20.05.2022 को आयोजित बैंक नराकास नागपुर की छमाही बैठक में क्षे.का. नागपुर की गृहपत्रिका 'यूनियन प्रवाह' का विमोचन करते हुए सुश्री संगीता लालवानी, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक; श्री संतोष एस, नराकास अध्यक्ष; श्री प्रशांत कुमार साहू, क्षेत्र प्रमुख एवं सुश्री कुमुद राजभाषा अधिकारी.

मऊ क्षेत्र की गृह पत्रिका 'यूनियन तमसा' के मार्च 2022 अंक का विमोचन श्री गिरीश चन्द्र जोशी, अंचल प्रमुख वाराणसी; श्री मिथिलेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख एवं वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किया गया.

दि. 20-21 मई 2022 को स्टा.प्र.के. भोपाल में दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उद्घाटन सत्र में डॉ. अजित मराठे, उप अंचल प्रमुख एवं श्री आर के सिंह, केंद्र प्रभारी स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल द्वारा प्रतिभागियों को संबोधित किया गया. इसी अवसर का समूह चित्र.

दि. 14.06.2022 को क्षे.का., आणंद में उप शाखा प्रमुखों हेतु एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला का उद्घाटन श्री नीरज सिंह, क्षेत्र प्रमुख और श्री संजीव कुमार सिंह, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

दि. 10.06.2022 को क्षे.का.गाजीपुर में उप शाखा प्रमुखों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला का उद्घाटन क्षेत्र प्रमुख, श्री धर्मेंद्र राजोरिया एवं उप क्षेत्र प्रमुख, श्री सुनील कुमार द्वारा किया गया.

दि. 02.06.2022 को क्षे.का.भागलपुर द्वारा आयोजित समीक्षा बैठक में कार्यालय की गृह पत्रिका 'यूनियन अंगिका' का विमोचन करते हुए श्री ज्ञान रंजक सारंगी, क्षेत्र महाप्रबंधक राँची.

मखानाः एक सुपर फूड

मखाना शारीरिक शक्ति को बढ़ाता है. यह जल में पाया जाता है. इसके पौधे कांटेदार तथा कमल के समान गोलाकार होते हैं, जो ऊपर से हरे, लेकिन नीचे से लाल या बैंगनी रंग के होते हैं. इसके फल गोलाकार, कांटेदार तथा मुलायम (स्पंज वाले) होते हैं. इसके बीज मटर के समान, या इससे कुछ बड़े होते हैं. फल हल्के काले रंग के होते हैं. बालू में भूनने से ये फूल जाते हैं, जिन्हें मखाना कहा जाता है. भारत में मखाना की खेती मुख्यत: बिहार तथा जम्मू-कश्मीर में की जाती है. देश के कुल मखाना उत्पादन का 88% सिर्फ बिहार में होता है.

मखाना के विविध नाम : मखाना को संस्कृत भाषा में - मखान्न, पद्मबीजाभ, पानीयफल, अंकलोड्य; हिन्दी भाषा में - मखाना, मखान्ना; उड़िया भाषा में - कंटपद्मा; उर्दू भाषा में- मखाना; मराठी भाषा में - मखणे, मखाणे; और अंग्रेजी भाषा में - गोरगोन फ्रूट (Gorgon fruits), प्रिकली वाटर लिलि (Prickly water lily), Fox nut (फॉक्स नट)

मखाना का प्रयोग / सेवन : मखाने का सेवन सलाद में नियंत्रित मात्रा में किया जा सकता है. इन्हें भून कर या फिर चूर्ण बनाकर भी प्रयोग में लाया जा सकता है. मखानों की तासीर ठंडी होती है. फिर भी इसका सेवन किसी भी मौसम में किया जा सकता है. मखाने लघु होने के कारण अच्छे पाचक होते हैं. साथ ही ये कार्बोहाइड्रेट्स, फाइबर्स और प्रोटीन्स से भरपूर होते हैं.

मखाना को लोग स्नैक्स के रूप में भी खाते है. लोग इसे घी में भूनकर, खीर बनाकर, मिठाइयों में ड्राय फ्रूट के तौर पर डालकर इस्तेमाल करते हैं. कुछ लोग इसे सब्जियों मे भी डाल कर खाते है. आयुर्वेद के अनुसार, मखाना मधुर एवं ठंडा प्रभाव वाला होता है. यह गर्भधारण करने में मदद पहुंचाता है, गर्भवती स्त्रियों के लिए यह काफी शक्तिवर्द्धक होता है.

मखाना के फायदे : तैयार मखाना वैसे तो खाने में स्वादिष्ट होता है, लेकिन इसके अनगिनत फायदे भी होते हैं. चलिए, इनके बारे में जानते हैं:-

1. **शुगर (मधुमेह) में मखाना के फायदे** : आजकल की जीवनशैली और खान-पान में मधुमेह एक सामान्य बीमारी हो गयी है. समय के अभाव के कारण लोग असंतुलित भोजन को अधिक प्राथमिकता देते हैं, जिसके कारण शरीर में शर्करा का स्तर बढ़ जाता है. यह डायबिटीज का कारण बनता है. मखाने की शर्करा रहित खीर बनाएं. इसमें सालम मिश्री का चूर्ण डालकर खिलाएं. इससे डायबिटीज में लाभ मिलता है.
2. **शरीर की जलन से दिलाये आराम, मखाना** : कई लोगों को शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों, जैसे- पैर या पैर के तलवे आदि में जलन की समस्या रहती है. मखाने को दूध में मिलाकर पीने से इस परेशानी में आराम मिलता है.
3. **शारीरिक कमजोरी में मखाना के सेवन से लाभ** : शारीरिक कमजोरी की शिकायत कई कारणों से हो सकती है. आप मखाना के सेवन से इसमें लाभ पा सकते हैं. मखाना के बीजों का सेवन करने से शारीरिक कमजोरी दूर होती है.
4. **दिल के लिए मखाने के फायदे** : मखाना दिल के लिए फायदेमंद होता है. इसके उचित मात्रा में सेवन से यह रक्त की आपूर्ति में सुधार करता है एवं हृदयाघात जैसी गंभीर समस्याओं के रोक थाम में भी सहयोगी होता है.
5. **ब्लड प्रेशर नियंत्रित करने में मखाने के फायदे** : उच्च रक्तचाप के लिए मखाना लाभदायक होता है क्योंकि इसमें सोडियम की मात्रा कम और पोटैशियम की मात्रा ज्यादा पायी जाती है जो उच्च रक्तचाप को कम करती है.
6. **अनिद्रा कम करने में मखाने के फायदे** : नींद न आने का कारण शरीर में वात दोष का प्रकुपित होना स्वाभाविक है. मखाना अपने गुण और वातशामक स्वभाव के कारण नींद लाने में सहयोग करता हैं.
7. **गुर्दे (Kidney) के लिए मखाना फायदेमंद** : मखाना का उचित मात्रा में सेवन गुर्दो को भी स्वस्थ रखने में सहयोगी है. यह गुर्दों की कार्य क्षमता को बढ़ा कर उनकी क्रिया को सामान्य बनाये रखने में मदद करता है.
8. **गर्मी से दिलाये राहत मखाना** : गर्मी को दूर रखने में मखाने का सेवन एक अच्छा उपाय है क्योंकि मखानों में शीत (ठंडा) गुण होता है जो कि शरीर की गर्मी को शांत कर राहत दिलाता है.
9. **झुर्रियों (Wrinkle) से छुटकारा पाने में मखाने का उपयोग** : मखानों का सेवन झुर्रियों से छुटकारा पाने में भी सहयोग देता है क्योंकि इसमें स्निग्ध गुण होता है, जो त्वचा में तैलीय तत्व बनाये रखने में सहयोग देता है, जो झुर्रियों को रोकने में मदद करता है .
10. **विविध फायदे** : मखाने में भरपूर मात्रा में कैल्शियम होता है जो हड्डियों को मजबूत बनाता है. प्रेगनेंसी में फायदेमंद प्रेगनेंसी में मखाना प्रेग्नेंट महिलाओं और शिशु दोनों के लिए लाभदायक होता है. मखाना का सेवन ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करता है. यह शरीर का वजन कम करने में भी सहायक होता है.

मखाना से नुकसान : मखाने का अधिक मात्रा में सेवन करने से कब्ज, पेट फूलना और सूजन हो सकती है. जिन्हें कब्ज की परेशानी है, ऐसे लोग इसे खाने से बचें. मखाना शरीर में अत्यधिक गर्मी पैदा कर सकता है. गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को बहुत अधिक मखाना नहीं खाना चाहिए क्योंकि ये गर्भ में पल रहे बच्चे को नुकसान पहुंचा सकता है.

सुबह खाली पेट मखाने का सेवन पाचन के लिए अच्छा माना जाता है. मखाना में फाइबर ही नहीं बल्कि, आयरन और कैल्शियम के तत्व भी पाये जाते हैं, जो पेट में गैस व अपच की समस्या को कम करने में मदद करते हैं. ये सस्ती, खाद्य सामग्री कई फ़ायदों से भरपूर है. बिहार राज्य में यह रोजगार का एक स्त्रोत भी है. कठिन श्रम के बाद इसका उत्पादन होता है. यह बहुआयामी खाद्य पदार्थ सहज रूप से हर जगह उपलब्ध है और खूबियों से भरा सुपर फूड है.

चन्दन कुमार
क्षे.का. कोल्हापुर

यूनियन बैंक की तिमाही हिन्दी पत्रिका 'यूनियन सृजन' के तेलंगाना विशेषांक अक्तूबर- दिसंबर 2021 को पढ़ने का अवसर मिला. पत्रिका में तेलंगाना राज्य की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र के प्रत्येक पहलुओं को शामिल करने का बड़ा ही बेहतर और सार्थक प्रयास किया गया है. पत्रिका में तेलंगाना राज्य की क्षेत्रीय विशेषताओं एवं इस राज्य के इतिहास तथा संस्कृति के आलेख के माध्यम से बड़ा ही सुंदर तरीके से चित्रण किया गया है. मुझे इस पत्रिका के माध्यम से तेलंगाना राज्य के प्राकृतिक सौंदर्य के अनुपम दृश्यों का रसास्वादन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. पत्रिका में तेलंगाना के नृत्य और नाट्य कला के साथ-साथ वहाँ की जनजातीय प्रथाओं के बारे में आलेख के माध्यम से जानकारी मिली. साथ ही तेलंगाना की प्रसिद्ध हस्तियों के बारे में जानकारी एकत्रित करने का बेहतर मौका मिला. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों के समावेशन से पत्रिका की शोभा में वृद्धि हुई है. इस प्रकार मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में पत्रिका में रचनात्मक ज्ञान के साथ-साथ साहित्यिक ज्ञान का समावेश होगा. अंत में पत्रिका की सफलता के लिए पत्रिका के सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाईयाँ.

श्रीकान्त एम भन्डिवाड
महाप्रबंधक
अंचलीय कार्यालय पटना, केनरा बैंक

'यूनियन सृजन' का जनवरी-मार्च 2022, प्रथम अंक प्राप्त हुआ. धन्यवाद. मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक और रंगीन है. कार्यपालकों का संदेश सुविचारों से समृद्ध है. सच्चे नायकत्व का द्योतक है. 'कार्यबल में महिलाओं की स्थिति', उत्तर पूर्व भारत के राज्य से संबन्धित 'सात बहनें' से लेकर राजभाषा के रूप हिंदी का विस्तार, 'यूनिकोड-अतीत से वर्तमान तक' की चर्चा बहुत ही रोचक एवं सारगर्भित है. कोंकण रेलवे हो या विज्ञान संबंधी लेख हो, विचारात्मक और ज्ञानवर्धक हैं. कविताएं मनमोहक हैं. पाठकों के मन में नए-नए विचारों को सृजित करने वाली 'सृजन' की पूरी टीम बधाई की पात्र है, क्योंकि TEAM एक ऐसा अंग्रेज़ी शब्द है, जिसमें, 'I' का अहं नहीं बल्कि संगठित, सौहार्ययुक्त संवेदनाप्रद, संतोषजनक मनोभावना है. यह इतिहास, विज्ञान, यशोगाथा, कहानी, स्वास्थ्य, प्राणायाम सभी से परिपूर्ण है. संक्षिप्त में सुधी पाठकों को एक अनमोल उपहार है. 'यूनियन सृजन' के संपादकीय मंडल को इस गरिमामय प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं.

टी. आर. उषारानी
प्रबंधक (राजभाषा),
भारतीय स्टेट बैंक प्रशासनिक कार्यालय-6 मंगलूरु

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का ई - वर्जन (जनवरी - मार्च 2022 अंक) मुझे प्राप्त हुआ है. पत्रिका के आकर्षक एवं रोचक मुख पृष्ठ ने उसे पढ़ने के लिए मुझे प्रेरित किया. पूरी पत्रिका पढ़ने के बाद मैंने यह महसूस किया कि यह पत्रिका केवल स्तरीय ही नहीं संतुलित भी है. संपादक डॉ. सुलभा और उनकी पूरी टीम प्रशंसा की पात्र हैं. हिंदी पत्रकारिता में हमेशा मेरी रुचि रही है और इस क्षेत्र में सालों तक शोध करने का मौका मुझे मिला है, विभिन्न बैंकों/ कार्यालयों/ कंपनियों द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिकाओं की बारीकियों को परखने की चुनौती को स्वीकार करना हमेशा मुझे अच्छा लगता है. मेरी राय में किसी भी पत्रिका का सामान्य अंक सामान्य पाठक के लिए विशेषांकों से ज्यादा आकर्षक होता है. आपकी पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित प्रत्येक लेख को मैंने पढ़ा है. इनमें से तटीय कर्नाटक और कोंकण रेलवे, विश्व में कार्बन उत्सर्जन में बढ़ोत्तरी के कारण एवं इसे कम करने के उपाय, अनुपात विश्लेषण की महत्ता, हमारे अंकों की विकास यात्रा आदि रचनाओं से मैं काफी प्रेरित और प्रोत्साहित हुआ हूं. संपादकीय टीम के प्रति पुन: आभार.

डॉ. मधुशील आयिल्यत्त
राजभाषा प्रभाग, विनियमन विभाग,
भारतीय रिजर्व बैंक, कोच्चि

आपकी गृहपत्रिका 'यूनियन सृजन' का जनवरी मार्च 2022 अंक पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ. धन्यवाद! पत्रिका बहुत ही आकर्षक हैं. इसमें प्रकाशित सभी रचनाएँ बहुत ही रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं. साथ ही, विषय से संबन्धित जो फोटो हैं वे इसकी यूएसपी हैं. संपादक द्वारा हर वर्ग के लिए पत्रिका में विषयों का समावेश किया गया है. अगर बात बैंकिंग विषयों की करें तो शिशु मुद्रा एसटीपी, इतिहास सम्मत विज्ञान पुरुष, महाराजा भोज, मनोरंजक विषय जैसे लव मैरिज, भौगोलिक विषय - भारत की सात बहनें में जहां उत्तर- पूर्व के भारतीय राज्यों का परिचय दिया गया है, साथ ही साथ राजभाषा के विषय, एवं लेख भारतीय स्वतन्त्रता के 75 वर्ष का सफर बड़े ही रोचक अंदाज में प्रस्तुत किया गया है. इसमें राजभाषा के विषय भी नए अंदाज़ में प्रस्तुत किए गए हैं जो कि इस अंक को विशेष बनाते हैं.

पवन कुमार त्रिपाठी
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)
नालको, ओड़ीशा

RNI No. MAH HIN/2016/68433

नि:शुल्क वितरण हेतु

ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र

छायाचित्र : स्नेह रंजन

जीएनएस कुरुक्षेत्र शाखा, करनाल